"प्राथमिक शिक्षकों के जीवन निर्वाह व्यय का एक आर्थिक अध्ययन"

(विशेषतः बाँदा जनपद के सन्दर्भ में)

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी
की पी-एच०डी० उपाधि
हेतु प्रस्तुत

2005
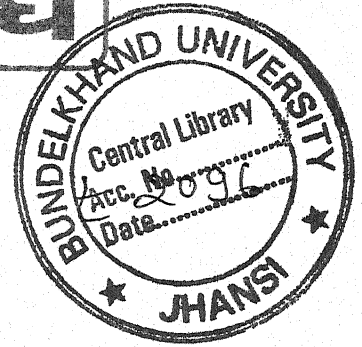
शोध-निदेशक
डॉ० विजय सिंह चौहान
रीडर-अर्थशास्त्र विभाग
पं० जवाहर लाल नेहरु परास्नातक महाविद्यालय,
बाँदा (उ०प्र०)

शोधार्थी
विधु कुमार त्रिपाठी

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

V.S. CHAUHAN
M.Sc., M.A., Ph.D.,
Reader,
Department of Economics,
Pt. J.N.P.G. College, Banda
UTTAR PRADESH

Residence :
Kalu Kuwan,
Baberu Road, Banda- 210001
Tel. 05192-225119
Mob. 9415143688

CERTIFICATE

IT GIVES ME PLESURE TO CERTIFY THAT Mr. VIDHU KUMAR TRIPATHI IS SUBMITTING Ph.D. THESIS ENTITLED- प्राथमिक शिक्षकों के जीवन निर्वाह व्यय का एक आर्थिक अध्ययन (विशेषतः बाँदा जनपद के सन्दर्भ में) FOR EVALUATION. HE HAS WORKED UNDER MY SUPERVISON. HE HAS BEEN HONEST AND SINCERE, AND HIS WORK IS ORIGINAL.

I WISH HIS SUCCESS IN LIFE.

Dated : 11. 9. 05

V.S. Chauhan
(Dr. V.S. Chauhan)

आभार

मानव जीवन को प्रथक्कृत बनाने में आचार्य की भूमिका वरेण्य एवं सर्वविदित है। वह न केवल अन्त समय आलोक पैदा करता है, बल्कि संस्कारयुक्त संरचना में उसका योगदान अगण्य होता है। आचार्य की कसौटी वेतन नही हो सकती है क्योंकि उसका कार्य मानव के उस अतिरिक्त संसार से है, जिसमें मूल्यों की रचना करनी पड़ती है। साथ ही व्यक्ति का समाज के अनुकूल व्यक्तित्व का भी गठन होता है। देश का अतीत ही नही, वर्तमान भी इस बात का साक्षी है कि बिना शिक्षित समाज के देश की उन्नति एवं जनकल्याण सम्भव नही है, और आचार्य शिक्षा प्रक्रिया का आवश्यक एवं प्रभावशाली अंग होता है।

" Plants are developed by cultivation & man by education."

प्राचीन भारत में गुरू देव रूप में प्रतिष्ठित थे। धार्मिक गुरू तो ब्रम्ह रूप में प्रतिष्ठित थे।

गुरूः ब्रह्मा, गुरू विष्णुः,गुरूर्देवो महेश्वराः।

गुरूः साक्षात परब्रहम, तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

आज भी चाहे, मनुष्य की विचारधारा में कितना भी परिवर्तन हो गया हो, लेकिन गुरू का अपना महत्व है। आज वह देव रूप में तो प्रतिष्ठित नही है, परन्तु शिक्षा प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग अवश्य है। आज उसे मित्र, पथ प्रदर्शक, मार्ग निर्देशक और विषय

विशेषज्ञ के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। मानव समाज का विकास शिक्षा पर ही निर्भर करता हैं।

" जिस बच्चे का पालन अशिक्षित माँ के द्वारा तथा अन्धेरी कोठरी में हुआ हो, वह बालक न तो अच्छा श्रमिक बन सकता है और न ही सम्मानित नागरिक"

शिक्षा मानव जीवन का महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि शिक्षा के बिना मनुष्य का सामाजिक विकास रूक जाता है और मानव अपने आपको उन्नति के पथ पर अग्रसरित नही कर पाता है।

प्रस्तुत शोध कार्य " प्राथमिक शिक्षकों के जीवन निर्वाह व्यय का एक आर्थिक अध्ययन (विशेषतः बाँदा जनपद के सन्दर्भ में) " विषय पर आधारित है। जहाँ तक शिक्षकों की आय का अर्थशास्त्री पहलू है, वह अत्यन्त संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षक एक ओर अपनी महत्वपूर्ण सेवाओं द्वारा राष्ट्रीय उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देता है और इस सेवा से फलीभूत आय उसके उपभोग का आधार है। इस प्रकार शिक्षक उत्पादक एवं उपभोक्ता दोनों के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

प्रस्तुत शोध विषय पर लेख प्रस्तुत करते हुये मै अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। क्योंकि मेरे द्वारा किया गया अथक प्रयास इस शोध अभिकल्प के माध्यम से पूर्ण हुआ है। इस शोध प्रबन्ध में शिक्षकों की आर्थिक दशाओं के कारण एवं उन्नयन के उपायों पर विषद चर्चा की गयी है।

इस शोध कार्य को बुन्देलखण्ड़ विश्वविद्यालय द्वारा सम्पादित करने हेतु अनुमति देने के लिये मै विश्व विद्यालय का आभारी हूँ। इसी क्रम में मैं प0 जवाहर लाल नेहरू

परास्नातक महाविद्यालय, बाँदा के प्रबन्ध तन्त्र का भी कृतज्ञ हूँ कि मुझे उक्त महाविद्यालय को अपना शोध केन्द्र चयन करने का अवसर प्रदान किया।

यह शोध प्रबन्ध उक्त महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के रीडर डा0 विजय सिंह चौहान के पर्यवेक्षक के रूप में, सतत् मार्ग दर्शन व उत्साहवर्धन के कारण ही पूर्ण हो सका है। इस शोध प्रबन्ध का प्रस्तुतीकरण व लेखन डा सिह के विद्वतापूर्ण, बहुमूल्य, सारगर्भित एवं उच्च कोटि के परामर्श के फलस्वरूप ही अत्यन्त परिष्कृत रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

मैं पं0 जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय के तत्कालीन प्राचार्य डा0एस0 क्यू0 हसन का हदय से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस कार्य को करने की अनुमति प्रदान की तथा समय– समय पर अपना अमूल्य सुझाव देकर मेरा पथ प्रदर्शन किया तथा मेरी समस्याओं का निदान किया।

मैं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी बाँदा का भी अनुगृहीत हूँ, जिन्होंने मुझे विषय सम्बन्धी नीतियों, प्रक्रियाओं व जटिलताओं से अवगत कराया तथा कार्य को गति प्रदान करने व सुदृढ़ आधार देने हेतु बहुमूल्य व व्यावहारिक सुझाव दिये।

मैं बांदा जनपद के प्राथमिक शिक्षकों का भी कृतज्ञ हूँ, जिन्होनें सर्वेक्षण के दौरान मुझे अपना सहयोग प्रदान किया।

मैं अपने उन सभी सहपाठियों एवं मित्रों का भी हदय से आभार व्यक्त करता हूँ और उन्हें धन्यवाद देता हूँ, जिन्होनें मुझे इस शोधकार्य करने में उत्साह वर्धन एवं सहयोग प्रदान किया।

अन्त में मैं अपने परमपूज्य पिता जी व स्वर्गीय माता जी के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ, जो मेरी उच्च शिक्षा का मूल आधार है उन्ही के आशीर्वाद एवं कृपा दृष्टि से ही मैं इस शोध कार्य करने योग्य बन सका।

दिनांक – 11/9/05

विधु कुमार त्रिपाठी
Vidhu Tripathi
विधु कुमार त्रिपाठी

अध्याय क्रम

अध्याय अनुक्रम	अध्याय शीर्षक	उपशीर्षक	पृष्ठ
प्रथम	प्रस्तावना	1. पूर्व पीठिका	10-22
		2. शिक्षा का महत्व	
		3. शैक्षिक परिदृश्य या शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन	
		4. शोध समस्या का प्रस्तुतीकरण	
		5. शोध प्रबन्ध की उपादेयता	
		6. शोध समस्या की परिसीमायें	
द्वितीय	शोध के उद्देश्य एवं प्रविधि		23-47
		1. अनुसंधान की व्यंजना	
		2. शैक्षिक अनुसंधान	
		3. आर्थिक अनुसंधान	
		4. प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य	
		5. अध्ययन की परिकल्पनायें	
		6. परिकल्पना का महत्व	
		7. प्रस्तुत अनुसंधान की रचना	
		8. व्यय के समीकरण	
		9. बचत की प्रकृति	
		10. अनुसूची द्वारा ऑकड़ों का सारणीयन	
		11. विश्लेषण हेतु प्रयुक्त विधियां	
		12. प्राप्त समंकों की प्रकृति एवं उपयुक्तता	
		13. अवधारणायें	

तृतीय आय व्यय एवं बचत (सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि) 48-85

1. आय की प्रकृति
2. आय के प्रकार
3. आय प्रभाव एवं उपभोग रेखा
4. व्यय की प्रकृति
5. व्यय के प्रकार
6. व्यय के प्रभाव
7. व्यय एवं आर्थिक विकास
8. व्यय के समीकरण
9. बचत की प्रकृति
10. बचत के प्रकार
11. बचत का उपयोग
12. विनियोग
13. बचत एवं विनियोग मे सन्तुलन
14. व्यय एवं बचत में सन्तुलन

चतुर्थ वेतनाधारित व्यय संरचना 86-113

1. व्यय के समीकरण
2. उपभोग फलन तथा बचत प्रकृति
3. व्यय संरचना के संगठक चर
4. समस्याओं का समाधान

पंचम शिक्षकों की बचत संरचना 114-130

1. बचत संरचना के अंगों की विवेचना
2. शिक्षकों की बचत की प्रतिनियमितता
3. बचत के कारण
4. बचत के स्त्रोत

5. बचत प्रति प्रतिउत्तर

6. औसत मासिक बचत

षष्ठम बचत एवं व्यय में अर्न्तसम्बन्ध 131-136

1. बचत एवं व्यय में अर्न्तसम्बन्ध

सप्तम् निष्कर्ष, समस्याएं एवं सुझाव 137-146

1. शिक्षकों की समस्याएं

अ– राजनैतिक समस्याएं

ब– सामाजिक समस्याएं

स– आर्थिक समस्याएं

द– संगठनात्मक समस्याएं

2. प्राथमिक शिक्षकों के आर्थिक उन्नयन हेतु सुझाव

परिशिष्ट 147-156

अ– शिक्षा सम्बन्धी बांदा जनपद के प्रमुख आंकड़े

1. बाँदा जिले की खण्डवार जनसंख्या

2. जनपद में विकास खण्डवार प्राथमिक विद्यालयों एवं शिक्षकों की सूची

ब– अनुसूची का प्रारूप

चित्र-तालिका

3.1	आय उपभोग वक्र
3.2	व्यय के प्रकार
3.3	कुल रोजगार
3.4	बचत क्या है?
3.5	बचत के प्रकार
3.6	बचत और विनियोग
4.1	उपभोग फलन तथा बचत प्रवृत्ति
4.2	सामान्य उपभोग की वस्तुयें
4.3	मासिक व्यय वर्ग
4.4	शिक्षकों की वेतनाधारित बच्चों की शिक्षा परक एवं पत्रिकाओं पर व्यय
4.5	शिक्षकों की वेतनाधारित चिकित्सापरक व्यय
4.6	प्राथमिक शिक्षकों का वेतनाधारित मनोरंजन व्यय
4.7	प्राथमिक शिक्षकों का वेतनाधारित निजी वाहन प्रयोग व्यय
5.1	प्राथमिक शिक्षकों की वेतनाधारित बचत के प्रति नियमितता
5.2	प्राथमिक शिक्षकों की वेतनाधारित बचत के कारण
5.3	बचत के मुख्य स्रोत
5.4	प्राथमिक शिक्षकों की वेतनाधारित इच्छित बचत के प्रति उत्तर
5.5	प्राथमिक शिक्षकों की वेतनाधारित इच्छित औसत मासिक बचत
6.1	व्यय एवं बचत में धनात्मक एवं ऋणात्मक सम्बन्ध

सारिणी-तालिका

4.2 शिक्षकों के सामान्य उपभोग की वस्तुयें

4.21 शिक्षकों का सामान्य उपभोग व्यय

4.3 शिक्षकों का परिपोषक व्यय

4.4 शिक्षकों का शिक्षा परक व्यय

4.5 शिक्षकों का चिकित्सा व्यय

4.6 शिक्षकों का मनोरंजन व्यय

4.7 शिक्षकों का निजी वाहन प्रयोग व्यय

5.1 बचत के प्रति शिक्षकों की नियमितता

5.2 प्राथमिक शिक्षकों की बचत के कारण

5.3 प्राथमिक शिक्षकों की बचत के मुख्य स्रोत

5.4 प्राथमिक शिक्षकों का बचत के प्रति प्रतिउत्तर

5.5 प्राथमिक शिक्षकों की औसत मासिक बचत

अध्याय - एक
परिचयात्मक

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. पूर्व पीठिका।
2. शिक्षा का महत्व।
3. शैक्षिक परिदृश्य या शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन।
4. शोध समस्या का प्रस्तुतीकरण।
5. शोध प्रबन्ध की उपादेयता।
6. शोध समस्या की परिसीमायें।

अध्याय - एक

परिचयात्मक

पूर्व पीठिका :-

शिक्षा सृष्टि का आदि और अनन्त है । शिक्षा शब्द का प्रयोग ही प्रायः ''ज्ञान'' पाठ्याचार्य के एक विषय के लिये तथा व्यवहार में परिवर्तन लाने वाली प्रक्रिया के रूप में होता है । वस्तुतः शिक्षा चेतना दर्शन सत्य और मानवीय अस्तित्व के लिये प्राथमिक एवं अनिवार्य है , जो उसके सर्वांगीण विकास के साथ शताब्दियों से जुड़ी चली आ रही है । यह एक अलग बात है कि सृष्टि के प्रारम्भ में शिक्षा का उतना महत्व नहीं था जितना कि आधुनिक काल में । समय एवं बदलती परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य कार्य प्रणाली एवं शैक्षिक वातावरण का चित्त आदि आवश्यकतानुसार बदलता रहा, लेकिन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को पूर्णता प्रकट करना है ।

प्राचीन समय में शिक्षा गुरूकुल प्रणाली के द्वारा परिबद्ध थी तथा प्राचीन भारत में मनुष्य को परमात्मा का अंश माना जाता था और गुरू आश्रम में अपने छात्रों को वेतन रहित शिक्षा प्रदान करते थे और जीवन रूपी गहरी नदी में तैरने योग्य बनाते थे । उस समय शिक्षा की परिभाषा थी :–

'' विद्या वह है जो मुक्ति दिलायें '

'' सा विद्या या विमुक्तये । ''

प्राचीन काल की शिक्षा में शिक्षक का स्थान महत्वूर्ण था । वह

कुछ विषयों का अगाध पण्डित होता था जिस प्रकार चाहता था अपना ज्ञान बालकों को देता था । उसका कर्तव्य धार्मिक उपदेश देना पाठ्य विषयों की मुख्य–मुख्य बातों को कंठस्थ कराना तथा जीवकोपार्जन की क्षमता प्रदान करना था । परन्तु अब व्यक्ति और समाज का रूप बदल जाने के कारण शिक्षा का रूप अधिक विकसित हो गया है । और शिक्षा का उत्तरदायित्व पहले की अपेक्षा अधिक बढ़ गया है अब शिक्षक का कार्य बालक को केवल किसी विषय की प्रचुर बातें कंठस्थ कराना ही नही अपितु उसका शारीरिक मानसिक चारित्रिक तथा भावात्मक विकास करना भी है उसे समाज या राष्ट्र का उत्तम एवं उपयोगी नागरिक बनाना है और ये ही शिक्षा के उद्देश्य है । इन उद्देश्यों की पूर्ति का उत्तरदायित्व अब शिक्षकों पर है अब कोई व्यक्ति किसी विषय का अगाध पंडित होने मात्र से ही सफल शिक्षक नहीं रूकता।

समय के साथ – साथ मानव ने हर क्षेत्र में विकास किया है ओर आज आधुनिक युग को यदि अर्थयुग कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी मानव जीवन के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं में मुद्रा का विशेष स्थान है । इस प्रतियोगिता के युग में मानव जीवन की अधिकांश क्रियाओं मुद्रा से प्रारम्भ होकर मुद्रा में अन्त हो जाती है । फलतः प्राचीन शिक्षा प्रणाली वेतन और व्यवसाय से जुड़ गई । वेतन और व्यवसाय ने जन्म दिया शुल्क को, परिणामतः गुरूकुल शिक्षा प्रणाली बिल्कुल अलग–थलग हो गई और शैक्षिक प्रणाली वेतन बद्ध हो गई । वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली प्राचीन समय की

भांति ज्ञान परख उपकम ही नही वरन उसके प्रादायक साधनों एवं शिक्षकों के वेतन और आय के स्त्रोत से भी सम्बन्धित है । निश्चित ही ऐसे सन्दर्भ में शिक्षक मात्र वेतन भोगी कर्मचारी बनकर रह गये है । और अर्थशास्त्र में उत्पादन का साधन भी । यह वह साधन है जो निश्चित रूप से राष्ट्रीय अर्थिक विकास एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के जर्जर ढांचे को अपनी सेवाओं द्वारा व्यवस्थित एवं प्रभावित करता है ।

अतः विशेष रूप से शिक्षकों के वेतन से व्युत्पन्न व्यय और बचत की प्रवृत्तियों का आर्थिक अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है ।

शिक्षक का आर्थिक महत्व :-

शिक्षक ही विद्यालय एवं शिक्षा पद्वति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है। शिष्य के जीवन काल में शिक्षक का अपना विशेष महत्व है। शिक्षक के द्वारा शिष्य के अन्दर गलत/सही का निर्णय लेने की क्षमता पैदा की जाती । शिक्षक का कार्य होता है कि अपने शिष्य के अन्दर अच्छी आदतों एवं गुणों का विकास करें।

I mean by education that training which is given by suitable to the instints of children education.

S.K. Sexena

शिक्षक ही वह शक्ति है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली सन्ततियों पर अपना प्रभाव डालता है। शिक्षक ही राष्ट्रीय एवं भौगोलिक सीमाओं को लाँघकर विश्व व्यवस्था की मानव जाति को उन्नति के पथ पर अग्रसरित करता है।

" मानव समाज स्वदेश की उन्नति उत्तम शिक्षकों पर ही निर्भर है।"

शिक्षक का महत्व बताते हुये अध्यापक के सन्दर्भ में ' माध्यमिक शिक्षा पुनर्रचना समिति' नागपुर ने विचार व्यक्त किये–

शिक्षा की पुर्नरचना का आधार जिस व्यक्ति को बनाया जा सकता है, वह व्यक्ति है –"अध्यापक"।

मनुस्मृति मे लिखा है :– " आचार्य (अध्यापक) छात्र को सम्पूर्ण सत्य एंव ज्ञान का

साक्षात्कार कराता है और उसका मार्ग प्रशस्त करता है।"

शिक्षा का महत्व :-

शिक्षा समाज की आधार शिला है। समाज मैं शिक्षा की जैसी स्थिति होगी, वैसी ही उसकी व्यवस्था होगी, और उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान प्रदान करती है, और उसकी कुशलता में वृद्धि करती है। इस प्रकार व्यक्ति के जीवन को प्रगति की ओर ले जाती है, किन्तु शिक्षा यही तक सीमित नही रहती। यह व्यक्तियों और संस्कृतियों में परिवर्तन लाती है और अच्छे मानव और अच्छे संसार के निर्माण की ओर ले जाने वाली होती है। अर्थात शिक्षा ही आदर्श नागरिको और देश के कर्णधारों का निर्माण करती है।

मुण्डको उपनिषद में कहा गया है कि "सत्य की बौद्विक अनुभूति तथा तार्किक रूप से द्वढ़ विश्वास बना लेना शिक्षा की प्रक्रिया का केवल पहला पद है।" शिक्षा का अन्त आत्मानुभूति से होता है, जो आन्तरिक शक्ति की प्राप्ति है न कि केवल पुस्तकीय ज्ञान। कोई भी शिक्षा की व्यवस्था उस सीमा तक ही सफल हो सकती है, जिस तक कि वह मानव के स्वयं के आदर्श को प्राप्त कर लेती है।

इस सम्बन्ध में महात्मा गॉधी जी के अनुसार – " शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर मन तथा आत्मा के उत्कृष्ट एवं सर्वांगीण विकास से है।"

शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। वर्तमान युग में औद्योगिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है।

" केवल पुस्तकीय ज्ञान से काम नही चलेगा। हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है,

जिससे कि व्यक्ति स्वयं के पैरों पर खड़ा हो सकता है।"

स्वामी

विवेकानन्द

शिक्षा का अर्थ है मानव का विकास । शिक्षा व्यक्ति की उन सब शक्तियों का विकास है जिनसे वह अपने वातावरण पर अधिकार प्राप्त कर सके और अपनी भावी आशाओं को पूरा कर सके। शिक्षा के महत्व को दर्शाते हुये डा0 राधाकृष्णन ने कहा – " शिक्षा मनुष्य और समाज का निर्माण करती है।"

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन :-

शायद ही कोई वस्तु जो हमारे समक्ष है स्थायी है। प्रत्येक वस्तु बदलती रहती है। प्रत्येक प्राणी वृद्धि करता है, तथा प्रत्येक में जीवन प्रवाहित रहता है। समाज जो मानवों के द्वारा निर्मित होता है, वह भी बदलता रहता है।

देश का अतीत ही नही, वर्तमान भी इस बात का साक्षी है कि बिना शिक्षित समाज के देश की उन्नति एवं जनकल्याण सम्भव नही है। वस्तुतः शिक्षा ही सामाजिक परिवर्तन का सबसे अधिक शक्तिशाली यन्त्र है। शिक्षा द्वारा ही समाज में वास्तविक परिवर्तन होता है और वह आधुनिक बनता है।

होल्मवर्ग तथा डोबिन्स ने – Vicos action research project का वर्णन किया है इस प्रोजेक्ट का निष्कर्ष यह था कि " शिक्षा विस्तृत सामाजिक परिवर्तन के जाल में फॅसती गयी है। जैसे – जैसे ज्ञान सामाजिक स्तर का और प्रभावशाली भागीदारी का साधन बन गया।" इस अध्ययन में यह भी पता चला कि एक विकसित होते हुये समाज

में सबसे अधिक आधुनिक नागरिक वह युवा थे , जिन्होने विद्यालयी शिक्षा पायी थी।

एक अन्य अध्यनन जो Derner द्वारा किया गया उसमे पता चला कि आध ुनिकीकरण की कुंजी सहभागी समाज में पायी जाती है, जो ऐसा समाज है, जिसमें व्यक्ति विद्यालय में जाते है, अखबार पढ़ते है, बाजार की आर्थिक व्यवस्था में भागीदार है, मतदान में राजनैतिक ढ़ंग से भाग लेते है तथा अपने मतों को व्यापार सम्बन्धी मामलों के बारे में बदल लेने को तत्पर रहते है।

Philip Foster के अध्ययन धनादेश में तथा सिल्स के भारत में इस निष्कर्ष पर ही आते है कि शिक्षा की सामाजिक परिवर्तनों में महत्वपूर्ण भूमिका है। उनका निष्कर्ष था कि यह पश्चिमी शिक्षा का ही प्रभाव था कि धनादेश में ऐसा संस्कृतिक वातावरण बन गया, जिससे नवीकरण हो सका।

अनेक अनुसंधानों में यह भी पाया गया कि राजनैतिक विकास बहुत कुछ शिक्षा पर निर्भर है। कोलमान, पेशकिन, फोस्टर, कूले, सुटन, लिप्से तथा अनेकों अन्य अनुसंधान कर्ताओं ने यह पाया कि राजनैतिक परिवर्तन में शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऐसे अध्ययनों के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि शिक्षा प्रशासकों के चयन में सहयोग देती है तथा परतन्त्र राष्ट्रों को केन्द्रीय शक्ति स्वतन्त्रता की लड़ाई के लिये प्रदान करती है।

भारतवर्ष विकासशील देशों में एक विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसकी प्रतिव्यक्ति आय संसार भर के देशों में लगभग सबसे कम है और यहाँ अशिक्षितों की

संख्या बहुत अधिक है। इसकी आबादी तेजी से बढ़ रही है, जबकि आर्थिक प्रगति की गति धीमी है फिर भी सम्पूर्ण राष्ट्र पिछड़ा हुआ नही हैं। एक बड़ी मात्रा में इसकी जनसंख्या आधुनिकीकरण के मार्ग पर चल पड़ी है। किन्तु जनता का एक बहुत बड़ा वर्ग रूढ़िवादी है। इस प्रकार इस देश में ऐसी स्थिति है कि आधुनिकता एवं रूढिवादिता एक प्ररूपि मिश्रण में है। ऐसी स्थिति में राजनैतिक नेताओं की भूमिका दुविधा जनक है। कही तो वह रूढिवादिता के प्रचारक बन जाते है, क्योंकि वह अशिक्षित जनता को फुसलाकर उनका वोट लेना चाहते है तो कही प्रगतिशील यह कहकर कि वह समाज का उत्थान चाहते है। बहुत से राजनैतिक व्यक्ति वोटों के लिये जातिवाद का नारा लगाते है और समाज को रूढिवादिता के अन्धें कुँये में और नीचे ढ़केल देते है। ऐसे नेता आधुनिकीकरण के लिये बहुत बड़ी रूकावट है । इन नेताओं के चंगुल से जनता को बचाने का कार्य और राष्ट्र को आधुनिक बनाने के लिये शिक्षा ही एक मात्र साधन हैं।

कुछ अध्ययन जो वर्तमान समय में भारत में हुये है , उन्होने शिक्षा के आध ुनिकीकरण पर सकारात्मक प्रभाव दर्शाया है। जी0एस0 भटनागर ने सन् 1972 में अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षित व्यक्तियों में अशिक्षित व्यक्तियों की तुलना में अधिक आध ुनिक अभिवृत्तियॉ थी।

वाई0के0 मलिक एवं एफ0 मारकथे के सन् 1974 के अध्ययन का निष्कर्ष था कि शिक्षा अभिवृत्ति परिवर्तन का साधन है।

कहा जा सकता है कि कोई भी राष्ट्र शिक्षा को प्राथमिकता दिये बिना चतुर्मुखी विकास नही कर सकता। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पचास वर्ष व्यतीत हो चुके है परन्त अभी

भी हम अंग्रेजी उपनिवेशवाद की विरासत से अपने आपको मुक्त नही कर पा रहे है। सामंती अतीत की काली परछाई हमारे देश के जनजीवन का पीछा नही छोड़ रही है। फलतः शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे प्रयास आंकडों के मोहजाल में उलझकर रह जा रहे है।

अतः इस क्षेत्र में व्यापक एवं सच्चे अर्थो में सुधार एक शिक्षक की स्थिति में सुध ार के साथ उसका पूर्ण सहयोग प्राप्त करके ही किया जा सकता है।

शोध समस्या का प्रस्तुतीकरण :-

इस शोध प्रबन्ध में समस्यात्मक एवं निदानात्मक दोनों का ही अध्ययन सुचारू रूप से किया गया है। विशेषतः शिक्षकों को प्रतिभागी बनाकर वर्तमान परिदृश्य में जहॉ सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन तेजी से हो रहे है, यह जानने का प्रयास किया गया है कि आय–व्यय समायोजन किस प्रकार और कैसे किया जा रहा है।

शैक्षिक क्षेत्र उत्पादन एंव आय सृजन का क्षेत्र है। इस क्षेत्र में व्यय और बचत का एक निश्चित आर्थिक महत्व है। अतः बांदा के शैक्षिक क्षेत्रों को दृष्टिकोण में रखते हुये प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ''बांदा के प्राथमिक शिक्षकों के जीवन निर्वाह व्यय का एक आर्थिक अध्ययन '' प्रस्तुत करना इस शोध समस्या का विशेष प्रयोजन है।

शोध प्रबन्ध की उपादेयता :-

अपने सामाजिक आर्थिक पिछड़ेपन एवं आर्थिक विषमता के सन्दर्भ में बांदा जनपद शोध के बहुमुखी आयाम प्रस्तुत करता है। इसलिये इस जनपद के लिये कोई सामाजिक आर्थिक अनुसंधान निश्चित रूप से एक सत्य को उद्घाटित करने का प्रयास

किया गया है। इस जनपद में आय–व्यय एवं बचत आदि पर अनौपचारिक एवं औपचारिक रूप से अनुसंधान होते आ रहे है।

लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में अभी तक प्राथमिक शिक्षकों को उत्पादन के साधन के रूप में अनुसंधान का विषय नही बनाया गया है। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के अनुसार –''प्राथमिक शिक्षा शिक्षा का केन्द्र है और केवल अच्छे शिक्षक ही प्राथमिक शिक्षा को सफल बना सकते हैं।'' वस्तुतः बांदा जनपद के प्राथमिक शिक्षकों का जीवन निर्वाह व्यय एक प्रमुख आर्थिक समस्या है।

इसका अध्ययन इसलिये आवश्यक है क्योंकि इसका शैक्षणिक एवं निदानात्मक रूप का सक्रिय अध्ययन नही किया गया है। अतः शैक्षिक अर्थशास्त्र के दृष्टिकोण से यह एक मौलिक प्रयास है।

इस शोध के अध्ययनोपरान्त यह सुस्पष्ट हो जाता है कि इस समस्या से सम्बन्धित विभिन्न आयामों के प्रति सुदृढ़ नीति क्या होनी चाहियें।

प्रस्तुत आर्थिक विश्लेषण से जनपद बांदा के प्राथमिक शिक्षकों की आर्थिक स्थिति, जीवन स्तर, बचत प्रवृत्ति, उपभोग प्रवृत्ति की सामान्य जानकारी प्राप्त की जा सकती है इस सम्बन्ध में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की समस्या की वर्तमान में ही नही भविष्यगत उपादेयता भी है।

शोध समस्या की परिसीमायें:-

प्रस्तुत शोध की परिसीमायें कमशः इस प्रकार है।

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन जनपद बांदा में श्रमरत प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों

की व्यय एवं बचत प्रवृत्तियों का केवल आय आधारित अध्ययन ही करेगा। अध्ययन मे सम्मिलित शिक्षकों की आय के अन्य स्त्रोंतों से उदघृत व्यय एंव बचत की स्थिति का अध्ययन नही किया जायेगा।

2. शोध प्रबन्ध अध्यापकों की आय मासिक बजट में सम्मिलित होन वाले व्यय की सामान्य मदों का ही अध्ययन करेगा और आकस्मिक व्ययों पर कम बल दिया जायेगा।

3. प्रस्तुत शोध प्रबन्ध सम्बन्धित व्यय मदों का सामान्य विश्लेषण करेगा।

प्रस्तुत उपर्युक्त परिसीमाओं के नित्रण से यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध आर्थिक विष्लेशण का एक अंगीभूत प्रत्यय है। और शोध मूलतः वर्णनात्मक प्रकृति का है। वर्णनात्मक अनुसंधान प्रकृतिं से तात्पर्य उस रूप से है, जिससे किसी विषय या समस्याओं के सम्बन्ध में वास्तविक तथ्यों के आधार पर वर्णनात्मक विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

अध्याय - दो

शोध के उद्देश्य एवं प्रविधि

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. अनुसंधान की व्यंजना।
2. शैक्षिक अनुसंधान।
3. आर्थिक अनुसंधान।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य।
5. अध्ययन की परिकल्पनायें।
6. परिकल्पना का महत्व।
7. प्रस्तुत अनुसंधान की रचना।
8. संमक संकलन विधि एवं स्त्रोत।
9. अनुसूची द्वारा आँकड़ों का वर्गीकरण।
10. अनुसूची द्वारा आंकड़ों का सारणीयन।
11. विश्लेषण हेतु प्रयुक्त विधियाँ।
12. प्राप्त समंकों की प्रकृति एवं उपयुक्तता।
13. अवधारणायें।

अध्याय - दो
शोध के उद्देश्य एवं प्रविधि

इस रहस्यमय जगत में चारो ओर न जाने कितने रहस्य छिपे है। यह छिपापन ही मानव की जिज्ञासा को जागृत करता है। मानव की सदैव से ही यह विशेषता रही है कि वह अपने चारो ओर पाये जाने वाले वातावरण को अधिक से अधिक समझने का प्रयास करता है ताकि वह उसे इस प्रकार परिवर्तित कर सके कि उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति सम्भव हो सके और उसे सुख एवं शान्ति का अनुभव हो सके। अपनी जिज्ञासु पकृति के कारण मनुष्य अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में किसी न किसी प्रकार के नवीन तथ्य को जानने का प्रयास करता है।

अनुसंधान के उद्देश्य के सन्दर्भ में अनुसंधान को कम से कम एक सामान्य परिभाषा वह होगी जो सुसंगठित तथा क्रमवद्व रूप में सूचनाओं के एकत्रीकर की क्रिया की ओर संकेत करेगी। शब्द के वास्तविक अर्थ में 'अनुसंधान' मानवीय व्यवहार का एक प्रकार हैं, एक ऐसी क्रिया है, जिसमें मानव समूह संलग्न रहता है।

जे0 लहरी के अनुसार, " अनुसंधान प्रयासों के परिश्रम को कम करता है, अपव्यय को रोकता है, दक्षता में वृद्धि करता है तथा अनुसंधानकर्ता के कार्य को सजीवता, एवं उसको प्रतिष्ठा प्रदान करता है।

मानव समाज केवल तर्क के आधार पर ही वास्तविक जगत में व्याप्त आर्थिक, समाजिक एवं ऐतिहासिक रहस्यों का रहस्योद्घाटन करने में असमर्थ है। ये वास्तविक रहस्य स्वाभाविक मानवीय क्षमताओं से भी अधिक सूक्ष्म एवं उलझे हुये है। इन रहस्यों

को सुलझाने एवं शुद्वता की सर्वोच्च श्रेणी प्राप्त करने हेतु क्रमबद्व ज्ञान एवं तदर्थ आवश्यक प्रविष्टियॉ एवं उपकरणों के विकास के साथ ही साथ मानव मस्तिष्क अनवरत परिश्रम करते है। मानव अब भी समस्त वस्तुओं एवं घटनाओं के विषय में सब कुछ नही जानता है। इसलिये जानने या खोजने का सिलसिला या मनुष्य की प्रयत्नशीलता की अभिकल्पना ज्ञान का विस्तार, अस्पष्ट ज्ञान का स्पष्टीकरण तथा विद्यमान ज्ञान का सत्यापन होता है। इसी को अनुसंधान कहते है।

अनुसंधान की व्यजंना :-

लुण्डवर्ग के शब्दों में ' अनुसंधान वह है, जो अवलोकित तथ्यों के वर्गीकरण सामान्यीकरण और सत्यापन करने हेतु पर्याप्त रूप में वस्तु विषयक और व्यवस्थित हो।'

According to the New Century Dictionary के अनुसार '' तथ्यों या सिद्वान्तों की खोज के लिये किसी वस्तु या व्यक्ति के विषयों में विशेष रूप से सावधानी के साथ खोज करना ही अनुसंधान है।'

इस बात पर बल देना चाहिये कि स्पष्ट दृढ़ सैद्वान्तिक आधार के बिना गवेषण के फल ठोस नही होते। विधिवत ज्ञान का आधार विस्तृत नींव पर होना चाहिये नहीं तो शिक्षा की अन्तदृष्टि विशिष्ट संकीर्ण प्रतिवेश तक सीमित रह जाती है। एक ठोस '' सिद्वान्त गवेषणा की उपादेयता को बढ़ा देता है, क्योंकि इससे अन्वेषण के लिये महत्वपूर्ण संकेत मिलते है। वाहय रूप से भिन्न निष्कर्ष के अन्तर्गत समान प्रक्रियाओं के सम्बन्ध जानने में और इन सम्बन्धों को समझने में सहायता मिलती है। गवेषणा जितनी ही अधिक क्रमबद्व सिद्वान्त से निर्देशित होगी, उतनी ही अधिक सम्भावना है कि उसके

निष्कर्ष ज्ञान वर्धक व संगठन में अधिक योगदान दें।

" सिद्वान्त और गवेषणा का सम्बन्ध पारस्परिक योगदान का है। सिद्वान्त उन क्षेत्रों की ओर ध्यान दिलाते है, जिनमें गवेषणा उपयोगी होगी, बहुत से विशिष्ट अध्ययनों के निष्कर्षों का साराँश बना देते है और भविष्यकथन तथा व्याख्या को आधार प्रदान करते है। दूसरी ओर गवेषणा के निष्कर्ष प्रस्तावित सिद्वान्तों का मूल्यांकन कर सकते है, सैद्वान्तिक संकल्पनाओं को स्पष्ट कर सकते है तथा नये सिद्वान्तों के बनाने अथवा पुराने सिद्वान्तों को बढ़ाने के सुझाव दे सकते है। इसके अतिरिक्त पारस्परिक योगदान की यह प्रक्रिया अविराम होती है। सैद्वान्तिक विचारों द्वारा प्रेरित गवेषणायें नये प्रश्न देती है, जिससे और अनुसंधान होता है और यह क्रम चलता रहता है। बिना सैद्वान्तिक व्याख्या के अनुसंधान करना अथवा बिना अनुसंधान के सिद्वान्त बनाना, मत विचार के साधन के रूप में सिद्वान्तों के मुख्य उद्देश्य की उपेक्षा करना है।

शैक्षिक अनुसंधान :-

शिक्षा की समस्याओं तथा बालको के व्यवहार के विकास सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करने वाली प्रक्रिया को शैक्षिक अनुसंधान कहते है।

शैक्षिक अनुसंधान एक स्वतन्त्र अनुसंधान है यह नवीन ज्ञान की वृद्वि के साथ व्यावहारिक उपयोगिता भी रखता है। यह एक उद्देश्यपूर्ण सुव्यवस्थित बौद्विक प्रक्रिया है जो शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार के विज्ञान की ओर निर्देशित होती है। इसके द्वारा किसी भी सैद्वान्तिक अथवा व्यावहारिक समस्या के समाधान का प्रयास किया जाता है। सामाजिक परिस्थियॉ बदलती रहती है और परिस्थितियों के बदलने से नित्य प्रतिदिन

नई नई समस्यायें उपस्थित होती रहती है, इन समस्याओं के समाधाना के लिये अनुसंधान कार्य आवश्यक है । अनुसंधान कार्य की सफलता और प्रभाविकता को ज्ञात करने के लिये कुछ कार्य करना पड़ता है। इन समस्त कार्यो को विधि कहते है। शैक्षिक अनुसंधान में वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करते है।

एम0एम0 ट्रेवर्स के शब्दों में – " शैक्षिक अनुसंधान वह प्रक्रिया है, जो शैक्षिक परिस्थितयों में एक व्यवहार सम्बन्धी विज्ञान के विकास की ओर अग्रसर होती है।

मोनरो के अनुसार – " शैक्षिक अनुसंधान का अन्तिम लक्ष्य सिद्वान्तों का प्रतिपादन करना और शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रक्रियाओं का विकास करना है।"

आर्थिक अनुसंधान :-

सामान्य अनुसंधान से व्युत्पन्न एवं अंगीकृत आर्थिक अनुसंधान का प्रत्यय भी निम्न प्रकार परिभाषित किया जा सकता है। जब एक अनुसंधानकर्ता अर्थशास्त्री आर्थिक घटना एवं घटनाओं का सामान्य निरीक्षण करके तथ्यों को संगृहीत एवं वर्गीकृत करता है और उनसे सार्थक परिकल्पनाओं का निर्माण करता है।

इस समस्या के सन्दर्भ में विशेषतः आर्थिक अनुसंधान कहा जा सकता है। पूर्व की भाँति आर्थिक अनुसंधान वैज्ञानिक अनुसंधान कहा जा सकता है। क्योंकि इसमें विज्ञान तर्क का प्रयोग किया जाताहै।

वैज्ञानिक विधियों में अग्रलिखित विशेषतायें पायी जाती हैं –

1. प्रभाणिकता

2. वस्तुनिष्ठता

3. निश्यतात्मक पूर्वकथन योग्यता

4. समय का सदुपयोग

5. आर्थिक मितव्ययिता

लुण्डवर्ग के शब्दों में – " वैज्ञानिक विधि के अन्तर्गत आंकडों का क्रमबद्व प्रक्षेपण वर्गीकरण तथा विवेचन निहित रहता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्‌देश्य :-

अर्थशास्त्र में आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है। इस अध्ययन एवं विश्लेषण के अन्तर्गत आयी समस्याओं के हल खोजे जाते है। आर्थिक दृष्टिकोण से बांदा जनपद अत्याधिक पिछड़े जनपद एवं इलाकों में से एक है।इस जनपद की परम्परागत एवं अपराम्परागत सामाजिक आर्थिक समस्यायें है।

उन समस्याओं में से एक आर्थिक समस्या – (प्राथमिक शिक्षकों के जीवन निर्वाह व्यय का एक आर्थिक अध्ययन) इन शिक्षकों का वेतन आधारित व्यय एवं बचत प्रवृत्ति महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस शोध अध्ययन के निम्नाकित उद्‌देश्य हैं–

1. बांदा की आर्थिक विषमताओं के सापेक्ष प्राथमिक शिक्षकों के व्यय एवं बचत प्रवृत्तियों का स्थान निश्चित करना।
2. प्राथमिक शिक्षकों के व्यय एवं बचत प्रवृन्तियों के तकनीकी एवं आर्थिक पक्षों का विश्लेषण करना।
3. बांदा जनपद के प्राथमिक शिक्षकों का व्यय एवं बचत संरचना का अध्ययन करना।

4. वेतन आधारित बचत एवं व्यय संरचनाओं में अन्तर्सम्बन्ध का आर्थिक विश्लेषण करना।

5. व्यय एवं बचत के मुख्य मदों एवं स्त्रोतों का अध्ययन करना।

6. बांदा जनपद के प्राथमिक शिक्षकों के व्यय एवं बचत प्रवृत्तियों के भविष्यगत विकास की सम्भावनाओं पर विचार करना।

भारतीय शिक्षा की समस्याओं तथा प्रवृन्तियों का अध्ययन अत्यन्त दुष्कर कार्य है। हमारी शिक्षा का इतिहास इतना पुराना है और उसमें इतनी दिशायें एवं धारायें जुड़ी है कि उसके छोर का पता लगाना सरल नही है। वास्तव में शिक्षा की समस्यायें उस उलझे हुये सूत के गोले के समान है जिसे जितना सुलझाये उतना ही उलझता जाता है। एक शिरा ढूढते है तो दूसरा खो जाता है, और इस उलझे हुये गोले में यदि अनेक रंगों के धागे इधर–उधर से आकर शामिल हो जाये तथा पूरी तरह से मिल जाये तो विश्लेषण के प्रयत्न में धैर्य खो बैठना स्वाभाविक है।

शिक्षा में आर्थिक समस्यायें शिक्षा के बदलते हुये स्वरूप के एक लम्बे इतिहास से जुड़ी हुयी है। जिनका आरम्भ बिन्दु उन प्रयत्नों में देखा जा सकता है जिसके द्वारा मनुष्य ने अपने आस–पास के भौतिक वातावरण में अपने सामाजिक परिवेश में और अपनी इच्छाओं के विकासमान क्रम समायोजन का प्रयत्न किया । इस प्रयास को गति देने में भौतिक स्रोतों की परिसीमा जनसंख्या का विस्तार तथा नयी परिस्थितियें में नवीन मांगों की उत्पत्ति आदि बहुत से तत्वों का हाथ था। लेकिन विश्वभर में प्रारम्भिक काल की शिक्षा का प्रमुख उद्‌देश्य शिक्षार्थी को पारिवारिक उत्तरदायित्व की भूमिका का

निर्वाहन करने के योग्य बनाना था। इस प्रक्रिया मे परिवार को बालक की शिक्षा के लिये कोई अतिरिक्त आर्थिक भार नही उठाना पडता था। परिवार के व्यवसाय में अवस्थानुसार भाग लेकर वह अपनी शिक्षा के साथ साथ परिवार के आर्थिक विकास में भी हाथ बटाँता था। अतः इसकाल में शिक्षा में कोई आर्थिक समस्या विद्यमान नही थी।

सामाजिक सम्बन्धों के विकास और विस्तार के साथ साथ समाज की आर्थिक व्यवस्था में उत्पादन के आगे विनिमय और वितरण के आयाम विकसित हुये। व्यवसायों में विशिष्टता आने लगी तथा शिक्षार्थी को व्यवसायिक दक्षता के साथ साथ सामाजिक व्यवहार का ज्ञान और योग्यता प्रदान करने की आवश्यकता भी, अनुभव की जाने लगी। आर्थिक विकास के इस द्वितीय चरण मे सामाजिक सम्बन्धों की महत्ता के कारण विद्यालय का पाठ्यक्रम ऐसी विषयवस्तु से सम्बन्धित हो गया जिसमें व्यक्ति के व्यवहार कौशल का विकास हो सके। जो आगे चल कर उसे समुन्नत व्यक्ति के रूप में सामाजिक भूमिका अदा करने में योगदान दे सके।

वर्तमान समय मे औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं में प्राथमिक शिक्षकों के जीवन निर्वाहव्यय के अध्ययन की महत्ता और भी बढ़ जाती है क्योंकि देश में सामाजिक, आर्थिक, सोस्कृतिक, नैतिक एवं वैज्ञानिक उन्नयन में प्राथमिक शिक्षकों की भूमिका अपरिहार्य है।

शोध प्रबन्ध के उद्देश्य स्पष्ट करने के पश्चात अध्ययन से सम्बन्धित परिकल्पनाओं का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

अध्ययन की परिकल्पनायें :-

अनुसंधान प्रक्रिया का महत्वपूर्ण स्तम्भ परिकल्पना है परिकल्पना के निर्माण के बिना न तो कोई प्रयोग हो सकता है और न कोई वैज्ञानिक ढ़ंग का अनुसंधान ही सम्भव है। परिकल्पना के अभाव में अनुसंधान कार्य एक उद्देश्यहीन क्रिया है परन्तु भौतिक विज्ञान मे परिकल्पनाओं का निर्माण विशेष महत्व नही रखता किन्तु फिर भी व्यावहारिक दृष्टि से इनका स्थान अवश्य है।

परिकल्पना एक अस्थाई रूप से सत्य माना हुआ कथन है। इस नये सत्य को खोजने के लिये आधार बनाया जाता है इसी समस्या का विश्लेषण और परिभाषीकरण के बाद उसमें कारणों तथा कार्यकरण के सम्बन्ध में पूर्ण चिन्तन कर लिया जाता है। अर्थात इस समस्या का यह कारण हो सकता है इस निश्चय के बाद इसका परीक्षण शुरू होता है। अनुसंधान कार्य इस परिकल्पना के निर्माण और उसके बीच की प्रक्रिया है। परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर करता है।

परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ पूर्व चिन्तन है इसका तात्पर्य यह है कि किसी समस्या का विश्लेषण और परिभाषी करण के बाद उसके कारणों तथा कार्य करण के सम्बन्ध में पूर्व चिन्तन कर लिया गया हैं

करलिंगर के शब्दों में – " एक कल्पना दो या दो से अधिक चरों के सम्बन्ध के विषय में एक कल्पनात्मक कथन होता है।"

गुडतथाहैट के अनुसार – " परिकल्पना के निर्माण के दौरान इस बात के निर्धारण के सहयता मिलती है कि किस प्रकार तथ्यों का संकलन किया जायें। "

इस प्रकार परिकल्पना का निर्माण अनुसंधान कर्ता को दिशा प्रदान करता है परिकल्पना एक कल्पना है मान्यताओं का एक समूह है वह कथन है जिसे अभी पूर्ण होना है । परिकल्पना तथ्यों का वह कच्चा घड़ा है जिसका पकना अभी शेष हैं। अन्तिम विश्लेषण तथ्यों के सापेक्ष व्यवहारिक सत्यता के आधार पर व्युत्पन्न परिकल्पनायें या तो स्वीकृत होती है या तिरस्कृत होती है। मुख्य रूप से वैजानिक अध्ययन रूप में दो प्रकार की परिकल्पनायें प्रयुक्त होती है।

यथा

1. तात्विक संकल्पना
2. शून्य संकल्पना

1. तात्विक संकल्पना :- इस परिकल्पना के अन्तर्गत दो या दो के अधिक चरों के बीच अनुमान पर आधारित सम्बन्धों को व्यक्त किया जाता है। एक तात्विक परिकल्पना परीक्षण योग्य नही होती है। पहले इसे प्रयोगात्मक शब्दों मे अनुदित करना पड़ता है।

2. शून्य परिकल्पना :- शून्य परिकल्पनाओं की दो महत्वपूर्ण विशेषताऐं होती हैं।

1. इसके अन्तर्गत परीक्षण करने मे सफलता मिलती है।
2. इसके अन्तर्गत द्विपक्षीय परख का प्रयोग किया जाता है। शोध में अधिकांश शोधकर्ता इसी संकल्पना का प्रयोग करते हैं।

उक्त दर्शन से स्पष्ट है कि किसी सफल अनुसंधान के लिये संकल्पनायें एक

अनिवार्य शर्त है प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित निम्नांकित संकल्पनायें है जिन्हें गलत या सही सिद्व करते हुये पूर्ण करना है।

1. प्राथमिक शिक्षक अपने दैनिक जीवन में उच्च मूल्य वाली उपभोग की वस्तुओं का उपभोग ज्यादा करते है।
2. प्राथमिक शिक्षक उच्च विलासिता पूर्ण उपभोग की वस्तुओं का उपभोग ज्यादा नही करते है।
3. प्रायः शिक्षक मनोरंजन एवं शिक्षा पर अधिक व्यय करते है।
4. प्राथमिक शिक्षकों का अपने बच्चों की शिक्षा एवं पत्र पत्रिकाओं पर अधिक व्यय होता है।
5. प्राथमिक शिक्षक यातायात मे अधिक व्यय करते है।
6. प्राथमिक शिक्षक नियमित रूप से बचत करते है। तथा इच्छित बचत कर पाने में वे असमर्थ रहते है।
7. प्राथमिक शिक्षकों की बचत प्रवृन्ति उच्च होती हैं।

परिकल्पना का महत्व :-

परिकल्पना के निम्नलिखित महत्व है–

1. अनुसंधान का निर्देशन
2. अनुसंधान की प्रेरक
3. परिकल्पना पद्वति के विकास मे सहायक

4. समस्या के क्षेत्र को सुनिश्चित कर क्रमबद्व और सीमांकन करना।

5. परिकल्पना द्वारा तथ्यों के चुनाव में सरलता

6. परिकल्पना वैज्ञानिक निष्कर्षो की जानकारी देती है।

7. परिकल्पना सिद्वान्त की रचना में सहायता देती है।

8. पुनरावृत्ति से बचाना।

प्रस्तुत अनुसंधान की रचना :-

कोई भी शोध प्रबन्ध चाहे वह व्यष्टि हो अथवा समष्टि, आर्थिक अनुसंधान के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु हमें शोध कार्य आरम्भ करने से पूर्व एक योजना और निश्चित रूप रेखा तैयार करनी होती है। ताकि उसे उचित एवं सही निर्देशन प्राप्त हो सके।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये शोधार्थी ने वर्णनात्मक अनुसंधान संरचना में तथ्यों का संकलन वैज्ञानिक प्रविधि द्वारा किया है। वर्णनात्मक अनुसंधान संरचना के अन्तर्गत शोध के निम्न चरण है।

प्रथम चरण – शोध के उद्देश्य

द्वितीय चरण – तथ्य संकलन की प्रविधियों का चुनाव

तृतीय चरण – निदर्शन के प्रकार का चुनाव

चतुर्थ चरण – समंको का संकलन एवं उनकी जांच

पंचम चरण – समंको का वर्गीकरण सारणीकरण एवं गुणनवाद

अन्तिम चरण – रिपोर्ट का प्रस्तुती करण

समंक संकलन की विधि एंव स्त्रोत :-

" जिस प्रकार एक भवन का निर्माण पत्थरों द्वारा होता है ठीक उसी प्रकार सिद्वान्तों का निर्माण समंको द्वारा ही होता है परन्तु केवल समंक उसी प्रकार से सिद्वान्त नही कहे जा सकते जिस प्रकार पत्थरों का ढेर भवन नही कहा जा सकता है।" 1

यंग पी0वी0, साइन्टिफिक सर्वेज एण्ड रिसर्च प्रेन्टिस हॉल ऑफ इन्डिया प्राइवेट लिमिटेड न्यू दिल्ली – 1973 प्रष्ठ 136

अनुसंधान पद्वति में समको के संकलन का अत्यधिक महत्व है संमकों को सांख्यिकीय अनुसंधान के सम्पूर्ण ढांचे का आधार स्तम्भ मान गया क्योंकि अनुसंधान प्रक्रिया पूरी तरह से संमको के संकलन पर ही निर्भर होती है इन्ही संमको के माध्यम से शोधकर्ता वांछित उद्देश्यों व निष्कर्षो को प्राप्त करने में सफल होता हैं। इसलिये यह कहना आवश्यक नही है कि संमकों के संकलन का कार्य करते समय अत्यन्त सावधानी सतर्कता दृढ़ता और विश्वास एवं धैर्य से कार्य लिया जाना चाहिये तथा संमको के रूप में एकत्रित कच्ची सामग्री कही भी अशुद्व एवं अविश्वसनीय न होने पाये।

साक्षात्कार अनुसूची से प्रस्तुत शोध में वास्तविक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। समंक संकलन की विधि एवं स्त्रोत साक्षात्कार अनुसूची है साक्षात्कार अनुसूची का तात्पर्य –गुड एवं व्हाईट के अनुसार – " अनुसूची उन प्रश्नों के समूह का नाम है जो शोधार्थी द्वारा किसी दूसरे व्यक्ति से अपने सामने की स्थिति में पूछे एवं भरे जाते है।"

ऐसे प्रश्नों को शोधार्थी द्वारा अनुसूची में समायोजित किया गया है जो शोधकार्य

के उद्देश्य के अनुसार है। उद्देश्य यह है कि प्राथमिक शिक्षकों को किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव न हो तथा उसमें पूछे गये व्यवहारिक प्रश्नों का उत्तर देने में समर्थ हो क्योंकि यहाँ शोध प्रबन्ध सर्वेक्षण पर आधारित है। अतः तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार सनुसूची का प्रयोग किया जाना है।

अनुसूची द्वारा ऑकडों का वर्गीकरण एवं सारणीयन :-

जब शोधकर्ता अध्ययन से सम्बन्धित ऑकडें एकत्रित कर लेता है तब प्रारम्भ में वे इस रूप में नही होते है। कि उससे कोई निष्कर्ष निकाला जा सके। प्रारम्भ में संकलित समंक बड़ी मात्रा मं अप्यवस्थित एवं जटिल होते है जिन्हें मनुष्यों के लिये समझना कठिन होता है एंव उसी कारण बिना उनके वर्गीकरण एवं सारणीयन के उनका विश्लेषण एवं निर्वचन सम्भव नही होता है। अतः उन आँकडों को कुछ ऐसे व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है। कि वे सरल व समझने योग्य हो जाये तथा उनकी विशेषतायें सरलता से स्पष्ट हो जाये। " संकलित सामग्री को संक्षिप्त सरल व समझने योग्य बनाने के लिये उनके वर्गीकरण व सारणीयन की आवश्यकता होती है।"

वर्गीकरण एवं सारणीयन का महत्व जे0आर0 हिक्स ने प्रकट करते हुयेकहा है कि " वर्गीकृत एवं क्रमबद्ध तथ्य स्वयं बोलते है अव्यवस्थित रूप में वे मॉस के समान मृत होते है।

वर्गीकरण का अर्थ -

वर्गीकरण में ऑकडों को किसी गुण के आधार पर समान व असमान कर अलग-2 वर्गो में बॉट दिया जाता है।

कॉनर के शब्दों में " वर्गीकरण ऑकडों को समानता तथा सदृश्यता के आधार पर वर्गो या विभागों में क्रमानुसार रखने की क्रिया है और यह व्यक्तिगत पदों की विभिन्न श्रेणियों के बीच उनके गुणों की एकता को व्यक्त करता है।"

अनुसूची द्वारा ऑकडों का सारणीयन :-

वर्गीकरण करने के बाद सॉख्यकीय सामग्री को सारणियों में प्रदर्शित किया जाता है। सारणीयन के द्वारा एकत्रित सामग्री को सरल, संक्षिप्त व सुबोध बनाया जाता हे जिससे उसे समझने में सरलता हो और याद करने में सुविधा हो इससे परिणाम निकालने और निर्वचन करने में सुविधा होती है। सारणीयन की अनिवार्यता क्रॉक्सटन एवं क्राउडेन के इन शब्दों से स्पष्ट होती है – " या तो स्वयं अपने प्रयोग के लिये या अन्य व्यक्तियों के प्रयोग के लिये समंक किसी उपयुक्त रूप में अवश्य ही प्रस्तुत किये जाने चाहियें।" वास्तव में साख्यिकीय तत्वों से कही अधिक महत्व उन्हें प्रस्तुत करने के स्वरूप का होता है। साख्यिकीय तथ्यों के समंको का प्रदर्शन या तो सारणी द्वारा होता है या चित्रों द्वारा अथवा बिन्दु रेखाओं द्वारा । अधिकतर सारणियों का ही प्रयोग होता है सारणी के व्यापक अर्थ को समझाते हुये न्यूजेन्सर ने लिखा है कि " साख्यिकीय सारणी ऑकडों का कालम तथा पंक्तियों के रूप में व्यवस्थित संगठन है।

सारणीयन का अर्थ :-

सॉख्यिकीय ऑकडों को सारणी के रूप में प्रस्तुत करने की क्रियाओं को सारणीयन कहते है। सारणीयन ऑकडों को सारणी के स्प में प्रस्तुत करने की वह विधि है जिससे उनकी मुख्य विशेषता स्पष्ट हो सके।

एल0 आर0 कॉनर के अनुसार " सारणीयन किसी विचाराधीन समस्या को स्पष्ट बनाने के लिये संख्या सम्बन्धी ऑकडों का नियमित एवं व्यवस्थित प्रदर्शन है।"

अतः यह स्पष्ट है कि सारणीयन संगृहित एवं वर्गीकृत समंको को क्रमबद्व एवं सुव्यवस्थित ढंग से इस प्रकार प्रदर्शित करने की क्रिया है जिससे उन्हें तुलनीय बनाया जा सके एवं उनकी विशषताओं को प्रदर्शित किया जा सके।

विश्लेषण हेतु प्रयुक्त विधियाँ :-

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक प्रवृत्ति का है । अतः विचार क्रम एवं परकों को स्पष्ट करने के लिये प्रमुखतः आत्मगत विश्लेषण की सहायता ली गयी है । लेकिन अध्ययन को परिणात्मक एवं गुणात्मक बनाने के लिये सामान्य सॉख्यिकीय विधियों जैसे माध्य, प्रतिशत आदि का प्रयोग किया जायेगा। इस शोध का अध्ययन करने में आवश्यकतानुसार तथ्यों को स्पष्ट करने के लिये चित्रों एवं रेखा चित्रों की भी सहायता ली गयी है कुल मिलाकर तथ्य एवं तर्कों के आधार पर इस शोध अध्ययन को प्रस्तुत किया गया हैं।

प्रयुक्त सॉख्यिकीय सूत्र :-

अ– शोधकर्ता ने प्रतिशत के माध्यम से अपने शोधकार्य का विश्लेषण एवं व्याख्या की है।

$$\text{प्रतिशत} = \frac{\text{उत्तर से सम्बन्धित शिक्षकों की संख्या} \times 100}{\text{कुल शिक्षकों की संख्या}}$$

ब – शोधकर्ता ने तालिका बनाकर मध्यमान, मानक विचलन और क्रॉन्तिक

निस्पत्ति निकालने के लिये निम्नलिखित सॉख्यिकीय सूत्र का प्रयोग किया है–

मध्यमान ज्ञात करने का सूत्र –

$$M = A.M + \frac{\Sigma f.d}{N} \times C.I$$

जहाँ M = मध्यमान ।

A.M. = कल्पित मध्यमान , आवृत्ति वितरण में उस वर्ग का मध्य बिन्दु जिसे कल्पित रूप में मध्यमान लिया गया है ।

f. = आवृत्ति ।

d = कल्पित मध्यमान से अन्य वर्गान्तरों के मध्य बिन्दु के विचलन को प्रतीक के रूप में कहा करते है ।

fd = विभिन्न वर्गान्तरों के विचलन (d) के साथ उसकी आवृत्ति (f) का गुणनफल ।

Σ f.d = विचलन एवं आवृत्तियों के गुणनफलों का योग ।

N = आवृत्तियों का योग ।

C.I. = वर्गान्तर का विस्तार एवं आकार ।

मानक विचलन ज्ञात करने का सूत्र :–

$$S.D. \text{ (मानक विचलन)} = i\sqrt{\frac{\Sigma f.d^2}{N} - \left(\frac{\Sigma f.d}{N}\right)^2}$$

जहाँ S.D. = मानक विचलन ।

I. = वर्ग विस्तार ।

Σ f.d = विचलन (d) एवं आवृत्तियों (f) के गुणनफल $(fd)^2$ का योग।

N = संख्या (आवृत्तियों का योग)

क्रान्ति निष्पत्ति (C.R) ज्ञात करने का सूत्र :–

$$C.R. = \frac{D}{SED}$$

जहाँ :–

D = मध्यमानों का वास्तविक अन्तर (दोनों मध्यमानों का अन्तर)

$M_1 - M_2$

नोट :– यहाँ धन , ऋण का ध्यान न देकर केवल अन्तर लेते है ।

SED or (σ D) = दो असह सम्बन्धित मध्यमानों के अन्तर की प्रमाणित त्रुटि ।

$$SED \text{ or } (\sigma D) = \sqrt{\frac{(\sigma 1)^2}{N_1} + \frac{(\sigma 2)^2}{N_2}}$$

$\sigma 1$ = प्रथम न्यादर्श का प्रमाणित विचलन (S.D.)

$\sigma 2$ = दितीय न्यादर्श का प्रमाणित विचलन (S.D.)

N_1 = प्रथम न्यादर्श की संख्या ।

N_2 = द्वितीय न्यादर्श की संख्या ।

प्राप्त समंको की प्रकृति एवं उपयुक्तता :-

समंको के संग्रहण का आशय समंको के एकत्र किये जाने से है। सॉख्यिकीय रीतियों में समंको का संग्रहण प्रथम महत्वपूर्ण रीति है। सॉख्यिकीय अनुसंधान के विशाल भवन का निर्माण संकलित समंको की नीव पर होता है। यदि इसमें कोई दोष या त्रुटि रही तो यह सारे अनुसंधान को प्रभावित करेगा और निष्कर्ष अशुद्ध होगा इसलिये अनुसंधान कर्ता के लिये इस कार्य में अत्यधिक सतर्कता बरतना बहुत आवश्यक है।

इस शोध अध्ययन मे मूलतः प्राथमिक समंको की ही प्रयोग किया गया है द्वितीयक समंक का प्रयोग लगभग नगण्य है अतः इस तथ्य को पूर्णतः स्पष्ट कर देना चाहियें कि प्राथमिक और द्वितीयक समंक क्या है ? इनमें क्या अन्तर है ? तथा इन दोनों में कौन अधिक महत्वपूर्ण है ?

(अ) प्राथमिक समंक :-

जो समंक संकलन कर्ता अपने प्रयोग में लाने के लिये पहली बार एकत्रित करता है वे प्राथमिक समंक कहलाते है प्रथमबार संकलित होने के कारण इन्हें प्राथमिक समंक कहा जाता है। होरेस से क्राइस्ट के कथनानुसार " प्राथमिक समंको से यह आशय है कि वे मौलिक है अर्थात जिनका समूहीकरण बहुत ही कम या नही हुआ है। घटनाओं का अंकन या गणन उसी प्रकार किया गया है जैसा पाया गया है। मुख्यरूप से वे कच्चे पदार्थ होते है।" प्राथमिक तथ्यों को प्रत्यक्ष निरीक्षण अनुसूची प्रश्नावली एवं साक्षात्कार आदि प्रविधियों से ज्ञात किया जाता है । प्राथमिक तथ्यों की विश्वसनीयता उत्तरदाता पर निर्भर करती है ।

(ब) द्वितीयक समंक :-

ये वे समंक है जिनका संकलन पहलेसे किसी अन्य व्यक्ति या संस्था द्वारा किया जा चुका है। और अनुसंधान कर्ता उनको ही अपने प्रयोग में लाता है। यहाँ वह संग्रहण नही करता वरन् किसी अन्य उद्देश्य के लिये संकलित सामग्री को प्रयोग में लाता है प्रो0 एम0एम0 ब्लेयर का मत है – " द्वितीयक समंक वे है जो पहले से अस्तित्व में है और जो वर्तमान प्रश्नों के उत्तर में नही बल्कि किसी दूसरे उद्देश्य के लिये एकत्र किये गये है। "

यद्यपि प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको में परिभाषा सम्बन्धी अन्तर पाया जाता है। परन्तु यह अन्तर मुख्य रूप से केवल मात्रा का है। सेक्राइस्ट के शब्दों में " व्यापक रूप से प्राथमिक व द्वितीयक समंको में मेल केवल अंशों का है। जो समंक एक पक्ष के लिये

द्वितीयक है वे ही अन्य पक्ष के प्राथमिक होते है।''

अवधारणायें :-

किसी भी शोध प्रबन्ध में अवधारणाओं की एक केन्द्रीय भूमिका होती है सैद्धान्तिक आधार एवं अनुभव गम्य विश्लेषण कर्ता दोनों को यह एक सुनिश्चित पथ प्रदान करता है।

इस शोध प्रबन्ध में कतिपय अवधारणायें प्रयुक्त होती है जिनका स्पष्टीकरण निम्नवत है।

(अ) प्राथमिक शिक्षक :-

प्राथमिक शिक्षक वे होते है जो कक्षा 1 से पॉच (प्राथमिक) की कक्षाओं में अध्यापन कार्य करते है।

(ब) वेतनाधारित आय :-

वेतनाधारित आय वह आय है जो मूल रूप से व्युत्पन्न होती है तथा जिसमें महंगाई भत्ते के साथ साथ सभी साधन सम्मिलित होते है।

(स) व्यय प्रवृत्ति :-

व्यय प्रवृत्ति वह चर है जो समष्टि या व्यष्टि स्तर पर व्यय एवं आय से आनुपातिक सम्बन्ध को व्यक्त करता है व्यय प्रवृत्ति समाज या व्यक्ति के व्यय करने के नमूने को भी व्यक्त करता है।

(द) व्यय संरचना :-

व्यय संरचना समष्टि एवं व्यष्टि दोनों ही आधारों पर व्यय के ढॉचे का बतलाती है व्यय के इस ढ़ॉचे में विभिन्न मदों पर आधारित व्यय एक योगात्मक तथ्य उत्पन्न करते है।

(ड़) उपभोग प्रवृत्ति :-

उपभोग व्यय एवं आय का आनुपातिक सम्बन्ध ही उपभोग प्रवृत्ति कहलाता है।

(क) उपभोग व्यय :-

एक उपभोक्ता द्वारा उपभोग की वस्तुओं पर जो भी व्यय होता है उसे उपभोग व्यय कहते है।

(ख) सामान्य उपभोग व्यय :-

सामान्य उपभोग व्यय वही व्यय होता है जिसमें आय का एक भाग अनिवार्य उपभोग की वस्तुओं पर व्यय किया जाता है जैसे – गेंहू, दाल,चावल, मॉस, मछली आदि।

(ग) शिक्षा परक व्यय :-

शिक्षा सम्बन्धी सामग्रियों पर जो भी व्यय किया जाता है उसे शिक्षा परक व्यय कहते हैं।

(घ) विलासिता व्यय :-

भौतिक सु,खों की प्राप्ति के लिये भौतिक सुखों से सम्बन्धित वस्तुओं पर किये जाने वाले व्यय को विलासिता व्यय कहते है।

(च) चिकित्सा व्यय :-

शारीरिक एवं मानसिक रूप से अस्वस्थ होने वाले व्यक्ति के इलाज पर होने वाले व्यय को चिकित्सा व्यय कहते है।

(छ) यात्रा व्यय :-

जनपदीय एवं वाह्य जनपदीय यात्रा हेतु यात्रा के साधनों पर होने वाले व्यय को यात्रा व्यय कहा जाताहै। जैसे रिक्शा, ताँगा,बस, ट्रेन आदि के किराये पर होने वाले व्यय ।

(ज) आकस्मिक लाभगत व्यय :-

आकस्मिक लाभ हेतु जब ऐसे साधनों पर व्यय किया जाता है जिनके द्वारा आकस्मिक लाभ होता है। उसे आकस्मिक लाभगत व्यय कहते हैं जैसे लाटरी के टिकट क्रय पर व्यय।

(झ) मनोरंजन व्यय :-

मनोरजन के साधनों पर यथा चलचित्र साधन पर किये जाने वाले व्यय को मनोरंजन व्यय कहते है।

(ञ) बचत :-

समाज अथवा किसी व्यक्ति की आय का वह भाग जो व्यय नही किया जाता बल्कि स्टाक कर लिया जाता है , उसे बचत कहेंगे। बचत आय पर आधारित होती है।

(ट) बचत संरचना :-

बचत संरचना से तात्पर्य समाज या व्यक्ति के बचत के उस ढ़ॉचे से है जिसमें

विभिन्न बचतों का एक योगात्मक स्वरूप उत्पन्न होता है।

(ठ) बचत फलन :-

बचत मूलतः आय पर निर्भर करती है अतः जब बचत एवं आय में फलनात्मक सम्बन्ध निर्मित किया जाता है तो उसे बचत फलन कहते है।

अध्याय - तीन

आय व्यय एवं बचत

(सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि)

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. आय की प्रकृति।
2. आय के प्रकार।
3. आय प्रभाव एवं उपभोग रेखा।
4. व्यय की प्रकृति।
5. व्यय के प्रकार।
6. व्यय के प्रभाव।
7. व्यय एवं आर्थिक विकास।
8. व्यय के समीकरण।
9. बचत की प्रकृति।
10. बचत के प्रकार।
11. बचत के उपयोग।
12. विनियोग।
13. बचत एवं विनियोग में सन्तुलन।
14. व्यय एवं बचत में सन्तुलन।

अध्याय - तीन

आय व्यय एवं बचत (सैद्धान्तिक प्रष्ठभूमि)

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध प्राथमिक शिक्षकों के आय व्यय एवं बचत से सम्बन्धित है अतः यह उपयुक्त होगा कि आय व्यय एवं बचत के परिप्रेक्ष में निम्नांकित की विस्तृत व्याख्या की जाय।

3.1 आय की प्रकृति :-

देश की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में आय की प्रकृति महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं अतः देश की अर्थव्ययवस्था में आय का क्या स्थान एंव महत्व है तथा यह किन तत्वों से प्रभावित होती है, सम्पूर्ण मानव जाति किस सीमा तक आय उत्पादन चक्र में फॅसी रहती है यह आय की व्याख्या से स्पष्ट किया जा सकता है।

आय क्या है ? :-

किसी समयावधि में उत्पादन की समस्त क्रियाओं के परिणाम स्वरूप उत्पादन के साधनों को जो पारितोषक प्राप्त होता है उसे उस समयावधि की आय कहते है।

" आय एक समय में उत्पादित वस्तओं और सेवाओं का योग है।"

इस प्रकार आय जहा एक ओर उत्पादन क्रिया का परिणाम है वही दूसरी ओर व्यय के सापेक्ष एक निश्चित मूल्य की वस्तुओं और सेवाओं का अधिकार हैं

3.2 आय के प्रकार :-

मुख्यतः आय दो प्रकार की होती है :-

अ – सार्वजनिक आय ।

ब – निजी आय ।

(अ) सार्वजनिक आय :-

विभिन्न कार्यो पर व्यय करने के लिये राज्य को आय की आवश्यकता होती है। अतः वह विभिन्न साधनों से आय जुटाता हैं। राज्य किस प्रकार अपनी आय के साधन जुटाता है इस विषय में करों का क्या महत्व है। करारोपण एवं कर भार आदि के क्या क्या सिद्धान्त है एवं करों का विभिन्न वर्गो पर क्या प्रभाव पड़ता है। इन्ही सब बातों पर सार्वनजिक आय शीर्षक के अन्तर्गत विचार किया जाता है। सार्वनजिक आय का प्रयोगदो अर्थो में किया जाता है।

1. विस्तृत अर्थ में ।

2. संकीर्ण अर्थ में ।

1. विस्तृत अर्थ में :-

व्यापक अर्थ में सार्वजनिक आय में सभी प्रकार की आय एवं प्राप्तियां सम्मिलित की जाती है।

2. संकीर्ण अर्थ में :-

इसमें सरकार की केवल वही आय सम्मिलित की जाती है। जिसे लौटाना न पडें सार्वजनिक आय में राजकीय सम्पत्ति के विक्रय से प्राप्त राशि तथा पत्र मुद्रा प्रकाशन से प्राप्त राशि भी सम्मिलित की जाती है। अतः सार्वनजिक आय वह आय है जिससे सरकार की सम्पत्ति में वृद्धि बिना दायित्व में वृद्धि किये हो सकती है।

The Income of public authority may be defined either in a broad or in a narrow sense , in the broad sense it includes all incoming or recepts in the narrow sense only those recepts which are included in the ordinary conception of reveue

"Daltan".

Public finance - K.P. Jain

ब - निजी आय :-

व्यक्ति विशेष की आय को निजी आय कहा जाता है । निजी आय में समष्टि स्तर पर समस्त साधनों से प्राप्त होने वाली आय को सम्मिलित किया जाता है जब कि व्यष्टि स्तर पर व्यक्ति की वास्तविक आय को आय माना जाता है निजी क्षेत्र में व्यक्तियों की आय के प्रमुख स्रोत निम्नवत है।

1. कृषि क्षेत्र से प्राप्त आय।
2. श्रम व सेवाओं से प्राप्त आय।
3. व्यवसायिक क्षेत्र (धन्धों से प्राप्त आय) ।

3.3 आय प्रभाव एवं उपभोग रेखा :-

उपभोक्ता के साम्य के अन्तर्गत हम उपभोक्ता की आय को स्थिर मानकर चलते है परन्तु व्यवहारिक जीवन में उपभोक्ता की आय में परिवर्तन होते रहते है। आय में होनेवाले परिवर्तन का प्रभाव उपभोक्ता की साम्य स्थिति पर भी पड़ता है इस प्रभाव को आय प्रभाव कहते है मार्शल के उपयोगिता विश्लेषण का मुख्य दोष यह है कि इसमें आय में परिवर्तन पर उचित ध्यान नही दिया गया। परन्तु तटस्थता वक्र विश्लेषण मॉग पर आय के प्रभाव का अध्ययन करता है यदि वस्तुओं की कीमतें यथा स्थिर रहती है परन्तु उपभोक्ता की आय में परिवर्तन होता है तो वह वस्तुओं की कम मॉग अथवा अधिक मॉग कर सकता है और उसका सन्तोष पहले की अपेक्षा घट सकता है अथवा बढ़ सकता है।

उपभोक्ता की आय में होनेवाले परिवर्तन का उसकी कुल सन्तुष्टि पर जो प्रभाव पड़ता है उसे आय प्रभाव कहा जाता है। यह मानते हुये कि उपभोक्ता द्वारा खरीदी जाने वाली वस्तुओं की कीमतें यथा स्थिर रहती है, आय में वृद्धि होनेपर इसकी सन्तुष्टि में भी वृद्धि हो जायेगी। इसके विपरीत आय में कमी होने पर उसकी सन्तुष्टि में भी कमी हो जायेगी। वस्तुओं की कीमतों को यथा स्थिर माने हुये आय परिवर्तन के परिणाम स्वरूप उपभोक्ता की क्रयशक्ति पर जो प्रभाव पड़ता है उसे आय प्रभाव कहते है उपभोक्ता की आय में हुई प्रत्येक वृद्धि उसे उच्चतर उदासीनता वक्र पर ले जाती है पहले की अपेक्षा वह अधिक सम्पन्न हो जाता है इसके विपरीत उपभोक्ता की आय में

होने वाली प्रत्येक कमी उसे निम्न उदासीनता वक्र पर ला पटकती है पहले की अपेक्षा उसकी दशा में गिरावट आ जाती है। आय उपभोग वक आय प्रभाव का अनुरेखण करता है। (चित्र सं0 3.1)

रेखाचित्र में Q बिन्दु पर उपभोक्ता सन्तुलन अवस्था में है उसकी आय बढ़ रही है। लेकिन उसके द्वारा प्रयोग में लायी जाने वाली वस्तुओं की कीमतें यथा स्थिर रहती है जैसे जैसे आय बढ़ती है वैसे वैसे आय कीमत रेखा दाहिनी ओर विवर्तित होताी है। नयी कीमत रेखायें कमशः A^{I} B^{I} A^{II} B^{II} तथा A^{III} B^{III} द्वारा व्यक्त की गयी है। आय वृद्धि के परिणाम स्वरूप उपभोक्ता वस्तुओं की अधिक मात्रा खरीदने में समर्थ हो जाता है। उच्चतर आय कीमत रेखाओं के परिणाम स्वरूप उपभोक्ता स्पष्टतः उच्चतर उदासीनता वक्रों पर पहुँच जायेगा। Q बिन्दु पर उपभोक्ता का प्रारम्भिक संतुलन स्थापित हुआ था। लेकिन आय वृद्धि के परिणाम स्वरूप अब वह Q',Q",Q'''जैसे नये संतुलन बिन्दुओं पर पहुँच जाता है। इन संतुलन बिन्दुओं को आपस मे जोड़ देने पर हमें एक वक्र प्राप्त होता है जिसे आय उपभोग वक्र (ICC) कहते है। यह वक्र उपभोक्ता के आय परिवर्तन एवं वस्तुओं के उपभोग के बीच के सम्बन्ध की व्याख्या इस मान्यता के आधार पर करता है कि वस्तुओं की कीमतें यथा स्थिर ही रहती है।

इस प्रकार आय उपभोग वक्र वस्तुओं की कीमतों को यथा स्थिर मानते हुये हमें बताता है कि उपभोक्ता की आय में होने वाली परिवर्तनों की वस्तुओं के उपभाग पर क्या प्रतिक्रिया होती है।
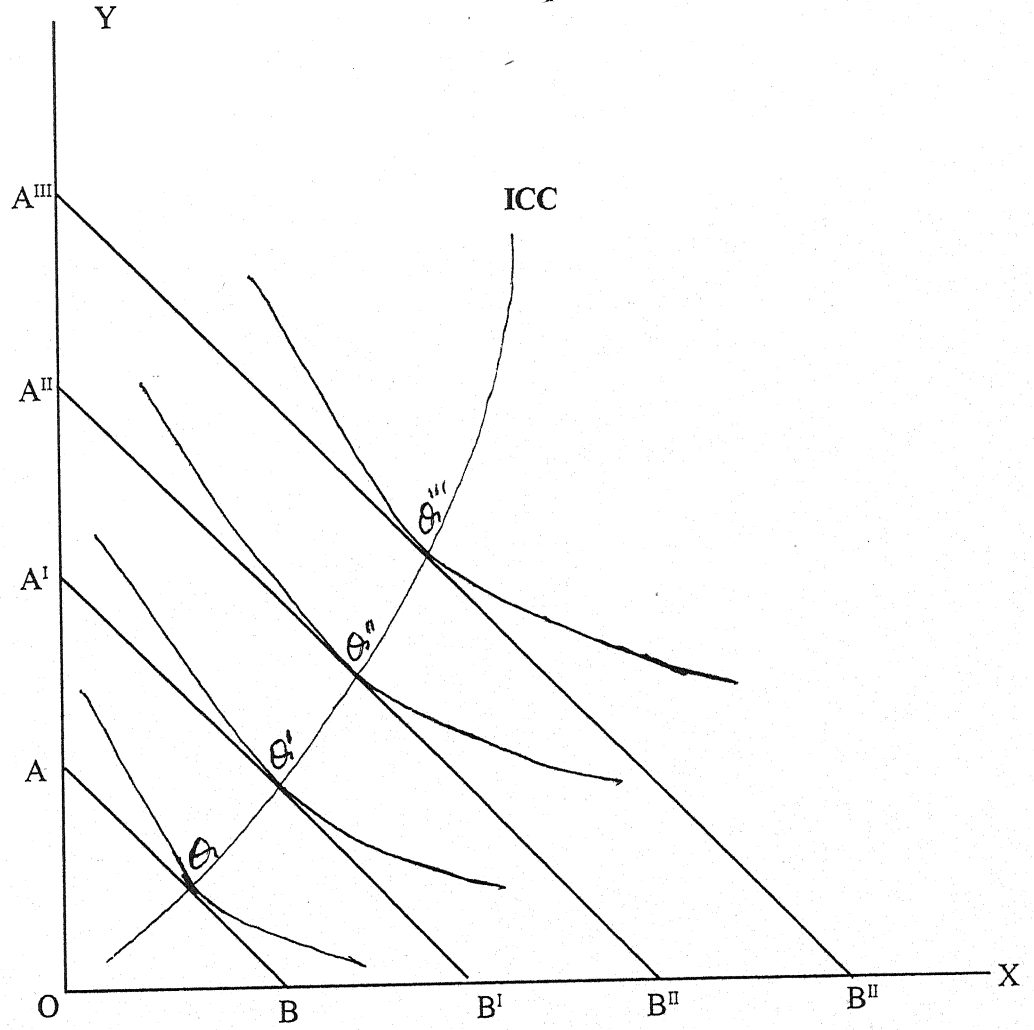
आय उपभोग वक्र (ICC)

चित्र संख्या – 3.1

3.4 व्यय की प्रकृति :-

जब व्यक्ति को या सरकार को आय प्राप्त होती है तब वह उसे व्यय भी करता हे। अतः अर्थव्यवस्था में व्यय की प्रकृति ज्ञात करना एंव सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि वर्तमान समय में व्यय का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है किसी भी देश की अर्थव्यवस्था पर उस देश के व्यय का महत्वपूर्ण स्थान होता है। व्यय की प्रकृति के विभिन्न बिन्दुओं की व्याख्या निम्नवत प्रदर्शित की जा सकती है।

3.5 व्यय के प्रकार :-

जब व्यय कर्ता के रूप में व्यक्ति अपनी आय के माध्यम से जिसे वह उत्पादन साधन के रूप में पाता है। को मूलतः उपभोग व्यय एवं बचत में आवंटित करता है प्रचलित बाजारी कीमतों पर वस्तुओं एवं सेवाओं के आवश्यक, विलासिता एवं अन्य विविध उपभोग स्वरूपों पर वह जो भौतिक आय वितरित करता है उसे ही व्यय कहा जा सकता है।

सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से व्यय के कई प्रकार हो सकते है ज्ञातत्य है कि उपभोग व्यय सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यय है और सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से कम से कम प्रभाव पूर्ण मॉग एवं अपूर्ण रोजगार संतुलन के परिप्रेक्ष्य में उपभोग व्यय ही सबसे महत्वपूर्ण है विश्लेषण की सहजता एवं अनुभवगम्य जॉच हेतु व्यय के निम्न प्रकार निर्धारित किये जा सकते है। (चित्र सं0 3.2)
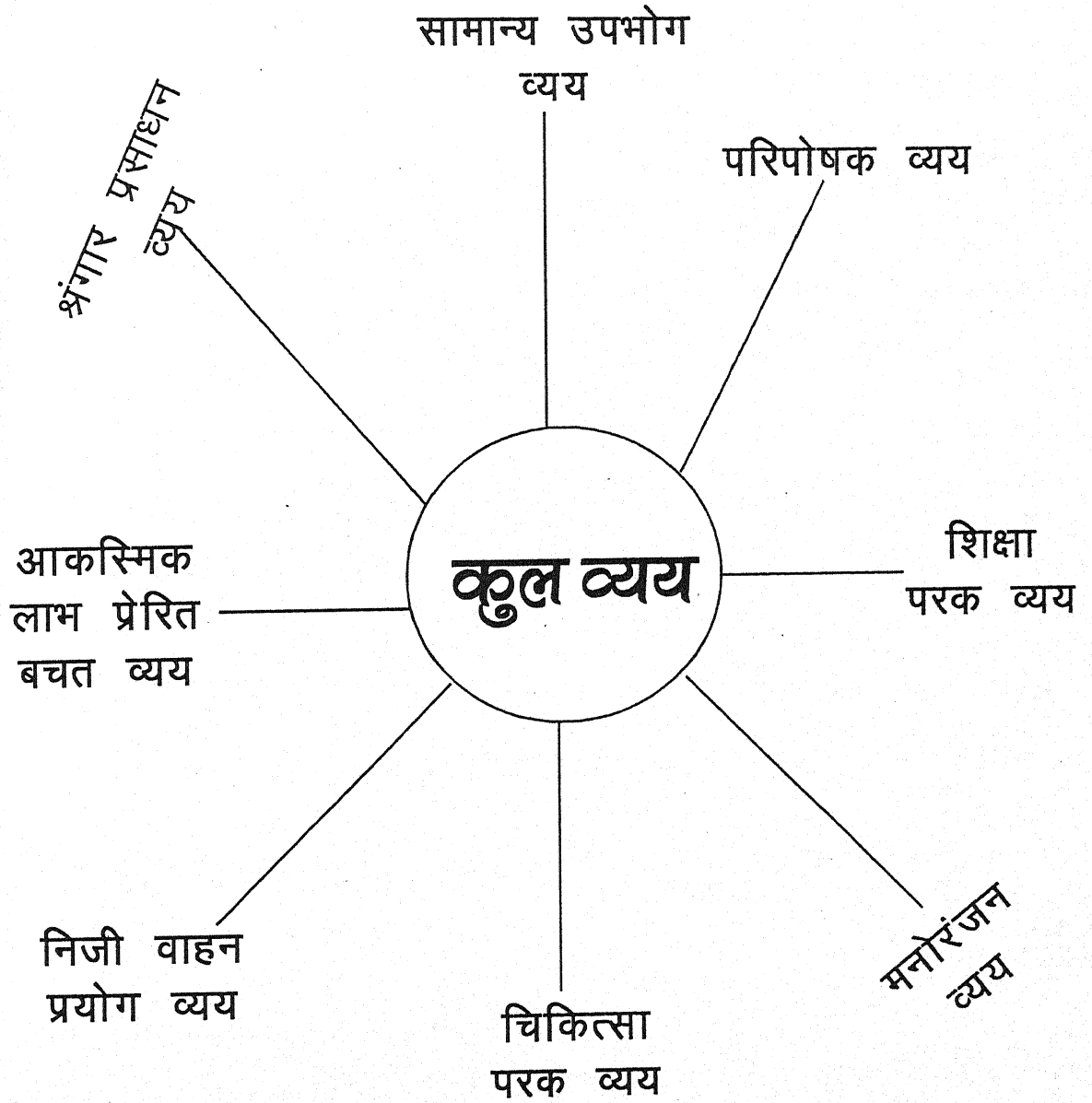
व्यय के प्रकार

चित्र सं0 3.2

(अ) उपभोग व्यय :-

उपभोग वस्तुओं पर किये जाने वाले व्यय को उपभोग व्यय कहते है। और इस व्यय में उपभोक्ता अपनी आय मे से कुछ भाग अनिवार्य रूप से आवश्यक सामान्य उपभोग की वस्तुओं पर खर्च करता है। जैसे – दाल, चावल,दूध, मक्खन, चाय, अण्डा आदि पर।

(ब) परिपोषक व्यय :-

मकान का किराया, मकान की आन्तरिक एवं वाहय साज–सज्जा तथा परिधान पर किये गये व्यय को परिपोषक व्यय कहते है।

(स) शिक्षा परक व्यय :-

बच्चों का शिक्षण शुल्क तथा शिक्षा की सामग्री पर किया गया व्यय शिक्षा परक व्यय कहलाता हैं

(द) चिकित्सा परक व्यय :-

दवाओं तथा अन्य प्रकार की चिकित्सा सम्बन्धी देय पर किये गये व्यय को चिकित्सा परक व्यय कहते हैं।

(इ) यात्रा व्यय :-

यात्रा के विभिन्न साधनों जैसे – रिक्शा, तांगा, ट्रेन, बस, आदि के किराये पर तथा निजी वाहन के ईधन पर जो व्यय होता है यात्रा व्यय कहलाता है।

(च) मनोरंजन व्यय :-

मनोरंजन के साधन जैसे चलचित्र आदि पर किये गये व्यय को मनोरंजन व्यय कहा जाता है।

(छ) आकस्मिक लाभ प्रेरित व्यय :-

आकस्मिक लाभ प्रेरित व्यय ऐसे साधनों पर किया जाने वाला व्यय है जिससे आकसिमक लाभ प्राप्त हो आकस्मिक लाभ प्रेरित व्यय कहलाता है।

विभिन्न प्रकार के व्ययों को स्पष्ट करने के पश्चात व्ययों को व्यय चक्र के रूप में चित्र सं 3.2 में स्पष्ट किया गया है।

3.6 व्यय के प्रभाव :-

व्यय का प्रत्येक देश व समाज की अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अतः व्यक्तियों की व्यय सम्बन्धी नीति ऐसी होनी चाहियें जिससे समाज की अर्थव्यवस्था पर अच्छा प्रभाव पडें।अतः व्यय के आर्थिक प्रभावों को हम निम्न भागों मे विभाजित कर सकते है।

1. उत्पादन पर प्रभाव
2. वितरण पर प्रभाव
3. अन्य प्रभाव

1. उत्पादन पर प्रभाव :-

व्यय का देश के उत्पादन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह उत्पादन की प्रकृति व मात्रा को प्रभावित करके आय व रोजगार पर भी प्रभाव डालता है।

अ- कार्य करने और बचत करने की इच्छा पर प्रभाव :-

व्यय का प्रभाव व्यक्ति की काम करने और बचत करने की इच्छा पर भी पड़ता है। आजकल व्यय दो प्रकार का होता है।

1. वर्तमान सम्बन्धी
2. भविष्य सम्बन्धी

1. वर्तमान सम्बन्धी :-

वर्तमान से संम्बन्धित व्यय के द्वारा व्यक्ति अपना जीवन स्तर ऊँचा करने तथा आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयत्न करता है। इसलिये व्यक्तियों मे काम करने

और बचत करने की इच्छा भी बदवती होती है।

2. भविष्य सम्बन्धी :-

भविष्य सम्बन्धी व्यय का कार्य करने तथा बचत करने की इच्छा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यदि व्यक्ति को यह भ्रम हो जाये कि राज्य वृद्धावस्था में पेंशन देती है तो व्यक्ति मे अकर्मण्यता की भावना जागृत हो जायेगी। इसमें भविष्य के लिये बचत करनेकी प्रवृत्ति शून्य हो जायेगी। परन्तु यह दोष उत्पन्न न हो इसके लिये सरकार को एक शर्त लगा देनी चाहिये कि अनुदान उन्ही लोगों को मिलेगा जो कार्य करेगा।

ब - आर्थिक साधनों के हस्तान्तरण पर प्रभाव :-

व्यय का उत्पादन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है वे आर्थिक साधनों के हस्तान्तरण को प्रोत्साहित करते है। व्यक्ति उन्ही साधनों पर व्यय को उचित समझता है जिन्हें वह आवश्यक समझता है तथा जो उसके लिये उपयोगी होते है।

डाल्टन के अनुसार – " व्यय से उत्पादन में अधिक से अधिक वृद्धि होनी चाहियें।"

स- वितरण पर प्रभाव :-

अनुदान द्वारा वितरण में आय की असमानता को घटाकर सुधारा जा सकता हे।

व्यय में सम्मिलित किये गये अनुदान तीन प्रकार के होते है।

1. प्रतिगामी व्यय

2. आनुपातिक व्यय

3. प्रगतिशील व्यय

1. प्रतिगामी व्यय :-

किसी व्यक्ति की आय जितनी कम होती है वह व्यय और उस व्यक्ति को उतना ही कम अनुपात में लाभ प्राप्त होता है व्यय आय से अधिक हो तो इसे प्रतिगामी व्यय कहते हैं।

2. आनुपातिक व्यय :-

यदि व्यक्ति को उसकी आय के अनुपात में व्यय से लाभ प्राप्त होता है तो इसे आनुपातिक व्यय कहते है।

3. प्रगतिशील व्यय :-

प्रगतिशील व्यय वह व्यय है, जिसमें व्यक्ति अपनी आय को उचित ढ़ग से व्यय में समायोजन करता हे तथा भविष्य के लिये पर्याप्त बचत के साथ व्यय करता है।

व्यय करने हेतु व्यक्ति अपनी आवश्यकाताओं की पूर्ति करने के लिये धन एकत्रित करने का प्रयास करता है इस प्रकार असमानता का जन्म होता है। क्योंकि कुछ व्यक्ति अधिक धन एकत्रित कर लेते है और कुछ कम। इस सम्बन्ध मे केन्स ने स्पष्ट किया है –

" निर्धनों में धनी व्यक्ति की अपेक्षा उपभोग पर व्यय करने की अधिकाधिक प्रवृत्ति पायी जाती है और इसी कारण जब धनी वर्ग से धन लेकर गरीबों पर व्यय किया जायेगा तो देश में व्यय की मात्रा बढेगी। जिससे उत्पादन एंव रोजगार में वृद्धि होगी।"

3.7 व्यय एवं आर्थिक विकास :-

प्रत्येक प्रकार के आर्थिक विकास के कार्यक्रम के लिये पूँजी की आवश्यकता होती अर्धविकसित देशों में भी हम विकसित राष्ट्रों की भाँति पूर्ण व्यवसाय के स्तर की कल्पना कर सकते है पूर्ण व्यवसाय वह स्थिति है जिसमें प्रभाव पूर्ण माँगे में वृद्धि होने से उत्पादन के स्तर में वृद्धि हो सकती कीन्स का विचार था कि " प्रत्येक अर्थव्यवस्था में पूर्ण व्यवसाय के स्तर तक पहुँचने की अधिकतम सीमा होती है।"

परन्तु वी0के0 आर0पी0 राय का मत है कि " अर्ध विकसित देशों मे आर्थिक विकास के विभिन्न स्तरों के साथ–साथ रोजगार के भी कई स्तर होते है।"

इस तत्थ को उन्होनें अग्रांकित चित्र द्वारा स्पष्ट किया है। रेखा चित्र में जब आर्थिक विकास B P से उठकर B F हो जाता है और प्रभावपूर्ण माँग DD^{I} से बढकर $D^{I}D^{II}$ हो जाती हैं। तो पूर्णरोजगार का स्तर भी OD^{I} से बढ़कर $O^{I}D^{I}$ हो जाता है और कुल रोजगार स्तर AO से बढ़कर AO^{I} हो जाता है। इस प्रकार यह प्रवृत्ति बढ़ती चली जाती है।
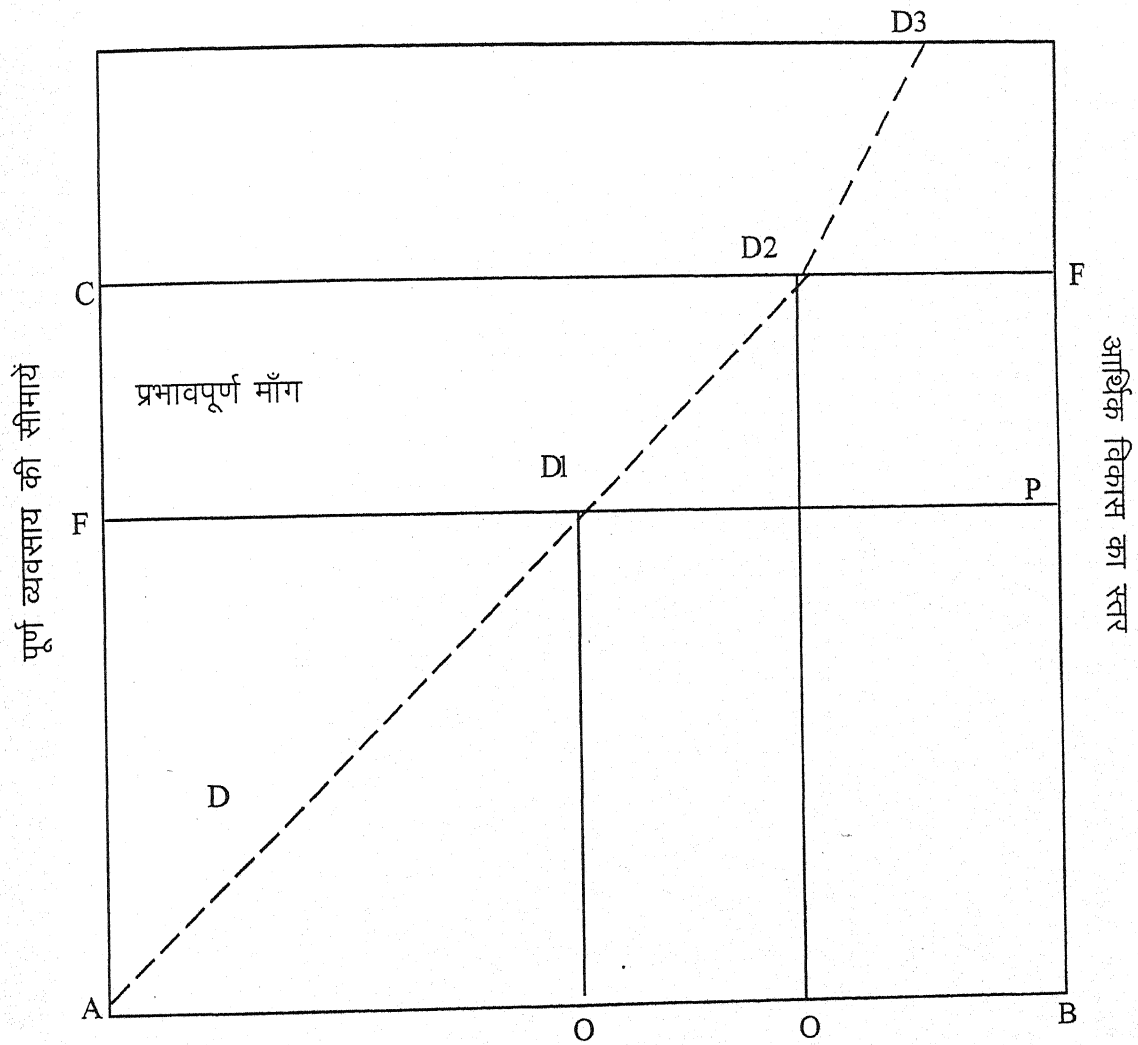
कुल रोजगार

चित्र संख्या 3.3

आर्थिक विकास में सार्वनजिक व्यय का अपना एक विशेष महत्व है जान एडल के अनुसार " अतिरिक्त उत्पादन का एक बढ़ता हुआ अनुपात पूँजी निर्माण हेतु रखा जाना चाहिये ताकि एक अर्धविकसित देश का आर्थिक विकास तेजी से हो सके।"

व्यय के विभिन्न बिन्दुओं पर व्यय के समीकरण निम्नवत विश्लेषित किये जा सकते हैं

समष्टि भावी व्यय समीकरण समिष्ट आर्थिक विश्लेषण के अन्तर्गत समग्र व्यय को गणितीय स्प में निम्नवत स्पष्ट किया जाता हैं।

3.8 व्यय के समीकरण :-

TR = TE

TR = PQ = TE

संकेत –

TR = कुल आगम

TE = कुल व्यय

PQ = वस्तु मात्रा का व्यय

वस्तुतः क्रेताओं अथवा व्यय कर्ताओं द्वारा किये जाने वाला व्यय उनके उपभोग अथवा मॉग फलन पर निर्भर करता है अतः उनका बाजारी उपभोग व्यय मॉग फलन स्थैतिक या प्रावैगिक होगा।

3.9 बचत की प्रकृति :-

व्यय एवं बचत आय से व्युत्पन्न महत्वपूर्ण आर्थिक तत्व है यदि व्यय एवं बचत आय के फलन होतो आय एवं बचत के मध्य एक निश्चित स्पष्ट सम्बन्ध होना चाहिये।

प्रो0 कीन्स के अनुसार " उपभोग पर किये गये व्यय से बची आय ही बचत है। " दूसरे शब्दों मे बचत आय का वह शेष भाग है जो उपभोग सम्बन्धी व्यय करने के पश्चात बच जाता है।

$$\text{बचत } (S) = \text{आय } (Y) - \text{उपभोग } (C)$$

व्यय जहॉ एक ओर वर्तमान के उपभोग का प्रतिनिधत्व करता है ऐसा प्रतीत होता है कि व्यय एवं बचत विपरीत ध्रुव है तर्क यह है कि जब व्यय कम होता है और व्यवहार में भी यह देखा जा सकता है कि व्यय भी बढ़े और बचत भी। यह तभी सम्भव है जब व्यय के साथ– साथ आय भी बढ़ती जाय अर्थात व्यय के माध्यम से जितनी मुद्रा की राशि में कमी हो उतनी ही आय के माध्यम से बढ़ जाय व्यय एवं बचत चूँकि आय के फलन है तथा इनका योग कुल व्यय के बराबर होना चाहियें।

अर्थात $Y = C + S$

आर्थिक अध्ययन के अन्तर्गत हम प्रायः तीन स्थिति से होकर गुजरते है।

1. आय 2. व्यय 3. बचत

बचत आय तथा व्यय दोनों से अलग है, बचत आय का वह भाग है जो उपभोग पर व्यय नहीं किया जाता कीन्स के शब्दों में " Savings is the excess of income over expenditure on consumption".

उच्च्य उपभोग के स्तर को प्रतिस्थापित करता है उपरोक्त विचार भावी विनियोग की ओर संकेत करता है।

जब आय के स्तर में वृद्धि होती है तब बचत धनात्मक होती है अन्यथा नही

अर्थात जब व्यक्ति या उपभोक्ता द्वारा उपभोग वस्तु पर कम व्यय किया जाता है –

$$E = V \text{ ------------------(1)}$$

$$Et = Vt \text{ ----------------(2)}$$

जहॉ E = सकल व्यय

V = सकल आय

Et = सकल बिन्दु पर किया गया व्यय।

Vt = सकल बिन्दु पर सकल आय।

" व्यय के प्रभाव " तथा " व्यय एवं आर्थिक विकास " जे0सी0 वाष्णेय की पुस्तक राजस्व से उद्धत एक समय पश्चात प्रभाव के साथ समष्टि भावी व्यय समीकरण –

$$ET = f\,(Yt\text{-}1+Yt\text{-}2+Yt\text{-}3t+\text{------------}=Yt\text{-}n) \text{ ---------3}$$

f = निर्भरता को सूचित करता है।

$t-1$ = पिछले समय की आय

$t-2$ = दूसरे पिछले समय का व्यय

$t-n$ = पिछले अनन्त समय की आय

E = सकल व्यय

Y = सकल आय

t = समय बिंन्दु

$<,>$ = असाम्यता को प्रदर्शित करते हैं।

अतः $Et<,> (yt\text{-}1+Yt\text{-}2+yt\text{-}3 + \text{---------------}+Yt\text{-}N)$
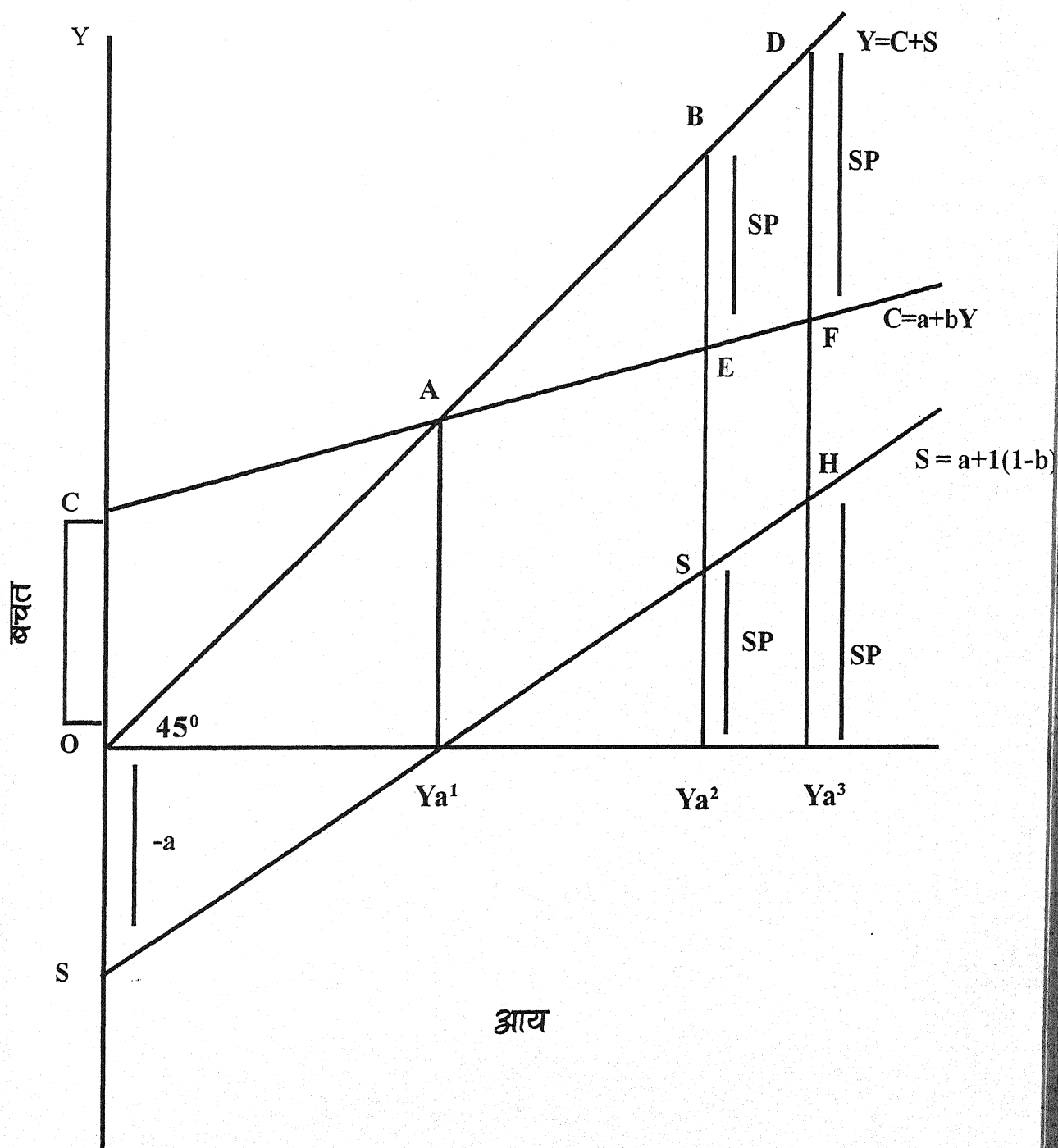
बचत क्या है ?

चित्र संख्या 3.4

ब - व्यष्टिभावी व्यय समीकरण :-

वस्तुओं की विक्रय कीमत ही विक्रेता की आय होती है अर्थात एक विक्रेता जितनी वस्तुयें बेचता है उससे प्राप्त होने वाली कीमत ही उसकी आय होती है और क्रेता की दृष्टि से वस्तुयें क्रय करने पर जो बाजारू कीमत होती है। वह उसका व्यय होता है। अतः एक विक्रेता की आय एवं एक क्रेता का व्यय दोनों ही बराबर होते है। इस प्रकार हम कह सकते है कि '' एक की आय दूसरे का व्यय हो सकती है। और दूसरे का व्यय पहले की आय''। इस तथ्य को हम निम्न समीकरण द्वारा स्पष्ट किया जाता है तब उपभोक्ता की आय का अधिक भाग व्यय होने से बच जाता है इसे बचत कहते है। बचत की यह स्थिति धनात्मक प्रवृत्ति की होती है इसके विपरीत जब व्यक्ति अपनी आय से अधिक व्यय उपभोग वस्तुओं पर करता है तब बचत ऋणात्मक हो जाती है इन दोनों स्थिति से विपरीत जब आय के बराबर ही व्यय किया जाता है तब बचत प्रवृत्ति शून्य हो जाती है इन तीनों दशाओं को हम निम्नांकित समीकरण द्वारा स्पष्ट कर सकते है।—

$$S>C \qquad Y>C = S+$$

$$S<C \qquad Y<C = S-$$

$$S = o \qquad Y=C = S o$$

सम्पूर्ण समाज की बचत का अर्थ आय के उस भाग से है जो उपभोग पर व्यय नह किया जाता है । सूत्र के रूप में –

$$S = Y-C$$

उपभोग की भॉति बचत भी आय का फलन है। अर्थात –

$$S = F(C)$$

3.10 - बचत के प्रकार :-

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री व्यक्तिगत बचत में वृद्धि को ही कुल सामाजिक बचत का आधार मानते थे। वे न केवल व्यक्तिगत बचत को प्रोत्साहन देने के पक्ष में थे बल्कि इसे व्यक्ति तथा समाज का महान गुण समझते थे। उन्होनें बचत को निवेश का निर्धारक तत्व माना और इन दोनों को एक दूसरे से अलग नही समझा।

सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से बचत को निम्नवत प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

अ- वास्तविक बचत :-

प्राथमिक शिक्षकों की बचत करने की इच्छा के विपरीत जितनी बचत हो पाती है या सम्पूर्ण व्यय के बाद बच जाती है तो उसे वास्तविक बचत कहते है।

ब - प्रत्याशित बचत :-

प्रत्याशित बचत या अनुमानित बचत वह बचत होती है जिसे सम्पादित करने की आशा बचत कर्ता द्वारा की जाती है।

स- ऐच्छिक बचत :-

जितनी बचत करने की इच्छा एक बचत कर्ता रखता है अगर उतनी ही कर लेता है तो इसे ऐच्छिक बचत कहते है।

द- वाहय बचत :-

वाहय बचत मुद्रा स्फीति द्वारा जनित वह बचत है जो बचत कर्ता या प्राथमिक

शिक्षकों द्वारा उपभोग व्यय को कम करके उत्पन्न की जाती है उसे बाहय बचत कहते हैं।

ङ - नवोन्मेषित बचत :-

बचत कर्ता या प्राथमिक शिक्षकों कोसरकार द्वारा जब नयी नयी योजनाओं के द्वारा बचत के लिये प्रोत्साहित किया जात है।तो उसे नवोन्मेषित बचत कहते हैं।

बचत के स्त्रोत :-

सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर बचत के मुख्य स्त्रोत निम्नाकिंत हैं।

1. राष्ट्रीय आय
2. राष्ट्रीय प्राकृतिक एवं आर्थिक संसाधन
3. राजकीय उपक्रम
4. विदेशी विनिमय
5. विभिन्न सरकारी संस्थाओं के माध्यम से राष्ट्रीय बचत।

कीन्स के अनुसार भले ही बचत तथा निवेश की क्रियाए भिन्न भिन्न व्यक्तियों द्वारा की जाती हो और उनके उद्देश्य तथा निर्णय भी भिन्न भिन्न हो तो भी समाज में बचत और निवेश एक दूसरे के बराबर होते है यदि इसमें असमानता है तो असंतुलन को स्थिति उत्पन्न हो जाती है यदि बचत विनियोग की अपेक्षा अधिक है तो वस्तुओं की मॉग कम हो जाती है जिससे मूल्य गिरने लगते है और मुद्रा का मूल्य कम हो जाता है। इसके विपरीत यदि बचत की तुलना में विनियोग अधिक है तो वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि होने लगेगी। और मुद्रा का मूल्य कम होने लगेगा। संतुलन की स्थिति वह है जिसमें

बचत एवं विनियोग एक दूसरे के बराबर रहते है।

व्यक्तिगत स्तर पर बचत के मुख्य स्त्रोत निम्नांकित है।

1. व्यवसायिक राष्ट्रीयकृत बैंक।
2. डाकखाना।
3. जीवन बीमा।
4. यूनिट ट्रस्ट ऑफ इण्डिया।
5. आय स्त्रोत से स्वतः कटौती।
6. नॉन बैंकिग संस्थाऐं।

वास्तविक बचत
प्रत्याशित बचत
ऐच्छिक बचत
नवोन्मेषित बचत
बाहय बचत
बचत
बचत के प्रकार
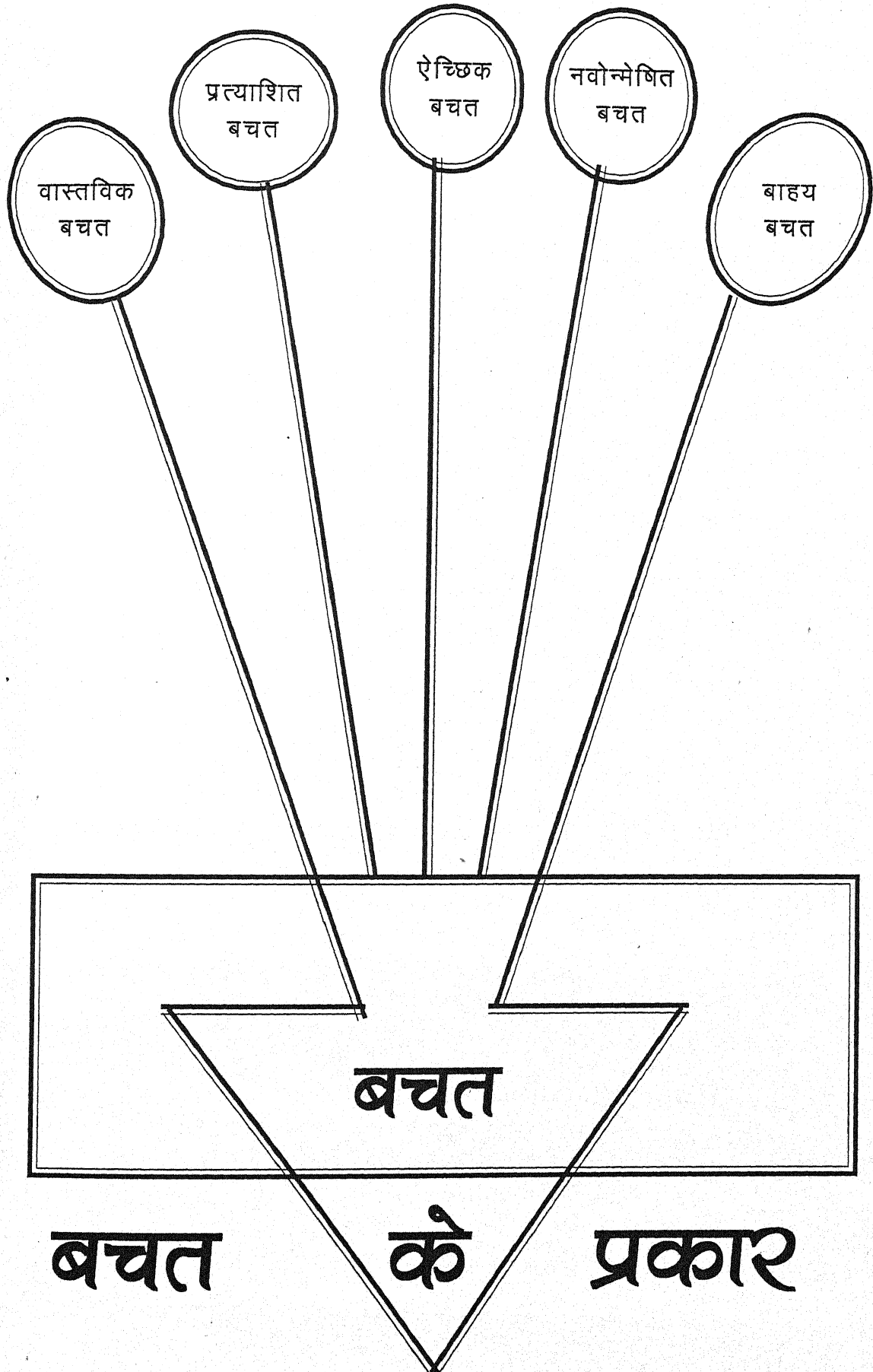
चित्र संख्या 3.5

3.11 बचत का उपयोग :-

बचतकर्ता अपनी बचत का अनेक प्रकार से उपयोग करता है बचत कर्ता कच्चे माल से वस्तुओं को तैयार करने के लिये बचत का उपयोग कर सकता है।जब कभीसामाजिक बचत होती है अर्थात पूँजी का नया निर्माण होता है वह बचत के उपयोग का उदाहरण है।

पूँजी निर्माण की अवधारणा को रेगनर नर्कसे ने प्रतिपादित किया था। इसका सामन्य आशय यह है कि व्यक्ति और समाज की ऐच्छिक तथा वाहय बचतों को उत्पादक क्षेत्रों की ओर प्रवाहित करना , आधुनिक संमृद्धि मण्डल में संवृद्धि की दर पूँजी निर्माण की दर पर ही निर्भर है।

कीन्स ने बताया कि एक व्यक्ति के दृष्टिकोण से बचत करना एक गुण अथवा अच्छाई हो सकती है परन्तु सामाजिक दृष्टिकोण से बचत एक बुराई है किसी व्यक्ति द्वारा उपभोग व्यय में कमी करके अपनी निश्चित आय में से अधिक बचत कर लेने पर उसकी व्यक्तिगत बचत तो बढ़ जाती है परन्तु सामाजिक बचत में कोई वृद्धि नही होती है। वास्तव में एक व्यक्ति द्वारा किया गया व्यय दूसरों की आय होता है एक निश्चित आय में से एक व्यक्ति द्वारा अधिक बचत कर लेने पर अन्य व्यक्तियों की आय उतनी ही कम हो सकती है इस प्रकार कीन्स के विचार में एक व्यक्ति जितनी अधिक बचत करता है । समाज में अन्य व्यक्ति उतनी ही कम बचत कर पाते है।

3.12 विनियोग :-

निवेश की परिभाषा देते हुये प्रो0 कीन्स ने लिखा है कि " निवेश से हमारा

अभिप्राय एक काल के भीतर होने वाली उत्पादक क्रियाओं के परिणाम स्वरूप पूँजीगत वस्तुओं के मूल्य में होने वाली चालू वृद्धि से होना चाहियें।'' डडले डिलार्ड ने भी कीन्स द्वारा दी गयी परिभाषा को अत्यधिक सरल शब्दों में व्यक्त करते हुये लिखा है कि '' वास्तविक पूँजीगत परिसम्पत्तियों के वर्तमान स्टाक में वृद्धि निवेश है।'' इस प्रकार निवेश से हमारा अभिप्राय वास्तविक पूँजी कोष में वृद्धि से होता है । दूसरे शब्दों में , निवेश आय का वह भाग है जो पूँजीगत वस्तुओं अर्थात और अधिक आय कमाने के लिय उपयोग की जाने ाली वस्तुओं के स्प में बचाकर रखा जायें। नये कारखानों की स्थापना, पहले से स्थापित व्यवसायों की क्षमता मे वृद्धि, परिवहन के साधनों का विस्तार, कारखानों तथा कार्यालयों के भवनों का निर्माण आदि कार्य निवेश कहे जाते है।

बचत के समान निवेश का अध्ययन भी व्यक्तिगत तथा सामाजिक दृष्टिकोण से किया जा सकता है। व्यक्तिगत निवेश के दो रूप हो सकते है वित्तीय तथा वास्तविक जब कोई व्यक्ति अपनी बचत का प्रयोग किसी विद्यमान कम्पनी के अंश अथवा सरकारी ऋणपत्रों व बाण्डों के खरीदने के लिये करता है तो यह वित्तीय निवेश कहा जायेगा। इसके विरीत, यदि वह व्यक्ति किसी विद्यमान कम्पनी के पुराने शेयर खरीदने के बजाय अपनी बचत का प्रयोग नयी फैक्टरी अथवा नये मकान आदि से निर्माण के लिये करता है तो इससे वास्तविक पूँजी की मात्रा मे वृद्धि होगी और दसे वास्तविक निवेश कहा जायेगा । वित्तीय निवेश के परिणामस्वरूप समाज में वास्तविक पूँजी की मात्रा में कोई वृद्धि नही होती। यदि एक व्यक्ति शेयर खरीदता है तो कोई अन्य व्यक्ति उसे बेचता है जिससे समाज में कुल निवेश की मात्रा में कोई वृद्धि नहीं होती है । वास्तविक निवेश

का प्रमुख लक्षण पूँजीगत आदेयों अथवा माल की मात्रा तथा स्टाक में वृद्धि करना है । प्रो0 कीन्स ने वास्तविक निवेश को महत्वपूर्ण माना है क्योंकि इसमें वृद्धि होने पर समाज की उत्पादन शक्ति मे वृद्धि होती है तथा रोजगार का स्तर ऊँचा होता है। सामाजिक दृष्टिकोण से निवेश महत्वपूर्ण तभी होगा जब किसी नयी औद्योगिक कम्पनी नये स्कूल, पुल, अस्पताल, फैक्ट्री, आदि का निर्माण होने के कारण देश की वास्तविक पूँजी की मात्रा में वृद्धि होती है तथा समाज की उत्पादन शक्ति बढ़ जाती है इसलिये प्रो0 कीन्स ने निवेश शब्द का प्रयोग वास्तविक निवेश के अर्थ में किया हैं किसी देश मे किसी समय कुल वास्तविक निवेश की मात्रा अनेक प्रकार की पूँजी की मात्रा द्वारा निर्धारित होती है– जैसे 1. स्थिर यन्त्र, मशीने तथा अन्य अचल पूँजी 2 कच्चे माल का स्टाक तथा अन्य अचल चल पूँजी 3. आवसिक भवन 4. सार्वजनिक निर्माण कार्य तथा 5. विदेशी निवेश ।

विनयोग से आशय मुद्रा को नयी पूँजीगत वस्तुओं के खरीदने पर व्यय किये जाने से है अर्थात आय का वह भाग जो उत्पादन तथा रोजगार की दृष्टि में प्रभावित किया जाता है। विनियोग कहलाता है विनियोग का अध्ययन व्यक्तिगत एवं सामाजिक दो प्रकार से किया जा सकता है। व्यक्तिगत विनियोग के दो रूप हो सकते है।

1. वित्तीय विनियोग
2. वास्तविक विनियोग

जब कोई व्यक्ति अपनी बचत का प्रयोग किसी विद्यमान कम्पनी के अंश अथवा सरकारी ऋण पत्रों एवं बाण्डों को खरीदने के लिये करता है तो वह वित्तीय विनियोग

कहा जायेगा इसके विरीत यदि वह व्यक्ति किसी विद्यमान कम्पनी के शेयर खरीदने के बजाय अपनी बचत का प्रयोग नयी फैक्ट्री अथवा मकान आदि के निर्माण के लिये करता है तो वास्तविक पूँजी की मात्रा में वृद्धि होती है इसे वास्तविक विनियोग कहा जायेगा। प्रो0 कीन्स ने वास्तविक विनियोग को ही महत्वपूर्ण माना है क्योंकि इसमें वृद्धि होने पर समाज की उत्पादन शक्ति मे वृद्धि होगी और रोजगार का स्तर उँचा होगा।

3.13 बचत एवं विनियोग में संतुलन :-

प्रो0 कीन्स ने General Theory में बताया कि भले ही बचत तथा निवेश की क्रियायें भिन्न भिन्न व्यक्तियों द्वारा की जाती हो और उनके उद्देश्य तथा निर्णय भी भिन्न भिन्न हो तो भी समाज में बचत और निवेश एक दूसरे के बराबर होते है। कीन्स द्वारा बचत और निवेश की दी गयी परिभाषाओं से ही बचत तथा निवेश की समानता स्पष्ट हो जाती है। निवेश से अभिप्राय उपभोग वस्तुओं के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं पर किये गये व्यय की राशि से है, इसलिये निवेश (I) राष्ट्रीय आय (Y) तथा राष्ट्रीय उपभोग (C) के अन्तर के बराबर है अर्थात $I=Y-C$, चूँकि आय और उपभोग के अन्तर को बचत कहते है। इसलिय $S = Y - C$ निवेश तथा बचत दोनों ही $Y-C$ के बराबर हैं। अतः निवेश बचत के बराबर है। $(I=S)$।

S और I दोनों ही $Y-C$ के बराबर है दूसरे शब्दों में $Y = C+I$ । यदि Y के स्थान पर $C+I$ लिखा जाये तो

$$\therefore S = (C + I) - C$$

$$\therefore I = (C + I) - C$$

$$\therefore S = I$$

बचत तथा निवेश की समानता को एक अन्य समीकरण के द्वारा भी व्यक्त किया जा सकता है।

$$\because Y = C+I$$

$$\because Y = C+S$$

$$\therefore C+I = C+S$$

$$\therefore I = S$$

इस प्रकार केन्स के अनुसार बचत और निवेश न केवल एक दूसरे के बराबर है बल्कि समरूप भी है। इस प्रकार की खाता सम्बन्धी समानता यह बात स्पष्ट करती है कि भले ही व्यक्तिगत दृष्टिकोण से बचत तथा निवेश असमान हो, किन्तु सारे देश के लिये यह सदा बराबर रहेगें। उदाहरणार्थ , यदि किसी समय उपभोग कम होने से बचत बढ़ जाती है तो बहुत सारा माल गोदामों में रखा रहेगा। चूँकि इस प्रकार के माल को भी निवेश में ही सम्मिलित किया जाता है, इसलिये इस माल को मिलाकर निवेश बचत के बराबर हो जायेगा।

बचत तथा निवेश की खाता सम्बन्धी समानता तो सदा रहेगी, परन्तु इनमें सदा संतुलन रहना आवश्यक नही है यह समानता तब भी रहती है। जब अर्थव्यवस्था सन्तुलन में नही होती और राष्ट्रीय आय में परिवर्तन होते रहते है इस प्रकार की परिभाषिक समानता जिसका सन्तुलन से कोई सम्बन्ध नही होता, व्यावहारिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण नही है।

बचत और निवेश की धारणाओं को प्रावैगिक स्वरूप देते हुये प्रो0 कीन्स ने बचत तथा निवेश की क्रियात्मक समानता का भी उल्लेख किया है । क्रियात्मक समानता सम्बन्धी व्याख्या उस प्रक्रिया का वर्णन करती है जिसके द्वारा बचत और निवेश की समानता स्थापित होती है प्रतिष्टित अर्थशास्त्रियों ने भी बचत तथा निवेश की क्रियात्मक समानता के विचार को स्वीकार किया था। परतु उनका विचार था कि यह समानता ब्याज दर में परिवर्तनों के द्वारा स्थापित होती है इसके विपरीत कीन्स ने यह बताया कि बचत एवं निवेश की समानता ब्याज दर से नही अपितु राष्ट्रीय आय में परिवर्तन से स्थापित होती है।

जैसा कि हम देख चुके है । बचत की मात्रा आय स्तर पर आश्रित होती है। $S = f(y)$ । दूसरी ओर स्वायत्त निवेश आय स्तर पर निर्भर नही करता है। उपभोग प्रवृत्ति अल्पकाल में स्थिर रहती है।इसीलिये बचत प्रवृत्ति में भी स्थिरता बनी रहती है। इसके विपरीत निवेश अस्थिर और अनिश्चित रहता है । क्योंकि यह भविष्य की आशंसाओं से प्रभावित होता है जो कि अनिश्चित होती है। निवेश की मात्रा में होने वाले परिवर्तन आय स्तर को प्रभावित करते है आय के विभिन्न स्तरों को बनाये रखने के लिये यहा आवश्यक है कि इन स्तरों पर होने वाली बचतों के ठीक बराबर मात्रा में निवेश किय जाये। बचत की अपेक्षा निवेश कम होने पर आय–स्तर में कमी होने लगती है और यहा क्रम तब तक चलता रहता है। जब तक कि बचत और निवेश एक दूसरे के बराबर नही हो जाते हैं इस प्रकार आय का सन्तुलन तभी प्राप्त किया जा सकता है जब बचत और निवेश की राशियाँ बराबर हो जाये। इसीलिये यह कहा जा सकता है कि आय के

विश्लेषण के लिये प्रो0 कीन्स की बचत तथा निवेश क्रियाऐं उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी मूल्य विश्लेषण में मार्शल द्वारा प्रतिपादित पूर्ति एवं मॉग वक्र रेखाचित्र में X अक्ष पर राष्ट्रीय आय तथा Y अक्ष पर बचत और निवेश दर्शाये गये है। I निवेश की वक्र रेखा है । यह X अक्ष के समानान्तर सीधी रेखा है। क्योंकि यह मान लिया गया है कि निवेश पर आय में परिवर्तनों का कोई प्रभाव नही पड़ता है। यदि आय के अतिरिक्त कुछ अन्य कारणों के प्रभाव में निवेश में वृद्धि हो जाती है। तो I'I' नयी निवेश रेखा होगी। SS बचत वक्र है जो यह दर्शाता है कि आय बढ़ने पर बचत भी बढ़ती है परन्तु बचत प्रवृत्ति स्थिर रहने के कारण बचत वक में कोई परिवर्तन नही किया जाता। निवेश तथा बचत वक्र E बिन्दु पर एक दूसरे को काटते हैं । इस बिन्दु पर बचत निवेश के बराबर (S=I) है। तथा आय OY के बराबर हैं निवेश – वक्र I'I' हो जाने पर अब संतुलन E_1 बिन्दु पर स्थापित होता है। जहॉं निवेश तथा बचत में पुनः समानता हो जाती है और आय OY_1 के बराबर हो जाती है। इस प्रकार आय के सन्तुलन में परिवर्तन होने पर भी आय के विभिन्न स्तरों पर S=I की स्थिति बनी रहती है । सन्तुलन की स्थापाना के लिये S=I की स्थिति होना एक आवश्यक शर्त है।

आय और बचत में समानता आय मे परिवर्तनों के द्वारा प्राप्त की जाती है। इस प्रकार केन्स ने यह स्पष्ट करने का प्रसास किया है कि संतुलन स्थापित करने वाला तत्व ब्याज दर नही अपितु आय–स्तर है। प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों द्वारा इस प्रकार के सन्तुलन की कल्पना पूर्ण रोजगार के स्तर पर की गयी थी, जबकि कीन्स ने यह माना हैकि पूर्ण रोजगार के नीचे के स्तर पर भी यह सन्तुलन प्राप्त किया जा सकता है।
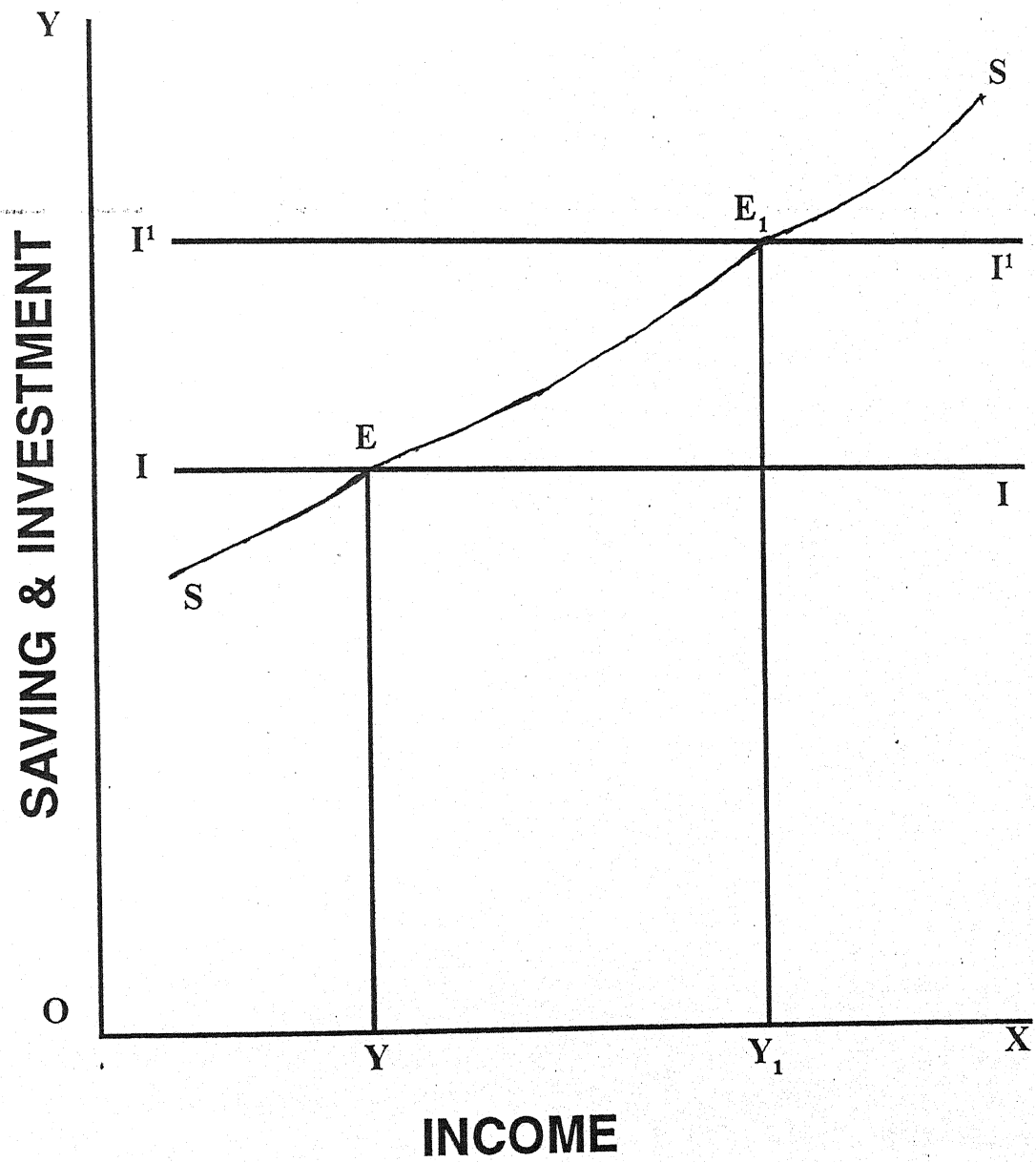
चित्र संख्या 3.6

रेखाचित्र 3.7 में आय (Y) बचत (S) और निवेश (I) का सम्बन्ध दर्शाया गया है। आय में वृद्धि के साथ साथ S और I वक्र वक्र रेचायें ऊपर की ओर उठती है OY आय स्तर पर S और I दोनों एक दूसरे के बराबर है, इसलिये अर्थव्यवस्था संतुलन में है। OY2 आय स्तर पर निवेश (I) बचत (S) से अधिक है। इससे आय बढ़ती जायेगी जिससे S और I का अन्तर कम होता जायेगा और संतुलन के बिन्दु पर समाप्त हो जायेगा। इसके बाद यदि बचत निवेश से अधिक हो जाती है। तो आय में कमी होगी और पुनः OY आय पर संतुलन स्थापित होगा। इस बिन्दु पर न केवल S और I के बीच समानता है बल्कि कुल मॉग फलन और कुल पूर्ति फलन भी संतुलन में है। इस बिन्दु पर S=I का अर्थ है। Y =C+I
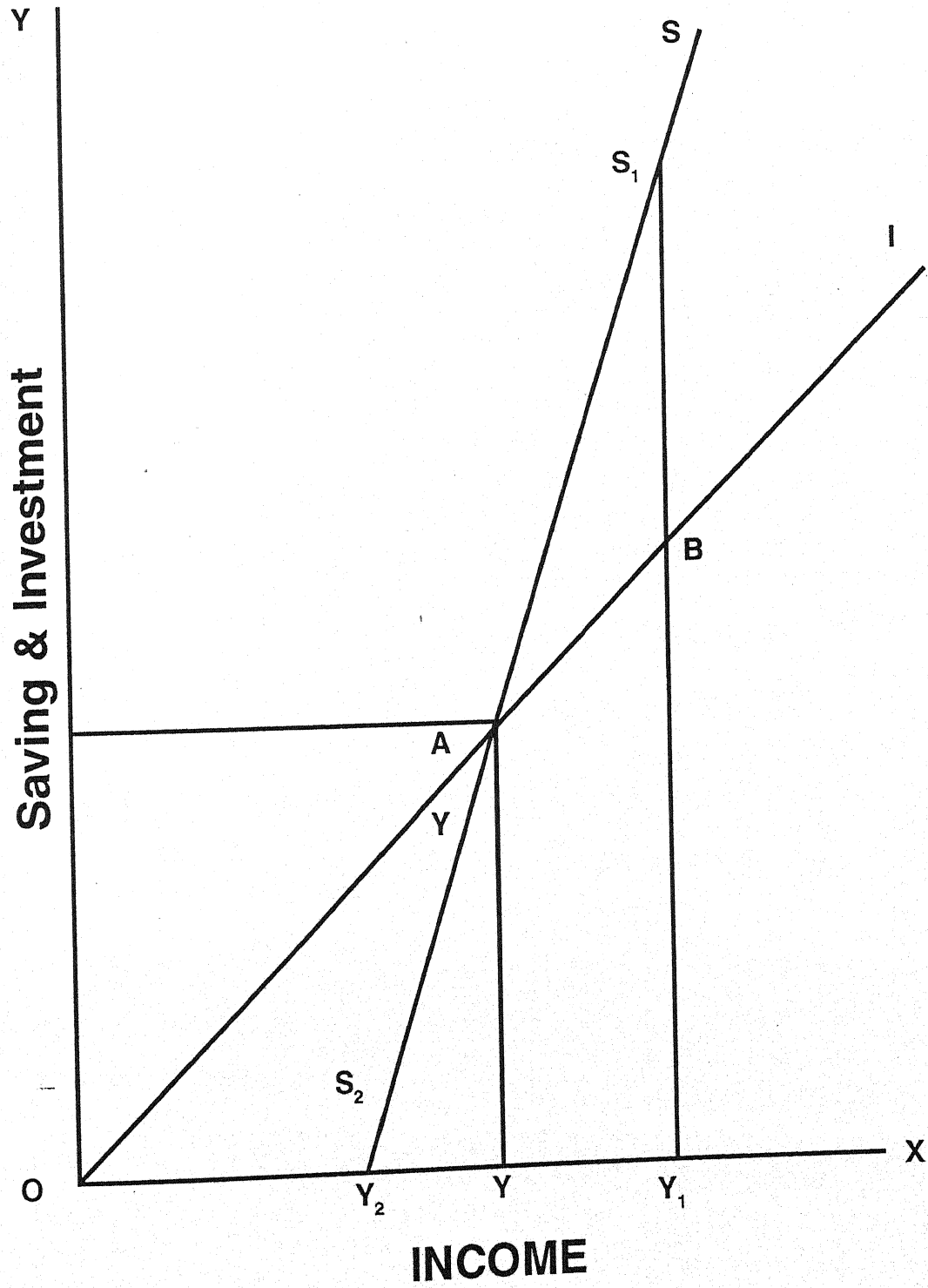
चित्र संख्या 3.7

3.14 व्यय एवं बचत में सन्तुलन :-

व्यवहारिक दृष्टिकोण से बचत आय पर निर्भर करती है। इस प्रकार बचत आय का एक धनात्मक स्वरूप है। उपभोग पर किये गये व्यय एवं बचत का योग ही आय है। अर्थात किसी वस्तु का उपभोग आय की मात्रा पर निर्भर करता है। क्योंकि उपभोक्ता के पास जितनी आय होगी उतनी ही वह व्यय करेगा।

माना कि उपभोक्ता की आय कम है तो उसका व्यय भी कम होगा। (क्योंकि आय पर व्यय आधारित होता है।) और वह कम वस्तुओं का उपभोग करेगा। और यदि उपभोक्ता की आय में वृद्धि कर दी जाय तो वह बढ़ी हुयी अतिरिक्त आय से अतिरिक्त वस्तुओं का उपभोग करेगा। और पहले की अपेक्षा उसके व्यय में वृद्धि हो जायेगी इस प्रकार जितना परिवर्तन आय में होता है। ठीक उतना ही परिवर्तन व्यय में भी होता है। अतः स्पष्ट है कि बचत आय एवं व्यय का अन्तर है अर्थात बचत का सीधा अर्थ उपभोग की जाने वाली वस्तुओं पर कम व्यय होता है। यदि बचत अधिक होती है तो व्यय करने के पश्चात बचत आय कितनी अधिक होती है। यह ज्ञात करने के लिये निम्न सूत्र का प्रयोग होगा।

$$S = Y - C \qquad \text{Or} \qquad S + C = Y$$

कुल आय बचत एवं उपभोग वस्तुओं पर किये गये कुल व्यय के बराबर होती है। अर्थात

$$Y = C+I$$

उपरोक्त व्याख्या व्यवहारिक दृष्टिकोण की थी परन्त सैद्धान्तिक दृष्टिकोण में बचत एवं विनियोग एक दूसरे के विरोधी है। तात्पर्य यह है कि जब व्यय उत्पन्न होता है तो बचत कम होती है। एवं जब बचत होती है व्यय में कमी उत्पन्न होती है।

उपभोग व्यय से बढ़ने से बचत में निरन्तर कमी होती है जैसे – आय बढ़ती है आय के अनुपात में उपभोग व्यय कम बढ़ने के कारण बचत अधिक बढ़ जाती है। इसलियये व्यय बचत के मध्य अन्तर उत्पन हो जाता है।

स्पष्ट है कि सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से व्यय एवं बचत एक दूसरे के विपरीत होती है।

अध्याय - चतुर्थ

वेतनाधारित व्यय संरचना

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. व्यय के समीकरण।
2. उपभोग फलन तथा बचत प्रवृत्ति।
3. व्यय संरचना के संगठक चर।
4. समस्याओं का समाधान।

अध्याय - चतुर्थ

शिक्षकों की वेतनाधारित व्यय संरचना

चाहे व्यष्टि आर्थिक विश्लेषण हो अथवा समष्टि आर्थिक विश्लेषण विभिन्न आर्थिक चरों में न केवल प्रत्यात्मक सम्बन्धों के एक तन्तु जाल का अध्ययन किया जाता है बल्कि उनके चरात्मक ढ़ाल का भी अध्ययन किया जाता है, और सम्पूर्ण क्रिया एवं ढ़ॉचे को संरचना कहा जाता है।

जहॉ तक व्यय संरचना के प्रत्यय का प्रश्न है इसकी संरचना व्यष्टि एवं समष्टि दोनों प्रकार की हो सकती है। लेकिन वस्तुतः यह शोध व्यष्टि प्रवृत्ति का है। अतः व्यय की संरचना से तात्पर्य व्यक्तिगत व्यय के विभिन्न प्रकारों के योगीकरण अथवा अध्ययन प्रयुक्त शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले सभी प्रकार के व्ययों के सकल ढ़ॉचे से है।

4.1 व्यय का समीकरण :-

शिक्षक अपनी मासिक आय का उपभोग विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के उपभोग मे व्यय करते है। उनके विभिन्न प्रकार के व्यय चरों का योगीकरण कुल व्यय संरचना का निर्माण करता है।

समय पश्चात के अध्ययन मे रखत हुये शिक्षकों की व्यय संरचना को एक समीकरण के रूप में निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जाता है।

$$Et = Et + Net + Edet + Vet + Met + Jet + Iet$$

जहॉ –

Et = एक समय बिन्दु पर सकल व्यय

Cet = सामान्य उपभोग व्यय

Net = परिपोषक व्यय

Edet = शिक्षा व्यय

Vet = मनोरंजन व्यय

Met = चिकित्सा व्यय

Jet = यात्रा व्यय

Iet = आकस्मिक लाभ प्रेरित बचत

उपरोक्त समीकरण से स्पष्ट है कि उपभोक्ता यथा शिक्षकों का एक समय बिन्दु पर किया गया सकल व्यय विभिन्न व्यय मदों का योग हैं।

4.2 उपभोग फलन तथा बचत प्रवृत्ति :-

आय के निर्धारण में उपभोग फलन बहुत महत्वपूर्ण है उपभोग को निर्धारित करने वाले अनेक कारक है। यथा आय (Y) कीमत संरचना (P) ब्याज दर (V) और न्यूनतम उपभोग स्तर (b) उपभोग फलन उपभोग और उसके निर्धारित करने वाले कारकों के मध्य फलनात्मक सम्बन्ध को व्यक्त करता है। फलन के रूप में इसे –

$$C = f(Y,P,V,b)$$

के रूप में लिखा जा सकता है। उपभोग व्यय मुख्य रूप से आय का फलन माना जाता है। इस आधारा पर उपभोग फलन को निम्नांकित रूप में व्यक्त किया जाता हैं।

$$C = f(Y)$$

इस सम्बन्ध में कीन्स द्वारा प्रकाशित " जनरल थ्योरी " में आय और उपभोग के

इस फलनात्मक सम्बन्ध को आधारभूत मनोवैज्ञानिक के रूप में दिखाया गया है। उपभोग फलन के सम्बन्ध में कीन्स ने कहा है कि आय बढ़ने के साथ उपभोग बढ़ता है और वृद्वि की प्रारम्भिक दशा उपभोग में वृद्धि सामान्यतः आय वृद्धि के बराबर होती है। आय कम होने पर उपभोग गिरता है पर यदि आय समाप्त हो जाये तो उपभोग समाप्त नही होगा। जैसे – जैसे आय बढ़ती जाती है उपभोक्ता अपने उपभोग व्यय को बढ़ाता जाता है पर उपभोग में होने वाली वृद्धि (ΔC) तथा आय मे होने वाली वृद्धि (ΔY) से सदैव कम होती है।

इसे सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति कहते है यथा

$$C = b + cy$$

जहॉ C = सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति

C = उपभोग फलन

Y = आय

आय वृद्धि के साथ – साथ उपभोग में क्रमशः घटने की प्रवृत्ति के साथ कीन्स के इस फलन से यह स्पष्ट है कि आय वृद्धि में उपभोग की तुलना में बचत का भाग क्रमशः बढ़ता है। जिससे–

$$MPC + MPS = \Delta C/\Delta Y + \Delta S/\Delta Y = 1$$

इस कीन्सीय उपभोग फलन को चित्र द्वारा स्पष्ट किया गया हैं। चित्र से स्पष्ट है कि उपभोग रेखा OY अक्ष पर आय रेखा OX अक्ष पर प्रदर्शित है अतः साम्य रोजगार का स्तर OY होगा और आय के वृद्धि के साथ यह OY से बढ़कर OY1 हो ही जाता है।

तो परिवर्तित आय सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति BT होगी। चित्र में $BT/ET = \Delta C/\Delta y$ सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति को प्रकट करता है यदि मूल बिन्दु से B बिन्दु से मिलती हुयी एक रेखा खीचें तो वह रेखा MPC होगी SS रेखा बचत प्रवृत्ति को प्रकट करती है। OY / रोजगार / आय के स्तर पर बचत शून्य तत्पश्चात इससे ऊँचे आय स्तर पर धनात्मक है।
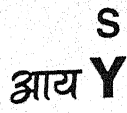
उपभोग फलन तथा बचत प्रवृत्ति

चित्र संख्या 4.1

4.2 (1) गुणक :-

कीन्सीय विनियोग गुणक उपभोग प्रवृत्ति से ही सम्बन्धित है यह वह अंग है जो कि अर्थव्यवस्था में MPC पर आधारित होकर तथा विनियोग पर क्रियाशील होकर आय को विनियोग की प्रारम्भिक मात्रा से कई गुना वृद्धि बढ़ा देता हैं चूँकि (4.1) चित्र में सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC)

$\Delta C/\Delta Y = BT/ET = 2/3$ हैं अतः इसके आधार पर गुणक (K) को निम्न रूप में दिखा सकते है।

$$K = 1/1\text{-}MPC = 1/1 - \Delta C/\Delta Y = 1/1\text{-}2/3 = 3$$

K को MPS के रूप में दिखाया जा सकता है अतः

$$MPC + MPS = \Delta C/\Delta Y + \Delta S/\Delta Y = 1$$

अतः $MPS = \Delta S/\Delta Y = 1\text{- } MPC\ (\Delta C/\Delta Y)$

अतः $1/MPS = 1/\Delta S/\Delta Y = 1/S$

इस तरह यह स्पष्ट है कि गुणक सीमान्त बचत प्रवृत्ति (MPS) का व्युत्क्रम होता है। क्योंकि

$$1/MPS = 1/\Delta S/\Delta Y = 1/D = 1/1\text{-}\Delta C/\Delta Y$$

अब प्रश्न यह है कि यदि गुणक बराबर है तो $K=1/1-\Delta C/\Delta Y = 1/\Delta S/\Delta Y$ यह दिखाना आवश्यक होगा कि यह निष्कर्ष कैसे प्राप्त हुआ इसे हम सूत्र के आधार पर निम्न रूप से ज्ञात कर सकते हैं–

कीन्स की आधार भूत मनोवैज्ञानिक नियम को मानते हुये यह माना जा सकता

है। कि उपभोग वृद्धि सदैव आय वृद्धि (U) से कम होती है और इसलिये MPC(C/Y) सदैव धनात्मक तथा 1 से कम रहती है यदि इसे 1/K के बराबर माने कि यह एक से कम है तो हम यह कह सकते है कि :–

C/U + 1-1/K

(K गुणक है और वह 1 के बराबर या उससे अधिक है)

चूँकि Y= DC+DI

अतः DC = DY - DI

या DC/DY = DI /DY (त्रिभुज से दोनों पक्षों पर भाग देने पर)

DC/DY =1 - DI/DY =1=/K

या DC/DY = DI/Dy = 1/K

या DI/Dy = i/K

DY = KDI (त्रियक गुणनफल से)

अतः K = DY / DI

चूँकि DI + DY - DC (क्योंकि DY = DC+DI)

अतः I के स्थान पर DY - DC रखने पर

K= DY/DY - DC

या DY/DY (अंश व हर से दोनों ओर Y से भाग देने पर)

K= 1/1 - DC/Dy

या K = 1/1 -C (C= Dc/DY)

K= 1/S

इस प्रकार स्पष्ट है कि गुणक सीमान्त बचत प्रकृत्ति का व्युत्क्रम है ।

4.3 व्यय संरचना के संगठक चरों का स्पष्टीकरण :-

प्राथमिक शिक्षकों का व्यय निम्नांकित संगठन चरों पर आधारित है। यथा

1. उपभोग व्यय
2. परिपोषक व्यय
3. शिक्षा परक व्यय
4. चिकित्सा व्यय
5. मनोरंजन व्यय
6. निजी वाहन व्यय
7. आकस्मिक लाभ प्रेरित बचत व्यय

उपरोक्त शिक्षकों के व्यय संगठन अंगों का अध्ययन निम्न तालिका द्वारा निम्नवत प्रस्तुत है।

1. उपभोग व्यय :-

बांदा के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का उपभोग व्यय उपभोग की जाने वाली वस्तुओं पर आधारित है। शिक्षकों के द्वारा उपभोग की जाने वाली सामान्य उपभाग की वस्तुओं की सारणी संख्या 4.2 एवं चित्र 4.2 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी संख्या 4.2

शिक्षकों के सामान्य उपभोग की वस्तुऐं

सामान्य उपभोग	प्रतिदर्श संख्या
गेंहूँ	100 (100)
दालें	100 (100)
चावल	100 (100)
सब्जी	100 (100)
मसाले	100 (100)
दूध	100 (100)
चाय	75 (100)
मक्खन	50 (100)
फल	40 (75)
अण्डा	20 (40)
ईंधन	20 (40)
मेवे	10 (20)
मांस	9 (18)
कॉफी	8 (15)
मछली	8 (15)

टिप्पणी :-

छोटे कोष्ठक में प्रदर्शित सम्बन्धित प्रतिदर्श संख्या का प्रतिदर्श दर्शाती है।

सारणी संख्या 4.2 में प्रदर्शित किया गया है कि शिक्षकों के द्वारा 13 सामान्य उपभोग की वस्तुओं का उपभोग किया जाता हैं।

प्राथमिक शिक्षकों के सामान्य उपभोग की वस्तुएं
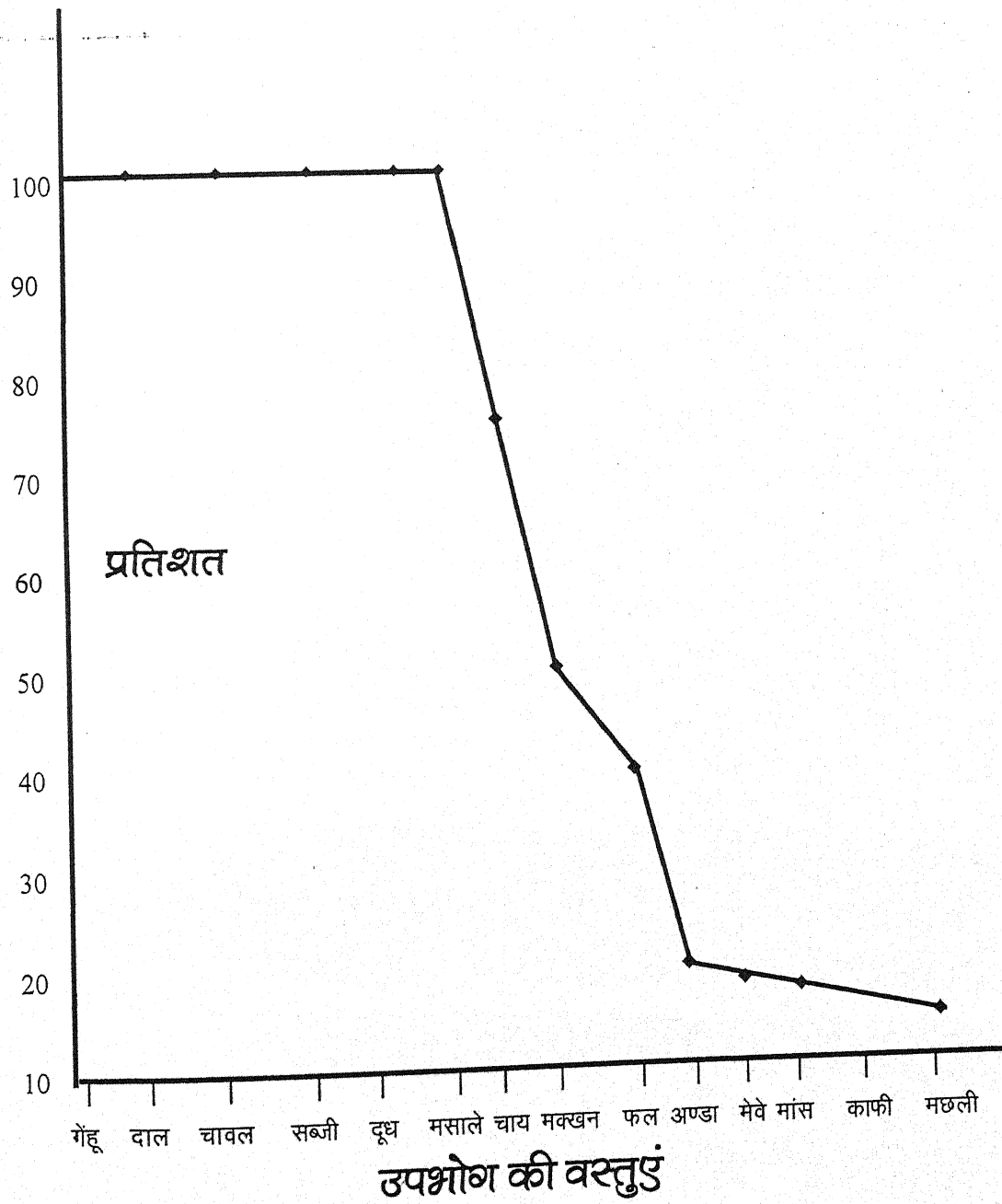
चित्र संख्या 4.2

गेहूँ, दाल, चावल, सब्जी, मसाले, दूध, चाय, आदि वस्तुओं का सर्वाधिक प्रयोग शिक्षकों द्वारा किया जाता है। अण्डा , मेवे, मछली जैसे पोष्टिक भोज्य पदार्थों का उपयोग क्रमशः 40 प्रतिशत, 20 प्रतिशत, 18 प्रतिशत, और 15 प्रतिशत शिक्षक ही करता है।

सारणी संख्या - 4 .2-1

सामान्य उपभोग व्यय

व्यय वर्ग रु0 में	प्रतिदर्श संख्या
1500 – 2000	02 (04–00)
2000–2500	08 (16–00)
2500–4000	10 (20–00)
4000–5500	12 (25–00)
5500–6000	18 (36–00)
समग्र योग	50 (100–00)

स्त्रोत साक्षात्कार अनुसूची

टिप्पणी :–

छोटे कोष्ठक में प्रदर्शित संख्या प्रतिदर्श को प्रकट करतीहै सारणी संख्या 4.2–1 प्रदर्शित कती है। कि 36 प्रतिशत शिक्षक 6000 रु, 24 प्रतिशत शिक्षक 5500 रु0 , 20 प्रतिशत शिक्षक 4000 रु0 16 प्रतिशत शिक्षक 2500 रु0 4 प्रतिशत शिक्षक 2000 तक

सामान्य उपभोग व्यय करते है। स्पष्ट है कि शिक्षक उपनी आयका एक बहुत बड़ा भाग सामान्य उपभोग में व्यय करते है।

परिपोषक व्यय :-

शिक्षकों द्वरा परिपोषक व्यय को सारणी 4(3) एवं चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी संख्या (3)

परिपोषक व्यय

व्यय वर्ष रू0	प्रतिदर्श संख्या
500 – 750	37 (74.00)
750 – 1000	10 (20.00)
1000 – 1500	01 (2.00)
1500 – 1750	02 (4.00)
समग्र योग	50(100.00)

स्त्रोत – साक्षात्कार सूची

टिप्पणी :–

1. परिपोषक व्यय के अन्तर्गत किराया आन्तिरिक साज सज्जा व्यय सम्मिलित हैं ।

2. छोटे कोष्ठक में प्रदर्शित संख्या सम्बन्धि प्रतिदर्श संख्या का औसत हैं।

सारणी में 100 में से 74 प्रतिशत शिक्षक परिपोषक व्यय 500 रु0 तक करते हैं 20 प्रतिशत शिक्षक 750 से 1000 रु0 परिपोषक व्यय करते है। इसी प्रकार 2 प्रतिशत

शिक्षक 1000 रु0 1500 के मध्य व्यय करते है।।

निष्कर्ष :–

500 – 750 रु0 के व्यय वर्ग में व्यय करने वाले शिक्षकें की संख्या का प्रतिशत अधिक है एवं 750 रु0 से 1000 रु0 के परिपोषक व्यय वर्ग में व्यय करने वाले शिक्षकों की संख्या का प्रतिशत अधिक है। एवं 1500 रु0 से 1750 रु0 के परिपोषक व्यय वर्ग में व्यय करनेवाले शिक्षकों का प्रतिशत अत्यधिक निम्न है।

शिक्षकों का वेतनाधारित व्यय

चित्र संख्या 4.3

परिपोषक उपभोग व्यय
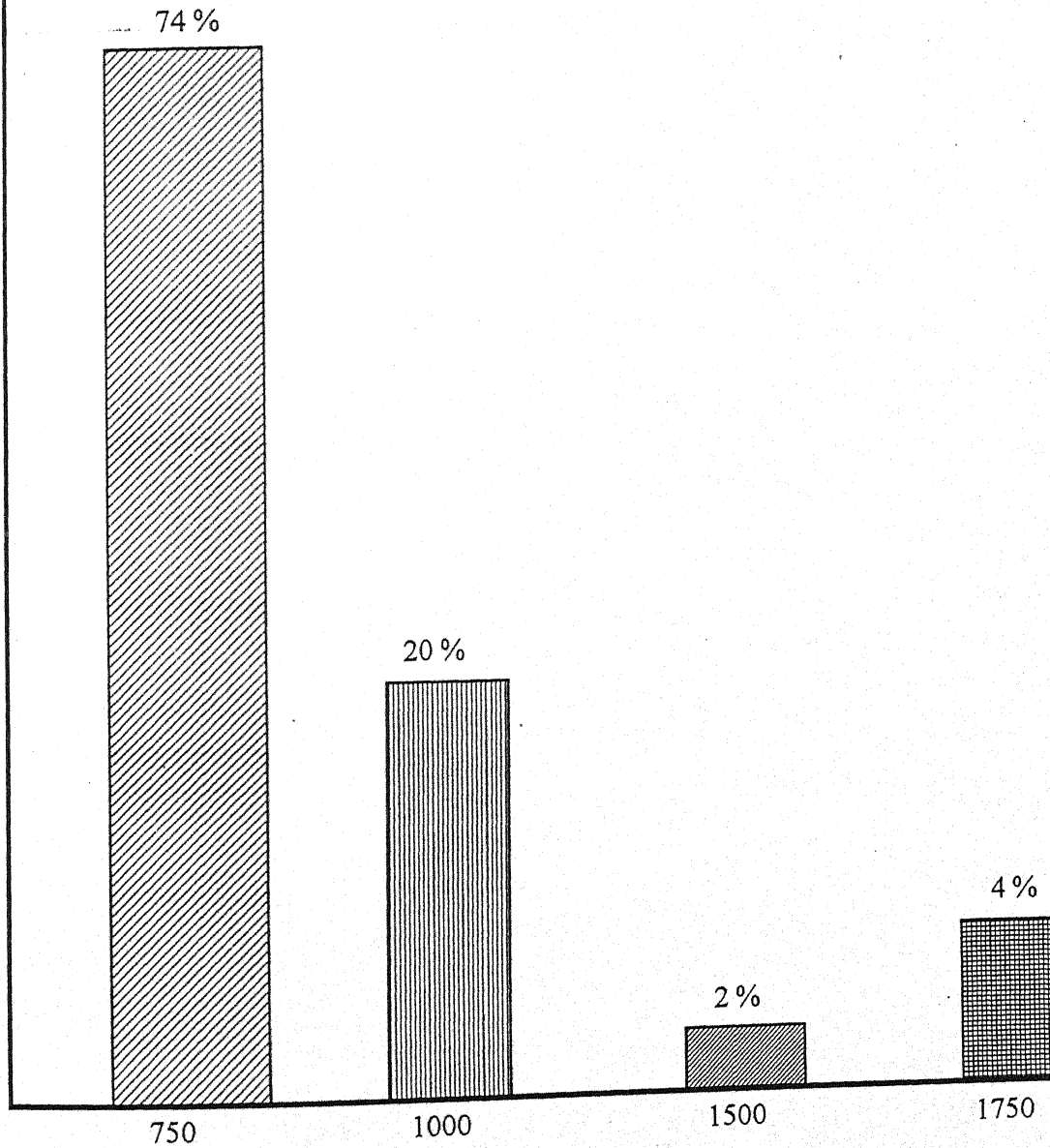
मासिक व्यय वर्ग (रू0)

चित्र संख्या 4.3

सारणी संख्या 4(4)

शिक्षा परक (पत्र पत्रिकाओं पर व्यय)

शिक्षा व्यय वर्ग रू0 में	प्रतिदर्श संख्या
0 – 50	8 (16.00)
50 – 100	1 (2.00)
100 – 150	12 (24.00)
150 – 250	29 (58.00)
समग्र योग	50 (100.00)

स्त्रोत – साक्षात्कार अनुसूची

टिप्पणी :–

बांदा में कार्यरत शिक्षकों का शिक्षा सम्बन्धी व्यय सारणी संख्या 4(4) में दर्शाया गया है सारणी द्वारा स्पष्ट है कि 0 –50 तक के वर्ग 16 प्रतिशत शिक्षक, 2 प्रतिशत शिक्षक 50 – 100, 24 प्रतिशत शिक्षक 100 –150तक, 58 प्रतिशत शिक्षक 150 –250 के मध्य शिक्षा पर व्यय करते हैं।

यह उल्लेखनीय है कि शिक्षा वर्तमान समय में जीवन का एक आवश्यक एवं अनिवार्य अंग हैं शिक्षक शिक्षा पर अत्याधिक व्यय करती हैं। 100 प्रतिशत शिक्षक शिक्षा सम्बन्धी अत्याधिक व्यय करते है।

शिक्षकों की वेतनाधारित बच्चों की शिक्षापरक एवं पत्रिकाओं पर व्यय
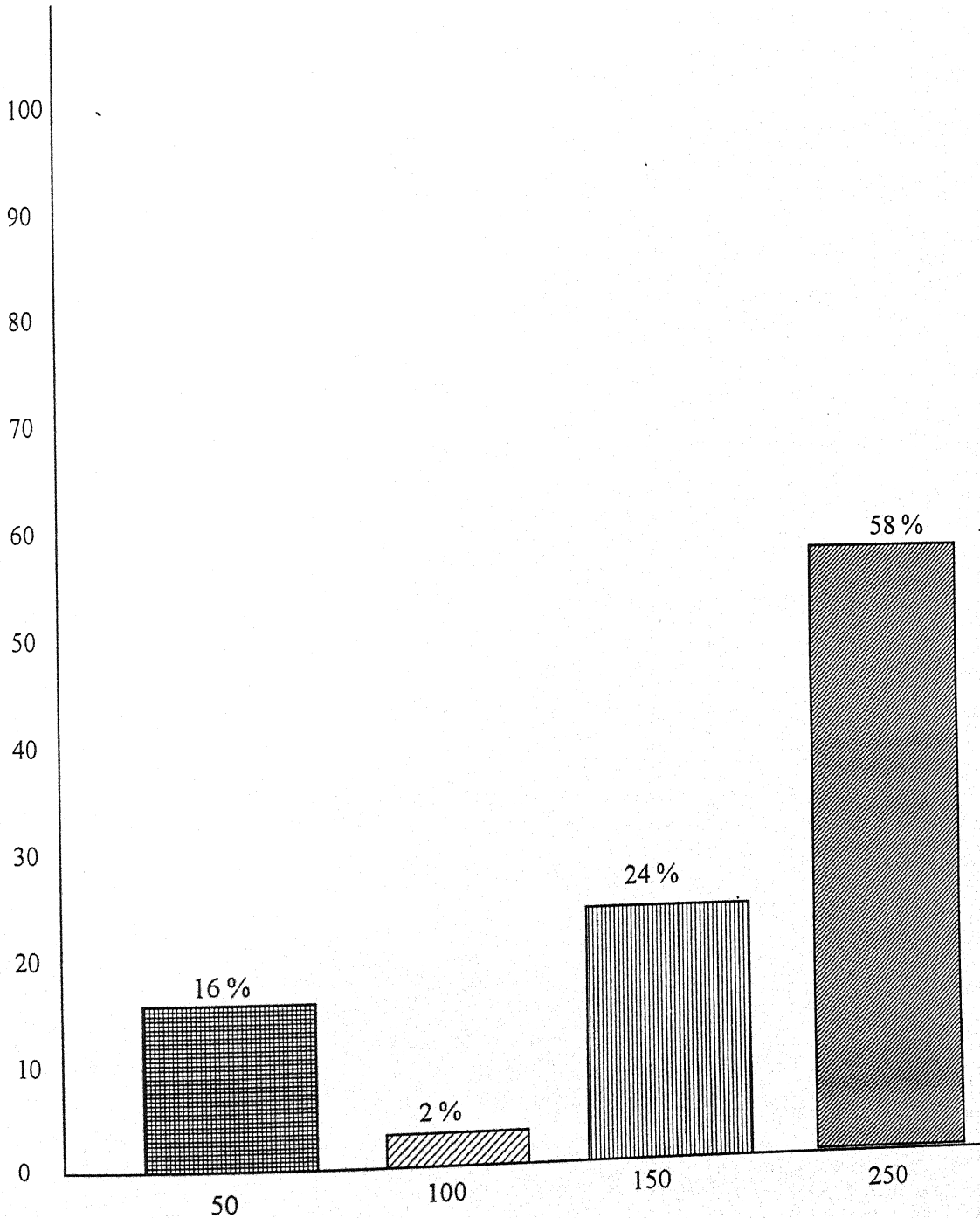
(प्रतिदर्श संख्या प्रतिशत में)

चित्र संख्या 4.4

सारणी संख्या 4(5)

चिकित्सा व्यय

व्यय वर्ग रूपये	प्रतिदर्श संख्या
50 – 100	0 (0.00)
100 – 200	4 (8.00)
200 – 300	30 (60.00)
300 – 400	16 (32.00)
समग्र योग	50 – (100)

स्त्रोत साक्षात्कार अनुसूची

टिप्पणी :–

यह सारणी प्रदर्शित करती है कि 50 – 100 रूपये तक 8 प्रतिशत शिक्षक, 100 से 200 रू0 तक 60 प्रतिशत शिक्षक, 200 से 300 रू0 तक 60 प्रतिशत शिक्षक चिकित्सा सम्बन्धी व्यय करते हैं निष्कर्षतः 50 प्रतिशत शिक्षक चिकित्सा पर बहुत कम मासिक व्यय करते है।

चित्र संख्या 4.5
शिक्षकों की वेतनाधारित चिकित्सा परक व्यय
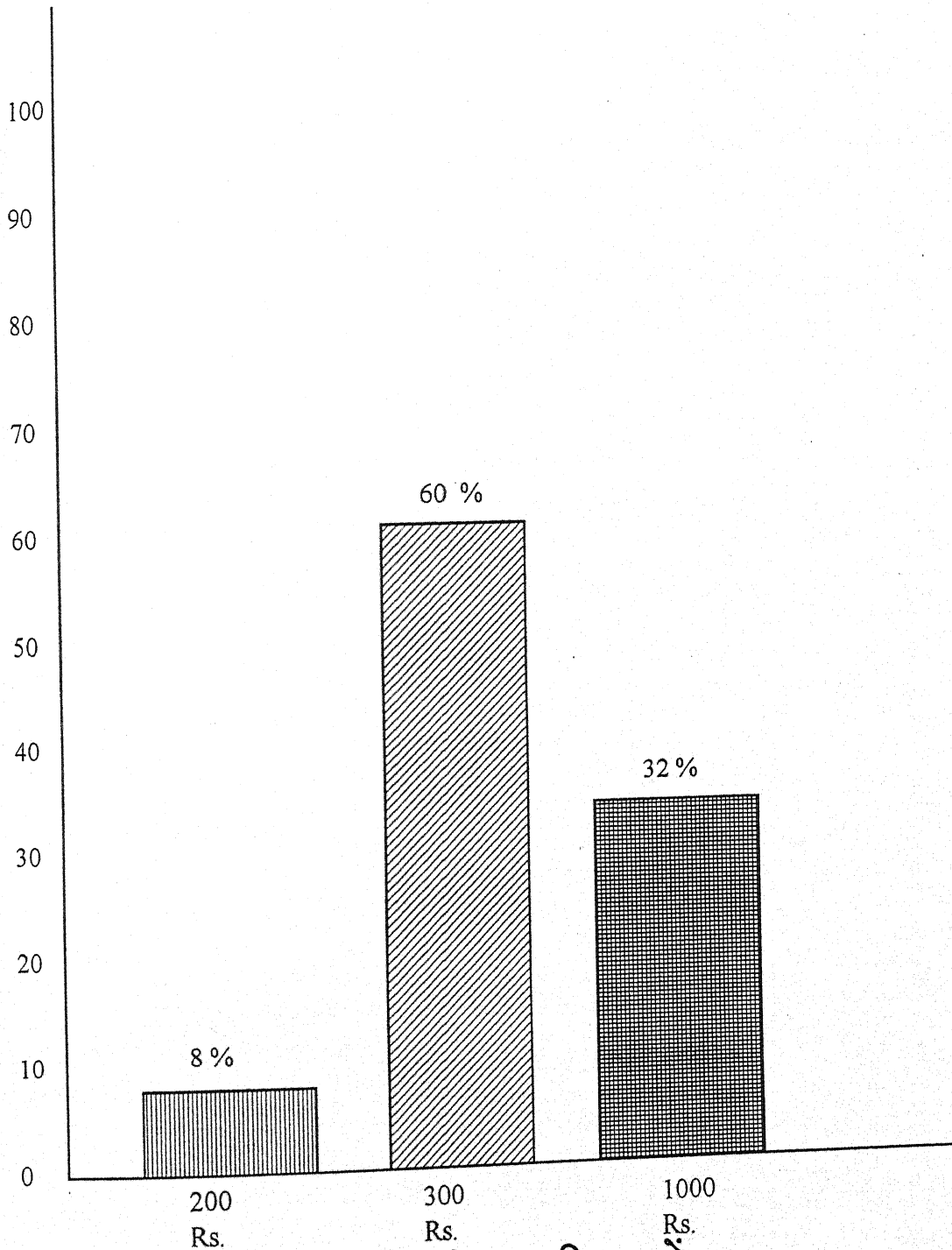
मनोरंजन व्यय :-

वर्तमान समय में शिक्षकों की आय यद्यपि इतनी है कि वह अपनी इच्छानुसार मनोरंजन व्ययकर सकते है परन्तु शिक्षण कार्य में व्यस्त होने के कारण उनका मनोरंजन व्यय अत्यधिक कम होता है इसलिये मनोरंजन के साधनों पर व्यय की जाने वाली राशि सामन्य स्तर की हैं औरयह भी सत्य है कि कुछ शिक्षक मनोरंजन व्यय नहीं करते है इस को सारणी संख्या 4 (6) एवं चित्र संख्या 4 (6) में दर्शाया गया है।

सारणी संख्या 4 (6)

शिक्षकों का मनोरंजन व्यय :-

व्यय वर्ग रू0 में	प्रतिदर्श संख्या
0—50	14 (28.00)
50 — 100	6 (12.00)
100 — 150	2 (4.00)
150 — 200	2 (4.00)
200 — 250	21 (42.00)
समग्र योग	50 (90.00)

स्त्रोत साक्षात्कार सूची :—

टिप्पणी :—

मनोरंजन व्यय के अन्तर्गत चलचित्र साधन पिकनिक पार्टी आदि सम्मिलित है। 10 प्रतिशत शिक्षक मनोरंजन व्यय नही करते है। सारणी द्वारा स्पष्टीकरण किया गया

है कि विभिन्न वर्गो में 90 प्रतिशत तो मनोरंजन व्यय करते है। अतः स्पष्ट है कि शिक्षकों

का व्यय औसत स्तर का है।

प्राथमिक शिक्षकों का वेतनाधारित मनोरंजन व्यय
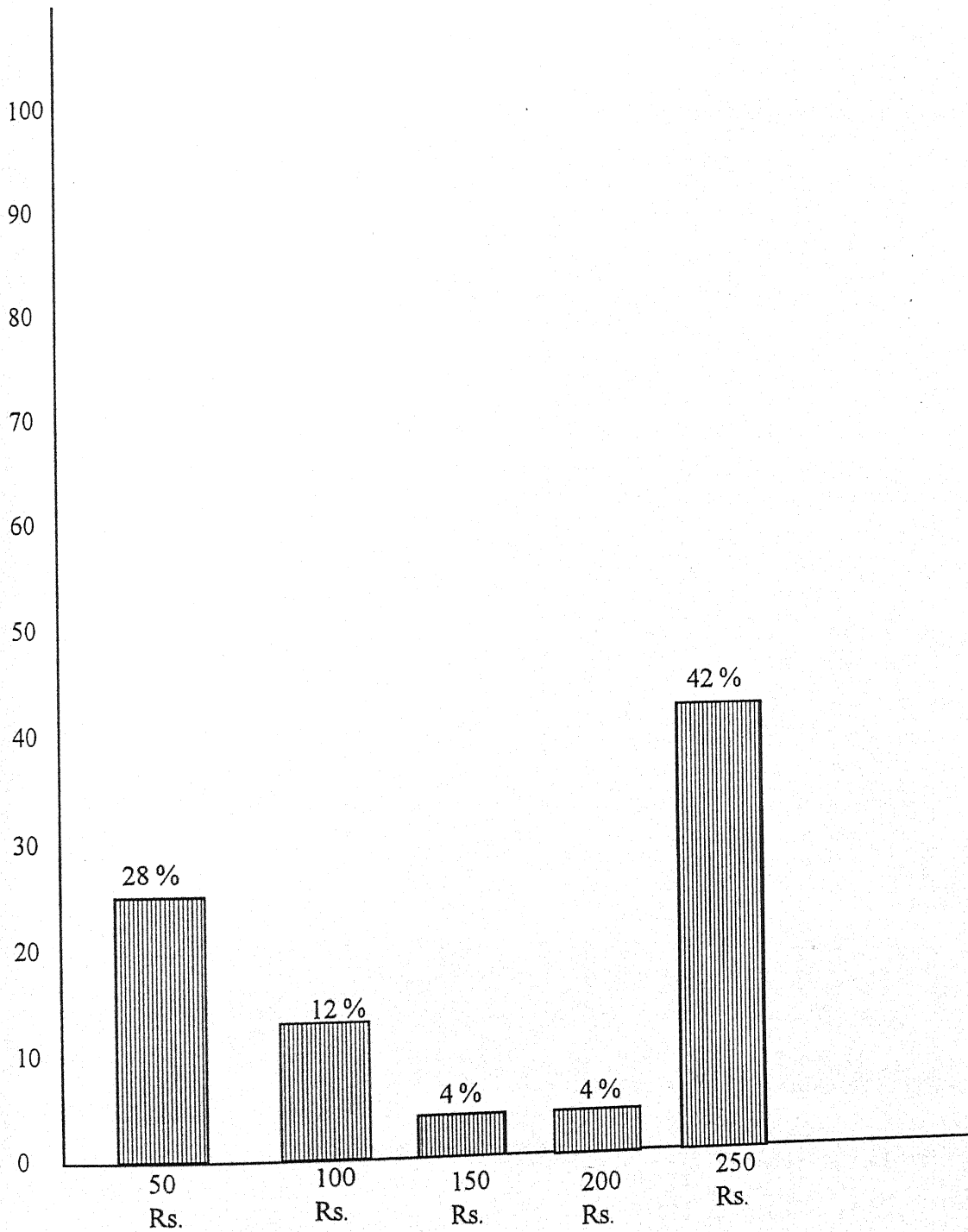
(प्रतिदर्श संख्या प्रतिशत में)

चित्र संख्या 4.6

6. निजी वाहनों का प्रयोग व्यय :-

सर्वेक्षण द्वारा यह ज्ञात हुआ कि शिक्षकों के द्वारा निजी वाहन में स्कूटर, मोटर साइकिल एवं कुछ शिक्षके के द्वारा कार का भी प्रयोग किया जाता है वाहन की मरम्मत में शिक्षकों के द्वारा किये जाने वाले व्यय को सारणी 4 (7) की वर्गीकृत किया गया है।

सारणी संख्या 4 (7)

निजी वाहन प्रयोग व्यय

व्यय वर्ग रू0 में	प्रतिदर्श संख्या
200 – 400	5 (10)
400 – 500	3 (6)
500 – 600	5 (10)
समग्र योग	13 (26)

स्त्रोत साक्षात्कार सूची –

टिप्पणी :-

सारणी में शिक्षक के सम्पूर्ण प्रतिदर्श संख्या में 10 प्रतिशत शिक्षक 200 – 400, 6 प्रतिशत शिक्षक 400 – 500 तक, 10 प्रतिशत शिक्षक 500 – 600 तक व्यय करते है। निजी वाहन प्रयोग व्ययके अन्तर्गत शिक्षकों का व्यय अति निम्न स्तर का है।

चित्र संख्या 4.7

प्राथमिक शिक्षकों का वेतनाधारित निजीवाहन प्रयोग व्यय
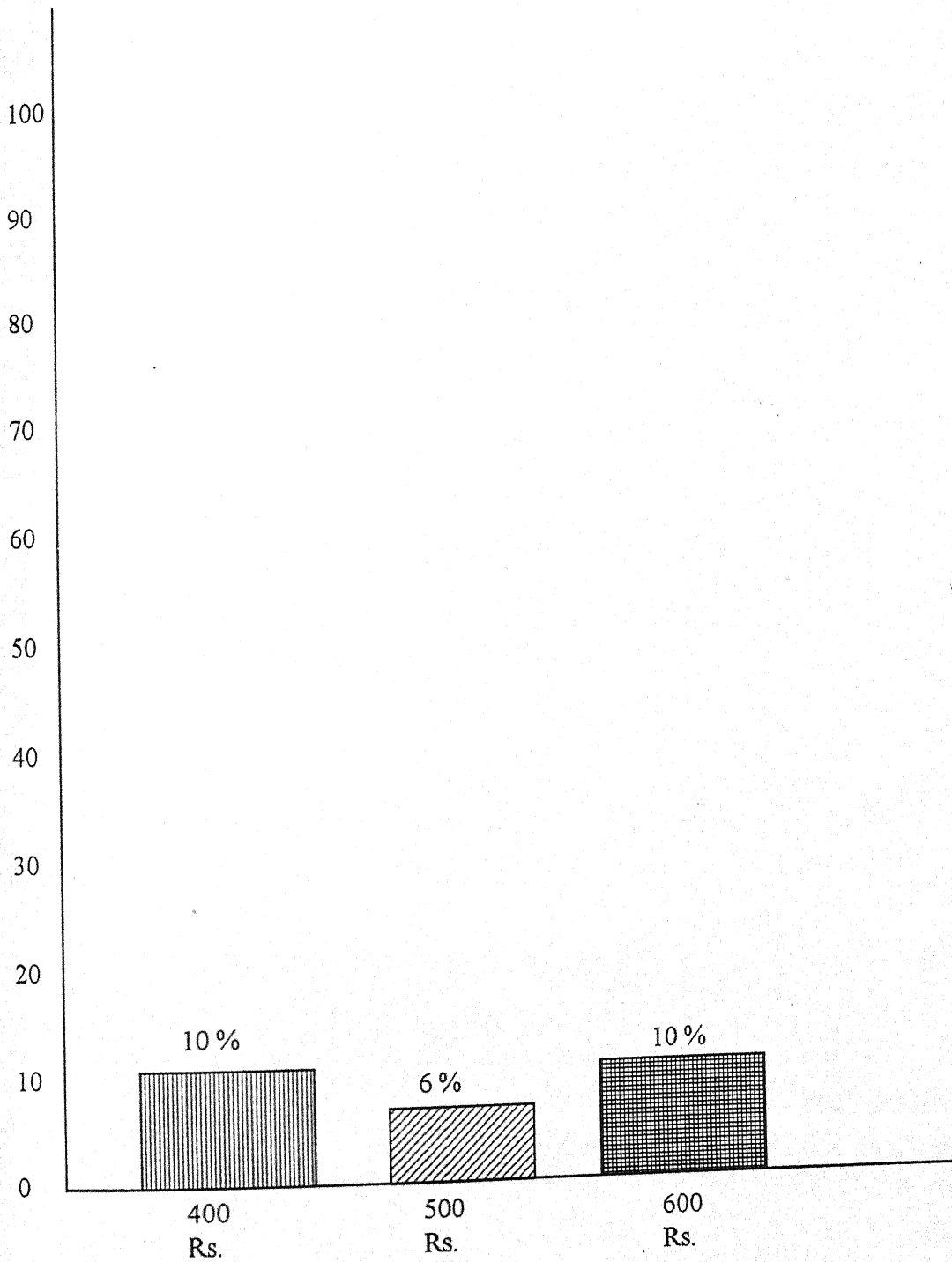
(प्रतिदर्श संख्या प्रतिशत में)

7. आकस्मिक लाभ प्रेरित बचत व्यय :-

प्राथमिक शिक्षक अपनी आय का कोई भी भाग आकस्मिक लाभ हेतु व्यय नही करते हैं क्योंकि इस प्रकार के व्यय में किये गये व्यय की अधिकांशतः हानि होने की सम्भावना होती है अर्थात व्ययका दुरूपयोग होता है और आकस्मिक लाभ अधिकाशंतः न के बराबर ही होता हैं

शिक्षक अपनी आय का व्यय वितरण बहुत महत्वपूर्ण आवश्यक कार्यो में ही करते है और उनकी आय इतनी अतिरिक्ति नही होती है कि वह अन्य आवश्यक कार्या में व्यय कर सकें ।

समस्याओं का अध्ययन एवं समाधान :-

1. शिक्षण कार्य करने के घंटे स्वास्थ्य के प्रति अनुकूल नही होते इस समस्या पर सौ में से 10 प्रतिशत सहमत, 10 प्रतिशत सामान्य है। एवं 80 प्रतिशत लोग इस पर असहमति से अपने विचार व्यक्त करते है।

2. प्रायः शिक्षकों की समस्या रहती है कि उनके शिक्षण काल के समय सरलता पूर्वक अवकाश का समय नही मिलता इस समस्या पर 12 प्रतिशत लोग अपनी सहमति व्यक्त करते है। 22 प्रतिशत शिक्षक वर्तमान में कम वेतन मिलने की शिकयत व्यक्त करते हैं। वह कहते है कि वर्तमान मे महगाई अपने सर्वोच्चतम बिन्दु पर स्थापित है इस महँगाई से सामना करने के लिये उनके वेतनों में वृद्धि की आवश्यकता है।

3. प्रायः शिक्षकों को स्थानान्तरण की असुविधा के कारण एक जगह रूकने

का समय ही नही मिल पाता है ताकि वह अपने जीवन की सुचारू रूप से व्यतीत कर सके इसलिये यह जरूरी है कि जितना हो सके तो शिक्षकों का स्थानान्तरण कम से कम हो शिक्षण कार्य करते समय प्रायः शिक्षकों को राजनैतिक दबाओं का सामना करना पड़ता है शिक्षा में राजनैतिक क्षेत्र का दबाव कम से कम होना चाहियें। क्योंकि इस दबाव के कारण शिक्षकों को उत्तम शिष्यों की जगह बुरे बरताव करने वाले शिष्यों का सामना करना पड़ता है।

4. शिक्षकों का मानना है कि ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षण कार्य करना अत्यधिक कठिन एवं चिन्तापूर्ण है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र में पहुँचना एवं निरन्तर शिक्षा कार्य को क्रियाशील बनाना अत्यधिक कठिन कार्य है।

पंचम अध्याय

शिक्षकों की बचत संरचना

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. बचत संरचना के माँगों की विवेचना।
2. शिक्षकों की बचत की प्रतिनियमितता।
3. बचत के कारण।
4. बचत के स्त्रोत।
5. बचत के प्रति प्रतिउत्तर।
6. औसत मासिक बचत।

शिक्षकों की बचत संरचना

व्यय की तरह बचत भी समष्टि भावी चर है और केन्जियन प्रणाली में विनियोग, आय एवं रोजगार सृजन में इसकी विशिष्ट भूमिका है । लेकिन व्यष्टि स्तर पर इसकी निष्पादनात्मक भूमिका है । क्योंकि व्यक्ति अपनी आय का कुछ हिस्सा मुद्रा के रूप में अपने पास शेष कर लेता है । अर्थात व्यक्ति मुद्रा की मांग अपने पास रखने के लिये करता है । इस सम्बन्ध में कैम्ब्रिज विचारधारा के अनुसार – मुद्रा की मांग आय का वह अनुपात है जिसे लोग नकद रूप में अपने पास रखने की मांग करते है । अर्थात मुद्रा की मांग (बचत के रूप में) व्यवसायिक लेन–देन व्यय करने के लिये नहीं वरन तरल रूप में बचत अपने पास रखने से है ।

मुद्रा की मांग को K द्वारा तथा वास्तविक आय को R के द्वारा प्रदर्शित किया गया है ।

मार्शल के अनुसार – $M = f = (KR)$

पीगू के अनुसार – $P = M/KY$

राबर्टसन के अनुसार – $P = M/KT$

व्यय की भांति बचत की भी संरचना होती है क्योंकि इसके कई संगठन चर सम्भव है । अपने ढांचेगत प्रारूप के अन्तर्गत विशिष्ट प्रकार की बचतें जैसे इच्छित बचत वास्तविक बचत, बलात बचत नवोन्मेषित बचत और आकस्मिक बचत योगात्मक बचत संरचना का निर्माण करती है ।

बचत संरचना के अंगों की विवेचना :-

प्राथमिक शिक्षक एक वेतनबद्ध कर्मचारी के रूप में प्रशिक्षण कार्य करते है । इस

प्रशिक्षण कार्य हेतु उन्हें प्रतिमाह वेतन के रूप में आय प्राप्त होती है । इसलिये प्राथमिक शिक्षकों को वेतनभोगी कर्मचारी कहा जा सकता है । अतः इनकी आय समयबद्ध होती है । अर्थात उन्हें प्रतिमाह एक निश्चित तारीख को आय प्राप्त होती है । वह अपनी आय का कुछ हिस्सा अपनी आवश्यक वस्तुओं के क्रय–विक्रय पर व्यय कर देते है । और कुछ हिस्सा बचाकर रखते है । जिसे हम बचत कहते है । इनके अपने विभिन्न अंग होते है । जिनकी व्याख्या निम्नवत है ।

आकस्मिक बचत :-

आकस्मिक बचत वे बचतें है । जो अचानक लाभ पर निर्भर करती है । अर्थत जब हमें अचानक मुद्रा प्राप्त हो जाये जिसकी हमें आशा न हो वह अचानक प्राप्त हुई मुद्रा बचत के रूप में हो जायेगी जिसे हम आकस्मिक बचत कहेंगे जैसे किसी पार्टी या ईनाम प्राप्ति के पश्चात आकस्मिक लाभ प्रेरित बचत हो जाती है । परन्तु अन्य प्रकार से प्राप्त आय आकस्मिक लाभ से उद्भूत होने वाली आकस्मिक बचत अनिश्चितता पर निर्भर करती है । इस प्रकार से शिक्षकों द्वारा सभी प्रकार की बचत की जाती है । परन्तु इस प्रकार की बचतों का स्तर अत्यन्त निम्न प्रकार का है ।

इच्छित बचत :-

प्राथमिक शिक्षक इच्छित बचत करने में असमर्थ होतें है । तथा अपनी मासिक आय से जो भी अनुमानित बचत करने की आशा करते है , लेकिन कर नहीं पाते है । प्राथमिक शिक्षक ऐसी परिस्थितियों में बचत के प्रति नियमित हो जाते है । जो प्राथमिक शिक्षक बचत नहीं कर पाते है । वह संख्या में अत्यन्त निम्न है ।

बचत के प्रति प्राथमिक शिक्षकों की नियमितता -

सारणी संख्या – 5.1

बचत नियमितता प्रतिउत्तर	प्रतिदर्श संख्या
1	2
हाँ	48 (96.00)
नहीं	2 (4.00)
समग्र योग	50– 100.00

प्राथमिक शिक्षकों की वेतनाधारित बचत के प्रति नियमितता
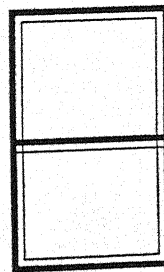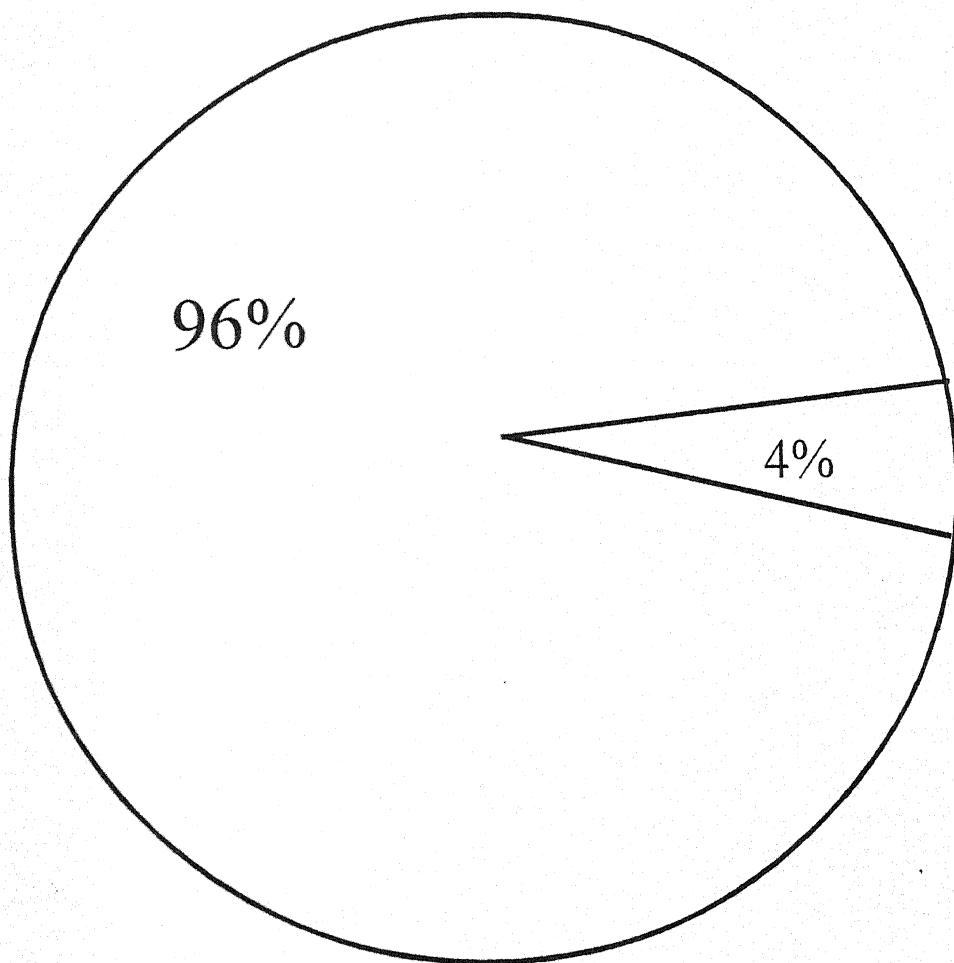
चित्र संख्या 5.1

प्राथमिक शिक्षकों की बचत के कारण :-

सारणी संख्या 5.2

महत्वपूर्ण कारण	प्रतिदर्श संख्या
आदतवश	00 (00.00)
आवश्यक समझकर	25 (50.00)
भविष्य के लिये	17 (34.00)
आकस्मिक कार्यवश	6 (12.00)
कम आय की वजह से	2 (4.00)
समग्र योग	50(100.00)

सारणी से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक शिक्षक 50 में से 25 लोग आवश्यक समझकर बचत करते है । इसी प्रकार कुछ शिक्षक 50 में से 17 भविष्य के लिये बचत करते है । और कुछ शिक्षक 50 में से 6 आकस्मिक कार्यवश बचत करते है एवं 50 में से 2 कम आय की वजह से बचत करना अनिवार्य समझते है ।

प्राथमिक शिक्षकों की वेतनाधारित बचत के कारण
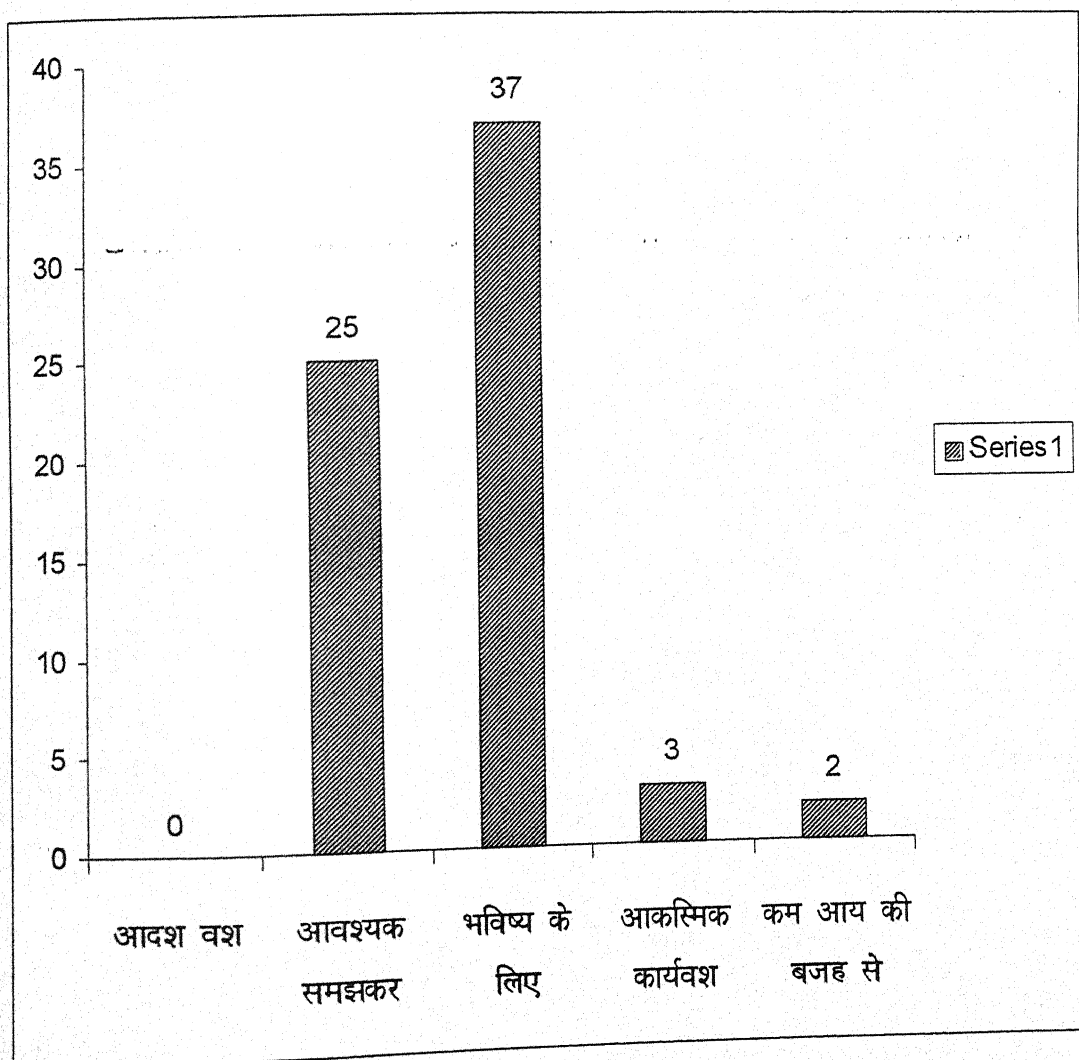
चित्र संख्या 5.2

ऐसी स्थिति में वस्तुतः प्राथमिक शिक्षकों के सन्दर्भ में बलात बचत ही प्रमुख स्थान रखती है । और पूर्व वर्णित अन्य प्रकार की बचतें सहायक बचत के रूप में होती है ।

बलात बचत :-

स्फीतिक दशाओं के अन्तर्गत बढ़ती हुई कीमतों के कारण जब शिक्षकों की आय में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता है तब वे अपनी अवश्यकताओं उपभोग व्यय तथा अन्य प्रकार के व्ययों में कमी करके बलात रूपी बचत करते है । यदि उनकी आय का स्तर कीमतों की वृद्धि के साथ–साथ उससे अधिक अनुपात में बढ़ता है । तो सम्भवतः वे बलात नहीं बल्कि इच्छित करने में सक्षम होते है । जबकि ऐसा सम्भव नहीं है । स्फीतिक काल में वेतन भोगी कर्मचारी निश्चित रूप से बलात बचत ही कर पाते है । उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षकों के द्वारा की जाने वाली बचतों में बलात बचत का प्रमुख स्थान है ।

बचत के सहायक अंगों की विवेचना के पश्चात यह जानना नितान्त आवश्यक हो जाता है । कि वे बचत के प्रति कितने नियमित है । अर्थात औसत रूप में कितनी मासिक बचत कर पाते है । इसका अध्ययन निम्नवत प्रस्तुत है यथा–

प्राथमिक शिक्षकों का बचत के प्रति नियमितता – उपरोक्त किये गये विभिन्न संघटकों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाते है कि प्राथमिक शिक्षक के द्वारा सारणी एवं चित्र संख्या 5.1 से स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण शिक्षकों में केवल 96 प्रतिशत शिक्षक ही नियमित बचत करते है शेष चार प्रतिशत शिक्षक बचत नहीं कर पाते है ।

बचत के कारण :-

बाँदा के शिक्षकों के बचत करने के कारणों को सारणी संख्या 5.2 की सहायता से वर्गीकृत किया गया है एवं उनको प्रदर्शित करने की चेष्टा की गई है ।

प्राथमिक शिक्षकों के बचत के मुख्य स्त्रोत :-

प्राथमिक शिक्षकों के बचत करने के मुख्य स्त्रोत को सारणी संख्या 5.4 द्वारा स्पष्ट किया गया है ।

सारणी संख्या 5.3

प्राथमिक शिक्षकों की बचत के मुख्य स्त्रोत

बचत के साधन अथवा स्त्रोत	समग्र प्रतिदर्श संख्या में से प्राथमिक शिक्षकों की संख्या
व्यवसायिक राष्ट्रीयकृत बैंक द्वारा	25–(50.00)
डाकखानों द्वारा	50–(50.00)
जीवन बीमा द्वारा	50–(50.00)
नान बैंकिंग संस्थाओं द्वारा	00–(00.00)

टिप्पणी –

1. छोटे कोष्ठक में प्रतिदर्श संख्या सम्बन्धित प्रतिदर्श दर्शाती है ।
2. प्राथमिक शिक्षकों की बचत के मुख्य स्त्रोत निम्न लिखित है ।

   व्यवसायिक राष्ट्रीय बैंक , डाकखानों जीवनबीमा इत्यादि

सारणी से स्पष्ट हैं कि 50 में से 25 शिक्षक व्यवसायिक राष्ट्रीयकृत बैंक में तथा 50 में से 50 शिक्षक डाकखानों में और 50 में से 50 शिक्षक ज़ीवन बीमा में अपनी बचत करते है ।
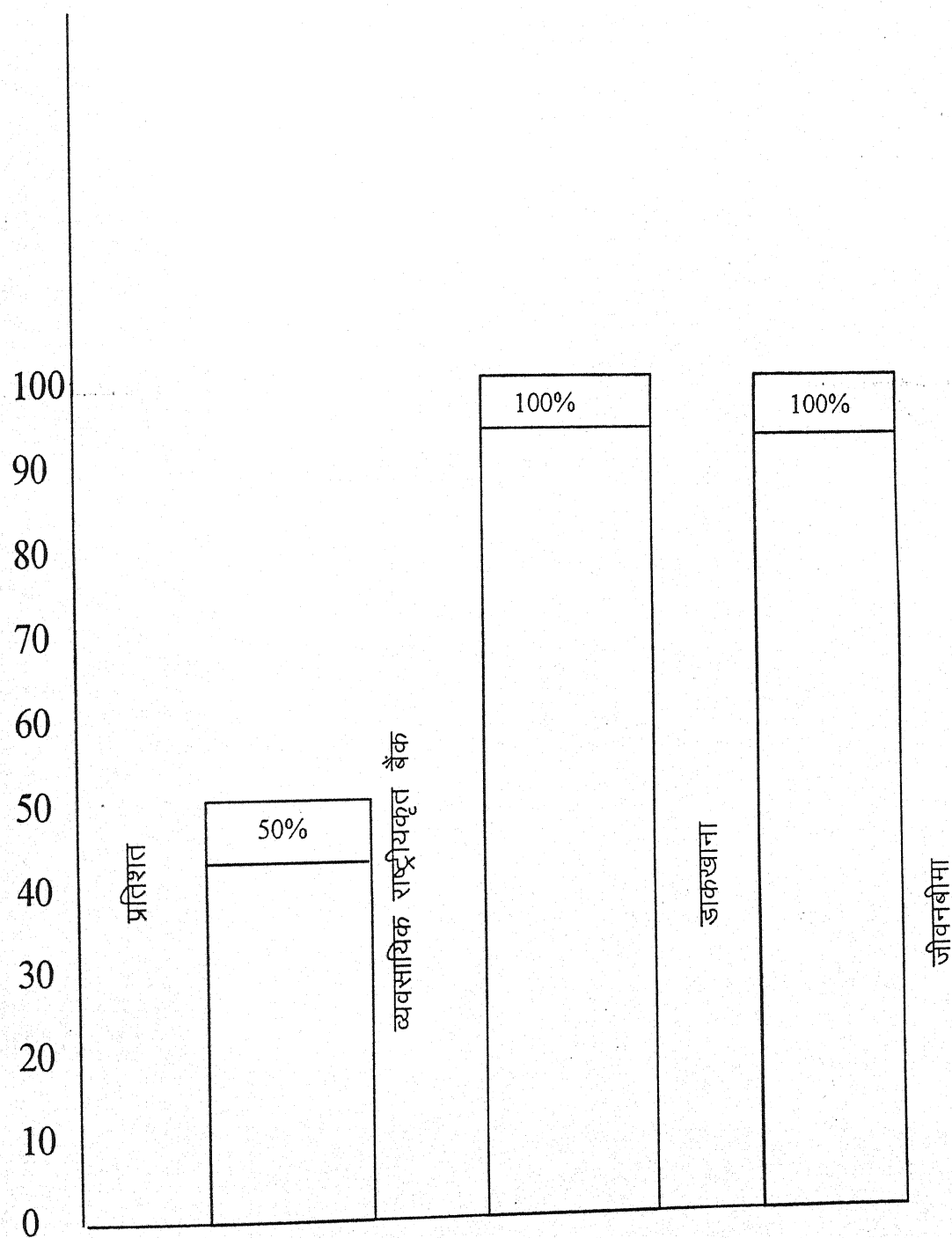
बचत के मुख्य स्त्रोत

चित्र संख्या 5.3

प्राथमिक शिक्षकों की इच्छित बचत :-

प्राथमिक शिक्षकों का वेतनभोगी कर्मचारी होने के कारण उनकी आय में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता है प्राथमिक शिक्षकों द्वारा अपनी सम्पूर्ण मासिक आय को व्यय करने के कारण उनकी इच्छित बचत प्रभावित होती है । इच्छित बचत करने वाले शिक्षकों की स्थिति को सारणी संख्या 5.5 एवं चित्र संख्या 5.5 में निम्नवत रूप से विश्लेषित किया जा सकता है ।

सारणी संख्या 5.4

प्राथमिक शिक्षकों का बचत के प्रति-प्रति उत्तर

इच्छित बचत के प्रति उत्तर	प्रतिदर्श संख्या
हाँ	15(30.00)
नहीं	35(70.00)
समग्र योग	50–(100.00)

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि 30 प्रतिशत प्राथमिक शिक्षक इच्छित बचत कर पाते है । बाकी 70 प्रतिशत शिक्षक बचत कर पाने में असमर्थ होते है ।

प्राथमिक शिक्षकों द्वारा की गई मासिक औसत बचत की क्षमता सारणी 5.5 एवं चित्र संख्या 5.5 में वर्गीकृत किया गया है ।

प्राथमिक शिक्षकों की वेतनाधारित इच्छित बचत के प्रति उत्तर
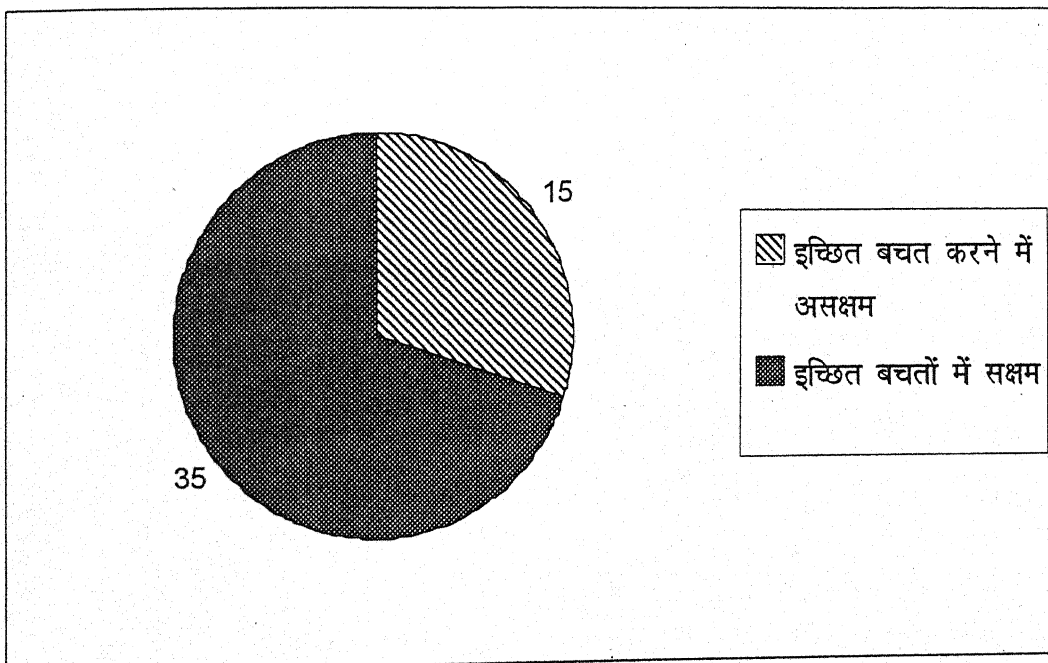
चित्र संख्या 5.4

प्राथमिक शिक्षकों की औसत मासिक बचत :-

सारणी संख्या 5.5

औसत मासिक बचत वर्ग	प्रतिदर्श संख्या
1	2
600—700 रू0	0—(00.00)
750—900 रू0	1—(2.00)
900—1050 रू0	2—(4.00)
1050—1200 रू0	5—(10.00)
1200—1350 रू0	1—(2.00)
1350—1500 रू0	1—(2.00)
1500—1750 रू0	1—(2.00)
1750—1900 रू0	20—(40.00)
1900—2050 रू0	19—(38.00)
समग्र योग	50—(100.00)

निम्नांकित सारणी में से स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि 2 प्रतिशत शिक्षक की औसत बचत 750—900 रू0 तक है । 4 प्रतिशत 900—1050 रू0 तक 10 प्रतिशत 1050—1200 रू0 तक है । 2 प्रतिशत 1200—1350 रू0 तक है । 2 प्रतिशत 1350—1500 रू0 तक हैं । 2 प्रतिशत 1500—1750 रू0 तक है । 4 प्रतिशत 1750—1900 रू0 अन्त में 38 प्रतिशत 1900—2050 तक बचत करने में समर्थ हो पाते है ।

सम्पूर्ण प्रतिदर्श संख्या में सर्वाधिक औसत मासिक बचत 38 प्रतिशत शिक्षक 1900–2050 रू0 तक बचत करते है । और 2 प्रतिशत शिक्षक सबसे कम अर्थात 750–900 रू0 तक बचत करने में अपने आप को समर्थ कर पाते है ।

प्राथमिक शिक्षकों की वेतनाधारित इच्छित औसत मासिक बचत
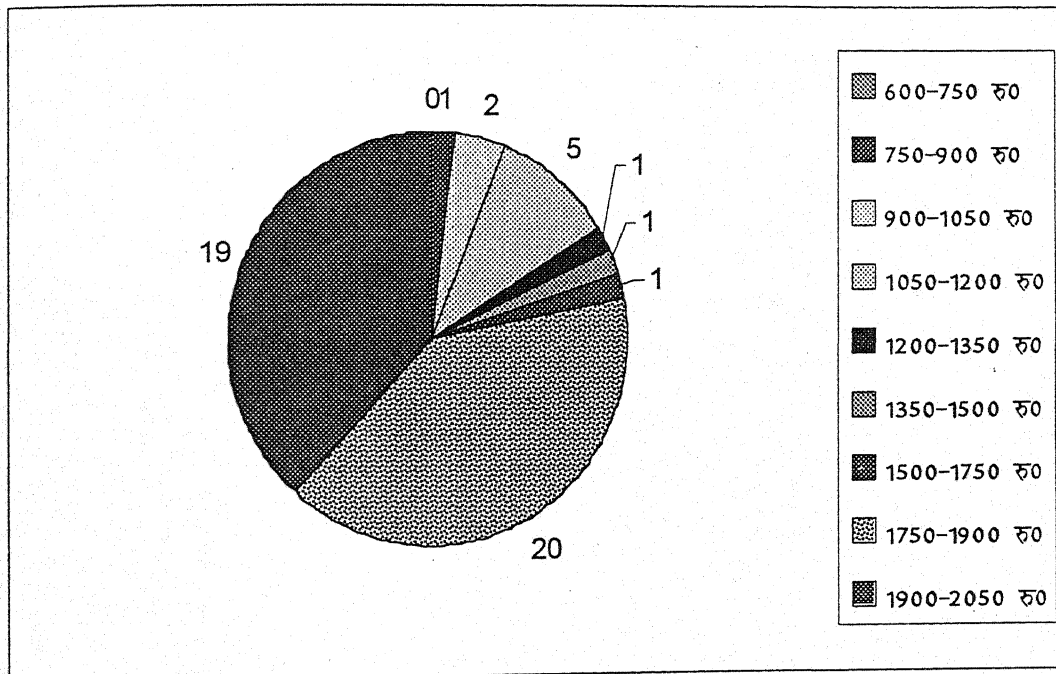
चित्र संख्या 5.5

षष्ठम अध्याय

" व्यय एवं बचत में अन्तर्-सम्बन्ध"

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. व्यय एवं बचत में अन्तर्सम्बन्ध
2. व्यय एवं बचत में सह सम्बन्ध

जनपद के प्राथमिक शिक्षकों के व्यय एवं बचत में व्यवहारिक अन्र्त-सम्बन्ध :-

यह स्मरणीय है कि सैद्धान्तिक स्तर पर व्यय एवं बचत में घनिष्ठ सम्बन्ध है । इसी सैद्धान्तिक स्तर पर यह प्रतिपादित किया गया है । कि व्यय एवं बचत विपरीत ध्रुव है । अर्थात जब व्यय में वृद्धि होती है । तब आय में कमी होती है । एवं जब बचत में बढ़ोत्तरी होती है तब व्यय बचत में कटौती की जाती है लेकिन व्यवहारिक परिस्थितियों में व्यय एवं बचत के साथ –साथ समकृमिक रूप से आय में भी परिवर्तन हो ।

प्रस्तुत शोध में बाँदा के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की वेतनाधारित व्यय एवं बचत के सन्दर्भ विशेष में यह स्थापना रखी जा सकती है । कि इन शिक्षकों की आय के वेतनाधारित समग्र आय के ढाँचे में स्थैतिक परिवर्तन हो वस्तुतः इनके व्यय के साथ–साथ आय में उर्ध्वमुखी परिवर्तन नहीं होता है । अतः बचत में भी स्थैतिक परिवर्तन ही लक्षित होता है । ऐसी परिस्थितियों में यदि उपभोक्ता द्वारा व्यय की मात्रा बढ़ाई जाती है तो निश्चित रूप से उनकी बचत में कमी होगी विपरीत रूप में यदि उनकी बचत मात्रा में अतिरिक्त वृद्धि होती है । तो निश्चित रूप से व्यय में भी बढ़ोत्तरी होगी । इस स्थिति को निम्नांकित सूत्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है ।
कीन्स के मुद्रा मूल्य परिमाण सिद्धान्त के माध्यम से उपरोक्त विश्लेषण को स्पष्ट किया है । कीन्स का यह विश्लेषण :–

अर्थात

$$\Uparrow I = S \Downarrow$$

Or When investment increasing than saving decreasing.

$$\Uparrow S = I \Uparrow$$

Than Saving increase than investment also increased.

कीन्स ने मुद्रा मूल्य परिमाण सिद्धान्त को उपरोक्त विश्लेषण को स्पष्ट किया है कि कीन्स का यह विश्लेषण समयबद्ध है । अर्थात

$$YT = CT = ST$$

Or

$$YT = CT = IT$$

$$CT = YT - ST$$

$$ST = YT - CT$$

$$IT = YT - CT$$

$$CT + ST = CT + IT$$

$$ST = I$$

कीन्स के अनुसार अर्थव्यवस्था में उपभोग व्यय आय का वह भाग है जिसे विनियोग कर दिया है । उसे बचाया नहीं जा सकता है ।

अर्थात

$$Y = C + S$$

$$E = Y$$

$$E = C + S$$

$$ADP = C + I + G$$

$$ADP = ASP$$

कीन्स के अनुसार मुद्रा मूल्य का निर्धारण उपभोक्ता के आय स्तर पर निध ारित होता है । आय में कमी या वृद्धि निश्चित रूप से मुद्रा पर निर्भर करती है । और बचत आय पर निर्भर करती है । कीन्स के अनुसार अर्थव्यवस्था में बचत एवं विनियोग का सन्तुलन होना आवश्यक है ।

व्यय एवं बचत में सह सम्बन्ध :-

व्यय एव बचत में सह सम्बन्ध ज्ञात करने के लिये सबसे महत्वपूर्ण विधि कार्ल पियर्सन का सहारा किया जा सकता है । कार्ल पियर्सन की विधि सह सम्बन्ध ज्ञात करने की सर्वश्रेष्ठ रीति है । यह लिपि समान्तर माध्य एवं प्रमाप विचलन पर आधारित है । इसलिये गणितीय दृष्टि से इसमें पूर्णतया शुद्धता होती है । इस रीति का प्रतिपादन कार्ल पियर्सन ने प्राणिशास्त्र की समस्याओं का अध्ययन करने के लिये सन् 1890 में किया था ।

सूत्रानुसार :-

$$R = \frac{\Sigma\, dx\, dy}{N}$$

या

$$R = \frac{\Sigma\, dxdy}{NQxQy}$$

व्यय एवं बचत में धनात्मक एवं ऋणात्मक सम्बन्ध
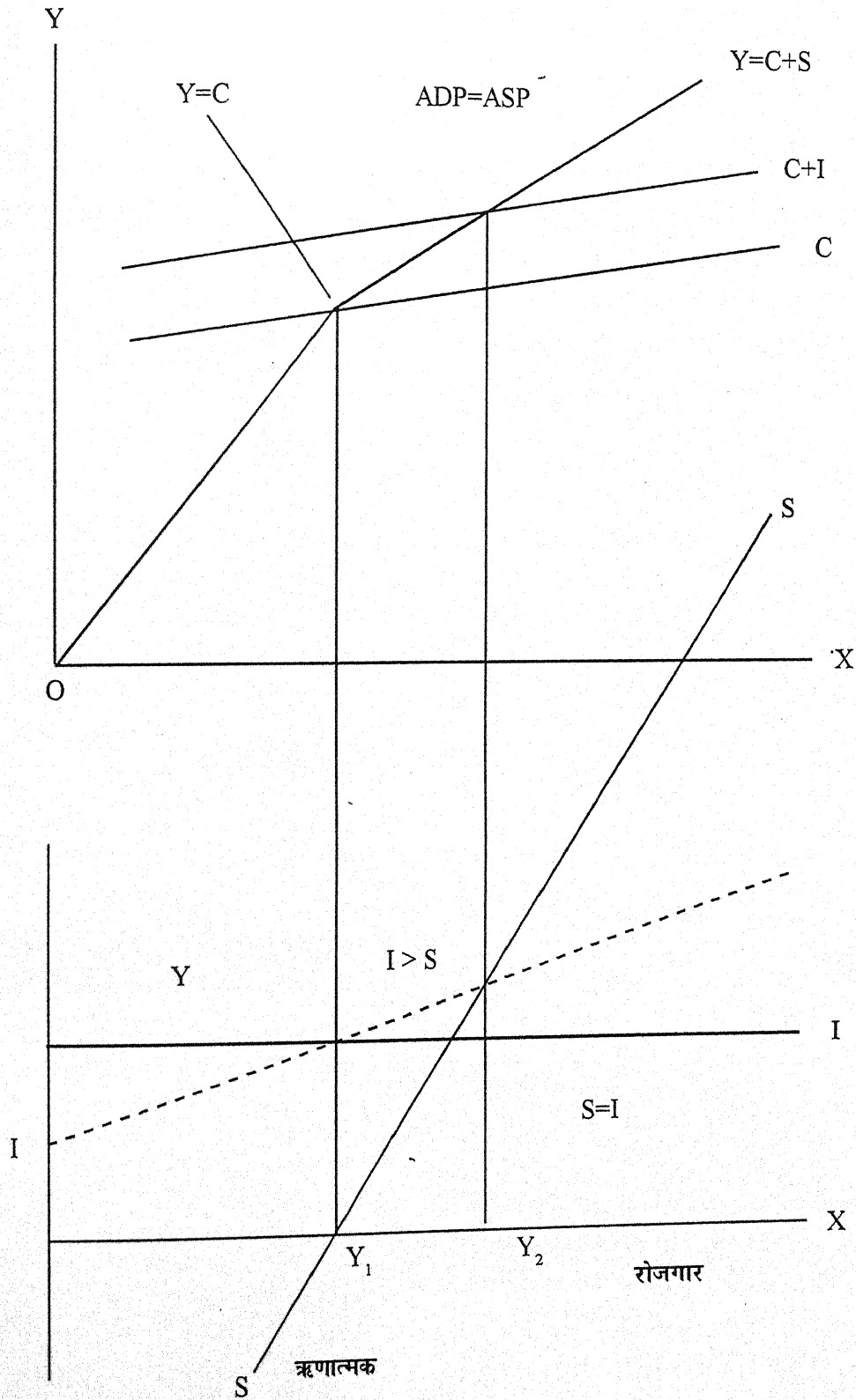
चित्र संख्या 6.1

सप्तम अध्याय

निष्कर्ष, समस्यायें एवं सुझाव

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. शिक्षकों की समस्यायें।
2. प्राथमिक शिक्षकों के आर्थिक उन्नयन हेतु सुझाव।

निष्कर्ष एवं सुझाव :-

अन्य व्यवसायों एवं क्षेत्रों की तरह बाँदा में कार्यरत प्राथमिक शिक्षक वेतनाधारित कर्मचारी है एवं उत्पादन का एक साधन भी है वह साधन जोक निश्चित रूप से राष्ट्रीय आर्थिक विकास एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के ढाँचे को अपनी सेवाओं के द्वारा प्रभावित करता है । अतः आवश्यक रूप से उनके वेतन से व्युत्पन्न एवं बचत का अध्ययन अति आवश्यक है ।

प्रस्तुत शोध अनुभव गम्य अध्ययन एवं निष्कर्षात्मक अध्ययन है । अध्ध्यनोपरान्त इसके प्रमुख निष्कर्षों को निम्नवत सूत्रबद्ध संजोया जा सकता है ।

1. बाँदा जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों द्वारा सामान्य उपयोग में प्रायः 13 वस्तुओं का उपभोग किया जाता है । दाल चावल गेंहू सब्जी मसाले दूध चाय कॉफी अण्डा मछली मक्खन इत्यादि वस्तुओं का सर्वाधिक उपभोग प्राथमिक शिक्षकों द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है । किन्तु पौष्टिक आहारों जैसे मेवे अण्डा माँस मछली आदि पर उपभोग व्यय करने वाले शिक्षकों का प्रतिशत कम है ।

2. सामान्य उपभोग की वस्तुओं पर बाँदा के प्राथमिक शिक्षक अपनी आय का एवं बहुत बड़ा भाग व्यय करते है । जिसमें 4 प्रतिशत शिक्षक 1500–2000 रू0 16 प्रतिशत 2000–2500 रू0 20 प्रतिशत 2500–4000 रू0 24 प्रतिशत 4000–5500 तथा 36 प्रतिशत 5500–6000 रू0 व्यय करते है ।

3. शिक्षा मानव जीवन के लिये एक अनिवार्य अंग है । परन्तु इन शिक्षकों की वेतनाधारित आय के दृष्टिकोण से पारिवारिक शिक्षा पर इनका व्यय सामान्य

स्तर का है ।

4. प्राथमिक शिक्षकों के परिपोषक व्यय के अन्तर्गत मकान का किराया आन्तरिक साज–सज्जा आदि व्यय सम्मिलित है परिपोषक व्यय के अन्तर्गत सबसे अधिक व्यय 4 प्रतिशत तथा निम्न व्यय 74 प्रतिशत है ।

5. प्राथमिक शिक्षकों की आय उनकी आवश्यकता से कम होने के कारण मनोरंजन के साधनों का अधिक उपभोग नहीं कर पाते है । लेकिन उनका मनोरंजन पर व्यय औसत स्तर का है।

6. प्रस्तुत शोध अध्ययन के पश्चात यह तथ्य प्रकाश में आया है कि आकस्मिक लाभ के लिये शिक्षक किसी पत्र पार्टी पर बहुत कम व्यय करते है । और कुछ शिक्षक तो बिल्कुल भी व्यय नहीं करते है ।

7. निजी वाहन के अन्तर्गत शिक्षकों का व्यय अति निम्न है क्योंकि ज्यादातर शिक्षक के पास अपना निजी वाहन तो होता है । लेकिन उनको चलाना नही आता है । इसलिये उनका निजी वाहन व्यय अत्यधिक निम्न स्तर का है ।

8. शिक्षकों द्वारा बचत मुख्य चार कारणवश की जाती है । आवश्यक समझकर, भविष्य के लिये, आकस्मिक कार्यवश एवं कम आय की वजह से शिक्षक बचत करते है ।

9. प्राथमिक शिक्षक के बचत करने की मुख्य स्त्रोत राष्ट्रीयकृत बैंक , डाकखाना , नानबैंकिंग संस्थायें आदि है उल्लेखनीय है कि शिक्षक एक से अधिक बचत संस्थाओं में अपनी बचत करते है ।

10. प्राथमिक शिक्षक इच्छित बचत नहीं कर पाते है ऐसे अध्ययन के उपरान्त तथ्य

प्रकाश में आये है । 70 प्रतिशत शिक्षक अपनी इच्छित बचत नहीं कर पाते है ।

11. प्राथमिक शिक्षकों की मासिक बचत औसत स्तर का है ।

उपरोक्त निष्कर्षों के उपरान्त बाँदा के शिक्षकों के आर्थिक उन्नयन हेतु सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे है ।

प्राथमिक शिक्षकों के अर्थिक उन्नयन हेतु सुझाव :-

शिक्षा के पक्ष पर जोर देते हुये मार्शल काविचार है । कि सबसे कम मूल्यवान पूँजी वह है जो मानव में विनियोजित हो यदि संसार के समूचे भण्डार को नष्ट कर दिया जाये परन्तु उसके निर्माण या प्रयोग का ज्ञान सुरक्षित रहे तो अपेक्षाकृत बहुत कम समय में ही उस पूँजी भण्डार का पुनः निर्माण किया जा सकता है । लेकिन अगर ज्ञान का भण्डार व पूँजी प्रयोग की कला नष्ट कर दी जाये तो उस पूँजी के पुर्ननिर्माण में कई सदियां गुजर जायेगी और मुमकिन है कि वह निर्माण सम्भव ही न हो सके ।

गुन्नार मरिडल के अनुसार अनेकों देशों में शिक्षा के स्तर का और आर्थिक विकास में सीधा सम्बन्ध होते है ।

परम्परागत मूल्यों में एक शिक्षक भौतिक सुख सुविधा से निर्लिप्त अत्यन्त सादा जीवन व्यतीत करने वाले उच्च नैतिक गुणों से सम्पन्न चरित्र की आवश्यकताओं को न्यूनतम स्तर पर सीमित रखने वाली प्रस्तर मानसिक शक्ति का स्त्रोत की स्वप्न दृष्टा और समाज का पथप्रदर्शक होता है । अब गुरूकुल है न गुरूकुल परम्परा इस व्यवस्था की अब कल्पना भी नही की जा सकती है । अब आधुनिक सुख सुविधा से युक्त

विद्यालयों का भवन वैज्ञानिक अविष्कार मुद्रा के जन्म के परिणाम विभिन्न शिक्षोपकरण सामान्य नागरिक की तरह शिक्षक अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति में लगी है । जैसा कि पहले उद्घृत किया जा चुका है कि शिक्षक अपनी सेवा के माध्यम से व्युत्पन्न आय से अर्थ व्यवस्था के ढाँचे को प्रभावित कर सकती है।

अतः उपयुक्त परिस्थितियों में भारतीय शिक्षक विशेषतः बाँदा के शिक्षक का नये सिरे से आर्थिक मूल्यांकन समाज में उनकी स्थिति तथा उनकी आकांक्षाओं का मूल्यांकन करना समुचित होगा ।

अध्यापन आज भी एक व्यवसाय है शिक्षक सामान्य वेतन भोगी कर्मचारी की भांति अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण एक घर है ।

बाँदा के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एक वेतनभोगी कर्मचारी है जा उत्पादन का एक महत्वपूर्ण साधन शिक्षक व्यवसाय में संलग्न शिक्षा के नीतिगत ढांचे से सम्बन्धित होते हुये भी आर्थिक दृष्टि भविष्य के लिये आशान्वित नहीं है किसी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति व समपन्नता वहाँ के नागरिकों के शैक्षिक योग्यता पर निर्भर करती है । इसलिये शिक्षा को प्रायः राष्ट्रीय विनियोग कहा गया है । शिक्षा से प्राप्त सामाजिक लाभ पीढ़ी दर पीढ़ी प्रभावित होते है । शिक्षा व्यवसाय अन्य व्यवसायों की तुलना में अत्यन्त विस्तृत क्षेत्र है । क्योंकि शिक्षा मानव जीवन को एक ओर परिष्कृत करता है । तो दूसरी ओर आर्थिक लाभ का मार्ग भी खोलता है । शिक्षकों की आय का प्रमुख स्त्रोत शिक्षा है । शिक्षा व्यवसाय एक विशिष्ट स्थान रखता है जब तक शिक्षकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं होगी तो स्वाभाविक है कि शिक्षा में विसंगतियाँ और भ्रष्टाचार उत्पन्न

होते रहेगें । नये मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाये तो मुद्रा एवं आय भ्रष्टाचार का मुख्य कारण है आय कम होने से शिक्षक अपने कर्तव्य एवं वास्तविकता से दूर होकर आर्थिक आय अर्जित करने के लिये अन्य साधनों की ओर उन्मुख हो जाती है । फलतः शिक्षा का आर्थिक स्तर निरन्तर निम्न से निम्न स्तरीय हो जाता है । वास्तव में अर्थिक विकास तब सम्भव नहीं जब तक अर्थव्यवस्था के सभी आर्थिक चर चतुर्मुखी विकास न करें ।

मायर के शब्दों में :–

It may be defined as nothing less then the upward movement of entire social system . I or it may be interpeted as the attainment of a number of I deals of mormisation Such as a rise in productivity . social and economic ebualisation morden knowledge improved instition and attitude and a nationally coardinated system of policy measures that can remove has to fundesrable condition in the social system that have perpecttuated a state of undevlopment "

शिक्षा को एक आदर्श रूप प्रदान करने के लिये यह अति आवश्यक है । कि शिक्षकों की आय कम से कम उतनी होनी चाहिये कि वे अपनी न्यूनतम अवश्यकताओं की सन्तुष्टि कर सके । मायर ने भी आर्थिक विकास को सर्वोत्कृष्ट प्रतिमान प्रतिव्यक्ति वास्तविक आय माना है ।

शिक्षा के उच्च स्तर की आशा तय की जा सकती है। जबकि शिक्षक स्वस्थ एवं सम्पन्न हो लेकिन बांदा के शिक्षक कम आय की वजह से मानसिक तनाव के अन्तर्गत अध्यापन कार्य के प्रति रूचि नहीं लेते है । और न ही अपने जीवन स्तर को उठा पाते

है । शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिक स्तर पर प्रतिनिधित्व एवं संचालन करते है । इसी दृष्टि से यदि शिक्षा का प्रारम्भिक चरण पंगु एवं दिशाहीन हो तो रूप से मानव पूंजी का निर्माण शिथिल एवं निर्जीव होना स्वाभाविक है ।

शिक्षकों की आय कम होने के फलस्वरूप उनके द्वारा न तो नियमित बचत हो पाती है और न ही इच्छित बचत जिससे उनका जीवन अस्थायी एवं असंन्तुलित रहता है । व्यवहार में देखा जा सकता है कि अतिरिक्त आय प्राप्त करने के लिये अतिरिक्त शुल्क लेकर ट्यूशन पढ़ाते है ऐसे शिक्षकों की उत्पादन क्षमता अत्यधिक होती है । ऐसे शिक्षकों की उत्पादन क्षमता अत्यधिक होती है । तथा वे अपना आर्थिक जीवन यापन अन्य की तुलना में अधिक श्रेष्ठता से व्यतीत करते है । लेकिन वास्तव इस प्रकार से आय प्राप्त करना साधन हीन स्त्रोतों के प्रति अन्याय का ही रूप है ।

कम आय की वजह से अधिकतर शिक्षकों के पास स्वयं का मकान स्वस्थ एवं मनोरंजन का पुर्णतया आभाव रहता है । अतः स्पष्ट है अधोभाव के कारण शिक्षक आय कम होने की वजह से अध्ययन के प्रति उदासीन हो जाती है । इस प्रकार से इन समस्याओं को देखते हुये शिक्षकों की आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं परिष्कृत करने के लिये निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे है :–

1. जो भी शिक्षक प्रशंसनीय कार्य करें उन्हें अग्रिम इन्क्रीमेण्ट वार्षिक वेतन आदि की सुविधायें दी जाये ।
2. शिक्षक की आय में वृद्धि मँहगाई के सापेक्ष किया जाना चाहिये ।
3. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को उनकी योग्यता नुसार अन्य व्यवसाय में लगे लोगों को सामान स्तर एवं वेतन दिये जाने तथा उनके मूल वेतन वृद्धि दी जानी

चाहिये जिससे अर्थिक रूप से समाज के अन्य वर्गों की तरह सम्पन्न एवं अपने जीवन स्तर को ऊँचा कर सके ।

4. शिक्षकों को बाजारी मूल्य से कम मूल्य पर वस्तुयें प्रदान करने के लिये सस्ती कण्ट्रोलों की दुकानों की सुविधा प्रदान की जानी चाहिये ।

5. शिक्षकों की कठिनाइयो का निवारण संस्था द्वारा करना चाहिये ।

6. शिक्षकों को अपने अतिरिक्त व्यय को भी कम करने का प्रयास करना चाहियें ।

7. पुरस्कृत अध्यापकों को यात्रा व्यय प्रथम श्रेणी जो राजपत्रित अधिकारी के स्तर के बराबर हो देना चाहिये ।

8. शिक्षकों की बलात बचतों को और अधिक बढ़ाने का प्रयास करना चाहिये ।

9. मँहगाई भत्ता एवं अन्य प्रकार के भत्तों में भी आवश्यक रूप से भी वृद्धि किया जाना चाहिये ।

10. शिक्षक को समाज का प्रकाश स्तम्भ हैं। आदर्श का पूर्ण रूपेण पालन करना चाहिये। जिससे सदैव समाज के श्रेष्ठ पथ प्रदर्शक के रूप में अपना स्थान अक्षुण्य रखें

11. निवास स्थान की समस्या को दूर करने के लिये सरकार एवं सम्बन्धित अधिकारियों को चाहिये कि शिक्षको को निवास के लिये विद्यालय में शिक्षक कालोनी प्रदान की जानी चाहिये ।

12. शिक्षा शास्त्रियों का कथ न है कि अध्यापक समाज की सबसे मुख्य समाज सुधारक है । अतः अध्यापकों का तन एवं मन दोनो से समाज की सेवा करनी चाहिये जिससे देश का हित हो ।

13. शिक्षकों के बच्चों की शिक्षा के लिये निःशुल्क शिक्षा प्रदान की सुविधा होनी चाहिये शिक्षकों एवं उनके पारिवारिक चिकित्सा के लिये सरकारी अस्पतालों में निःशुल्क अथवा कम शुल्क पर चिकित्सा व्यवस्था होनी चाहिये जिससे उनकी अतिरिक्त व्यय में कमी होगी ।

परिशिष्ट - अ

शिक्षा सम्बन्धी बाँदा जनपद के प्रमुख आंकड़े

1. बाँदा जिले की खण्डवार जनसंख्या
2. जनपद में विकास खण्डवार प्राथमिक विद्यालयों एवं शिक्षकों की सूची

परिशिष्ट - ब

1. अनुसूची का प्रारूप
2. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

बाँदा जिले की खण्डवार जनसंख्या - 1991

खण्डवार का नाम	जनसंख्या		
	योग	पुरूष	स्त्रियाँ
नगरीय क्षेत्र			
बाँदा तहसील	340646	186867	153782
बबेरू	320067	173452	146615
अतर्रा	227344	124260	103084
नरैनी	193068	105084	87984
योग	1081128	589663	491465
ग्रामीण क्षेत्र			
बबेरू टाउन एरिया	11827	6536	5261
बिसण्डा	9008	4888	4120
नरैनी	9003	5036	3664
मटौंध	7258	3660	3268
तिन्दवारी	7523	4065	3458
ओरन	5404	2994	2410
योग	50023	27149	22854
शहरी क्षेत्र			
बाँदा नगर पालिका	95658	52135	43523
अतर्रा नगर पालिका	31633	17445	14188
महायोग	1208419	659243	549176

सामान्य शिक्षा एवं प्रभाव शिक्षा जनपद में विकास खण्डवार प्राथमिक विद्यालयों की संख्या एवं शिक्षक

विकास खण्ड	प्राथमिक विद्यालयों की संख्या	शिक्षक
जसपुरा	97	236
तिन्दवारी	124	313
बडोखर खुर्द	131	396
बबेरू	134	353
कमासिन	124	295
बिसण्डा	118	253
महुआ	139	347
नरैनी	202	420
योग जनपद	1069	२613

-: साक्षात्कार अनुसूची :-

बाँदा जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के जीवन निर्वाह व्यय का एक आर्थिक अध्ययन

सामान्य

1. नाम –

वर्तमान पता –

सेवारत क्षेत्र का नाम

आयु

शैक्षिक योग्यता

जाति व धर्म

वर्तमान आय रू0 में

पारिवारिक सदस्यों की संख्या

विशिष्ट सूचनायें

1. व्यय पक्ष

अ– उपभोग व्यय

निम्नलिखित सामान्य उपभोग की वस्तुओं में जिन पर आप मासिक व्यय करते है । सही का निशान लगायें ।

गेंहू , अण्डा , फल, मक्खन, मेवे, चाय , काफी , मांस, मछली , दाल , चावल

, सब्जी , मसाले , ईंधन ।

मकान किराया आन्तरिक साज–सज्जा परिधान में मासिक कुल व्यय –

ब. विलासिता व्यय –

निम्नलिखित में से आप किन वस्तुओं का उपभोग करते है, सही का निशान लगायें –

अ.	फ्रिज	(हाँ / नहीं)
ब.	सोफा	(हाँ / नहीं)
स.	डबलबेड	(हाँ / नहीं)
द.	कुकिंग गैस	(हाँ / नहीं)
य.	टेलीवीजन	(हाँ / नहीं)
र.	एग्जास्ट	(हाँ / नहीं)
ल.	नौकर	(हाँ / नहीं)
व.	टेलीफोन	(हाँ / नहीं)
प.	कार	(हाँ / नहीं)
क्ष.	स्कूटर / मोटर साइकिल	(हाँ / नहीं)

व्यय की राशि :–

1. सामान्य उपभोग व्यय :– आप माह में सामान्य उपभोग की वस्तुओं पर कितना व्यय करते है । रूपयें की मात्रा पर सही का निशान लगायें :–

1500–2000, 2000–2500, 2500–4000, 4000–5500, 5500–6000

2. परिपोषक व्यय :– आप आन्तरिक साज सज्ज एवं किराया आदि पर कितना व्यय करते है सही कर निशान लगायें :–

500–750, 750–1000, 1000–1500, 1500–1750

3. शिक्षा परक व्यय :– आप माह में बच्चों की शिक्षा पर अनुमानित कितना व्यय करते है रूपयों की मात्रा पर सही का निशान लगायें :–

0–50, 50–100, 100–150, 150–250

निम्नलिखित मदों में से प्रत्येक पर कितना व्यय करते है ।

अ. बच्चों की पढ़ाई पर व्यय

ब. पुस्तक पत्र/पत्रिकाओं पर व्यय

4. मनोरंजन व्यय :– आप मनोरंजन के साधनों पर कितना मासिक व्यय करते है । सही का निशान लगायें :–

0–50, 50–100, 100–150, 150–200, 200–250

5. चिकित्सा पर व्यय :– आप प्रतिमाह चिकित्सा पर कितना व्यय करते है । सही का निशान लगायें :–

50–100, 100–200, 200–300, 500–1000

6.यात्रा पर व्यय :– आप अपनी यात्राओं पर माह में कितना व्यय करते है :–

200–400, 400–500, 500–600

आप निजी वाहन से नगरीय भ्रमण करते है यदि हाँ तो किस प्रकार का वाहन प्रयोग में लाते है और उस पर कितना व्यय करते है :–

वाहन के प्रकार मासिक व्यय

7. व्यसनगत व्यय :– क्या आप पान, सुपारी, लौंग, इलायची का प्रयोग करते है सही का निशान लगाये । यदि हाँ तो अनुमानित कितना व्यय करते है । सही का निशान लगायें :–

50–100 100–150 150–200 200–250

8. आकस्मिक लाभगत व्यय आप लाटरी/सट्टा पर कितना व्यय सही का निशान लगायें :–

100–200, 200–400, 400–600

2. बचत पक्ष :–

अ. क्या आप नियमित बचत करते है – (हाँ/नहीं)

(आदतवश) (आवश्यक समझकर)

(भविष्य के लिये) (आकस्मिक कार्यवश)

(कम आय की वजह से) (कोई कारण नहीं)

ब. किन स्त्रोतों से बचत करते है सही का निशान लगायें :–

अ. व्यवसायिक राष्ट्रीयकृत बैंक द्वारा

ब. डाकखानों के द्वारा

स. जीवन बीमा द्वारा

द. नान बैंकिंग संस्थाओं के द्वारा

स. आप औसतन रूप से कितनी मासिक बचत कर पाते है । सही का निशान लगायें ।

(600–700/–रू0) (750–900/–रू0)

(900–1050/–रू0) (1050–1200/–रू0)

(1200–1350/–रू0) (1350–1500/–रू0)

(1500–1750/–रू0) (1750–1900/–रू0)

(1900– से अधिक)

शोधार्थी

विधु कुमार त्रिपाठी

Vidhu Tripathi

विधु कुमार त्रिपाठी

V.S. Chauhan निदेशक – डा0 विजय सिंह चौहान

पं0 जे0एन0पी0जी0 कालेज बाँदा

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामबाबू एवं मीरा गुप्ता – सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण कानपुर 1977
2. डा0 शुक्ल एवं सहाय – सांख्यिकी के सिद्धान्त –1977
3. डा0 टी0टी0 सेठी – मौद्रिक अर्थशास्त्र
4. डा0 एम0एल0 सेठ – अर्थशास्त्र के सिद्धान्त
5. डा0 बद्रीविशाल त्रिपाठी – समष्टि अर्थशास्त्र
6. शर्मा आर0 ए0 – शिक्षा अनुसंधान, लायल बुक डिपो, मेरठ
7. शुक्ला आर0एस0 – टीचर एजूकेशन इन इण्डिया
8. एम0सी0 वैश्य – माइक्रो इकॉनामिक्स थ्योरी
9. सुखिया एम0पी0 – शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व
10. टोटियाल सच्चिदानन्द – शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र
11. सिन्हा एच0सी0 – शैक्षिक अनुसंधान, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस– 1979
12. श्रीवास्तव जे0पी0 – आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें
13. सर्राफ एस0एन0 – अध्यापक तत्परता, नई दिल्ली राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद
14. गुप्ता एस0पी0 – शिक्षा का ताना बाना
15. कपिल एच0के0 – शिक्षा अनुसंधान

पत्रिकायें एवं समाचार पत्र

1. योजना
2. इकानॉमिक्स एण्ड पालिटिकल वीकली
3. इण्डिया टुडे
4. प्रतियोगिता दर्पण
5. द इकॉनामिक्स टाइम्स